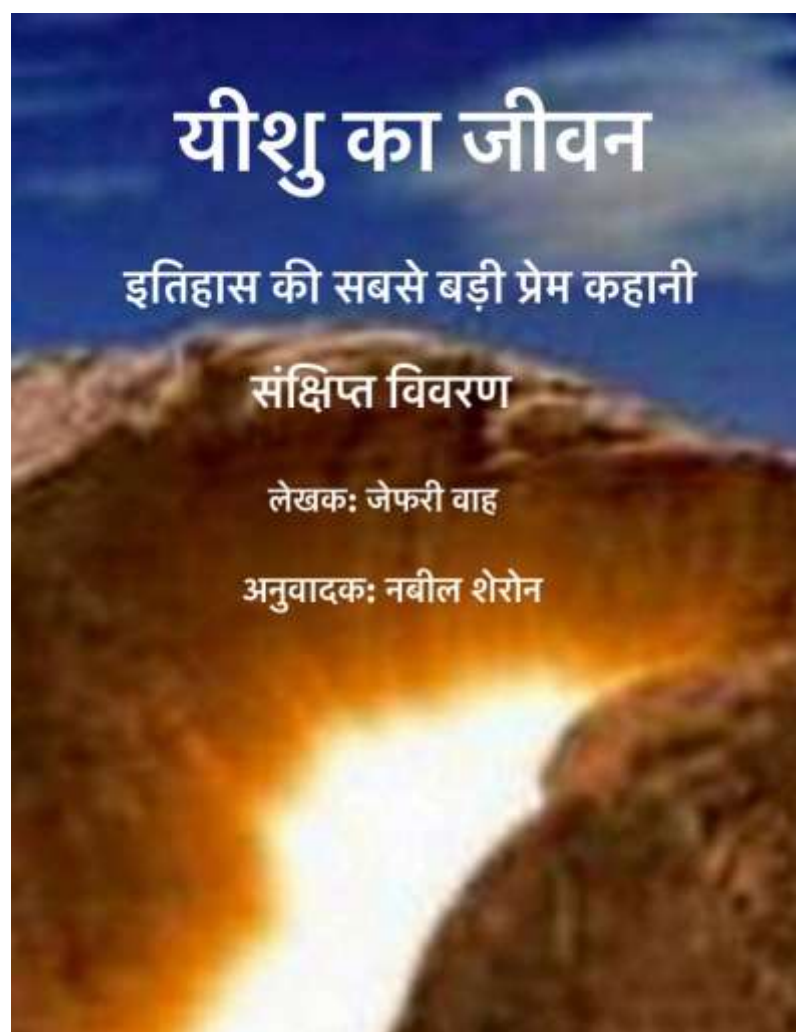


यीशु का जीवन

इतिहास की सबसे बड़ी प्रेम कहानी

संक्षिप्त विवरण



जेफ वाह

अनुवादक: नबील शेरोन

© जेफ वाह 2022

Contents

Preface	7
Introduction	9
1 Birth and Boyhood	13
2 Ministry Begins	27
3 First to Second Passover	38
4 Second to Third Passover	49
5 Passover to Pentecost	56
Conclusion	83
Discussion Questions	85
Appendix 1: Chronology	87
Appendix 2: Alternative Chronology	111
Appendix 3: The Gospels	116

मेरे माता पिता के लिए

To My Parents

इन कहानियों से सबसे पहले किसने मेरे दिल पर कब्जा किया

और हमारे बच्चों और हमारे बच्चों के बच्चों के लिए

और उनके बच्चे जो हमेशा प्यार करते हैं और प्यार करते हैं

जब तक अन्यथा संकेत न दिया गया हो, पवित्रशास्त्र के उद्धरण नए संशोधित मानक संस्करण बाइबिल से हैं,

कॉपीराइट © 1989 क्राइस्ट के चर्चों की राष्ट्रीय परिषद की ईसाई शिक्षा विभाग संयुक्त राज्य अमेरिका में अनुमति द्वारा उपयोग किया जाता है। सर्वाधिकार सुरक्षित।

कुछ पवित्रशास्त्र उद्धरण न्यू इंटरनेशनल वर्जन® एंग्लिसाइज्ड, एनआईवी® कॉपीराइट © 1979, 1984, 2011 से हैं। अनुमति द्वारा उपयोग किया जाता है। पूरे विश्व में सर्वाधिकार सुरक्षित। इनकी पहचान (एनआईवी) से की जाती है।

कुछ पवित्रशास्त्र उद्धरण न्यू किंग जेम्स वर्जन® से हैं। कॉपीराइट © 1982 थॉमस द्वारा नेल्सन, इंक. अनुमति द्वारा उपयोग किया जाता है। सर्वाधिकार सुरक्षित। इनकी पहचान (एन के जे वी) से की जाती है।

Paperback Print ISBN: 9798820112546

Other Editions

Hardcover Print ISBN: 9798820487781

Paperback Colour ISBN: 9798820482212

Hardcover Colour ISBN: 9798820621079

Renewal Journal Publication

www.renewaljournal.com

Australia



लोगो: दीपक और चर्मपत्र, बेसिन और तौलिया,

क्रॉस की रोशनी में

सूची

Contents

प्रस्तावना 7

परिचय 9

1. जन्म और लड़कपन 13

2. सेवा का प्रारंभ 27

3. पहले से दूसरे फसह तक 38

4. दूसरा से तीसरा फसह 49

5. फसह से पित्तकुस्त तक 56

परिणाम 83

चर्चागत प्रश्न 85

परिशिष्ट 1: कालानुक्रमिक चार्ट 87

परिशिष्ट 2: वैकल्पिक इतिहास 111

परिशिष्ट 3: सुसमाचार 116

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। यूहन्ना 3:16

हम ने प्रेम इसी से जाना, कि उस ने हमारे लिये अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए।¹ यूहन्ना 3:16

इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे। यूहन्ना 15:13

प्रस्तावना

Preface

इतना अच्छा आदमी जिसने इतना गहरा प्यार किया और इतने लोगों को मरने में मदद क्यों की? उसका विरोध करें क्यों उकसाया?

यदि परमेश्वर अपने पुत्र के रूप में हमारे बीच चला, तो लोग उसे क्यों मारना चाहते थे? लोगों ने इसका कड़ा विरोध क्यों किया?

इसने मुझे एक लड़के के रूप में परेशान किया। और अब भी करता है। दुनिया की अब तक की सबसे बड़ी प्रेम कहानी सूली पर चढ़ाने की भीषण मौत का कारण बनी।

बहुत से लोग दूसरों को अपनी जान दे देते हैं जैसे युद्ध में सैनिक करते हैं। वे दूसरों की कीमत पर अपने देश और घर की रक्षा करते हुए अपनी जान गंवा देते हैं। लेकिन यीशु की मृत्यु अलग थी। परमेश्वर के पुत्र ने हमारे लिए मरना चुना क्योंकि वह हमें बिना शर्त प्यार करता है। उसने हमारी जगह ले ली। उनकी मृत्यु हमें जीवन देती है। वह हमारे लिए एक सिद्ध, पापरहित और शाश्वत बलिदान बन गया। जब हम उस पर विश्वास करते हैं तो उसका लहू हमारे सभी पापों को धो देता है। हमें माफ कर दिया गया है।

लेकिन फिर कई अच्छे लोग, अच्छे धार्मिक लोग इसे नापसंद क्यों करते थे? यह मुझे आश्चर्यचकित करता है और चिंतित करता है। इसलिए मैंने इस रहस्य को इस पुस्तक में खोजा। मैं इसे इस तरह से सारांशित करना चाहता था कि सभी उम्र के लोग इसे पढ़ सकें।

मैंने हमेशा यीशु में विश्वास किया है। एक छोटे लड़के के रूप में भी मुझे उसके बारे में कहानियाँ सुनना और पढ़ना बहुत पसंद था। यह बहुत कीमती और बहुत अलग था। मुझे उस पर और उसकी कहानी पर एक छोटे लड़के के रूप में विश्वास था। मैं अब भी करता हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी करेंगे।

यीशु ने वही किया जो सही था। उसने बीमारों को चंगा किया, भूखे को खाना खिलाया, लोगों को बुराई और व्यसन से मुक्त किया, चमत्कार किए, और यहाँ तक कि मृतकों को भी जिलाया। बड़ी संख्या में लोग उसका अनुसरण करते थे और चाहते थे कि वह उनका राजा बने।

अब अरबों लोग उसका अनुसरण करते हैं, उसके प्रेम से मोहित। दरअसल, यह प्रेम की सबसे बड़ी कहानी है। आपसे ही वह संभव है। मैं आपको केवल इस तरह से प्रार्थना करने के लिए आमंत्रित करता हूँ: एक भगवान! आपने जो किया उसके लिए धन्यवाद। मेरे जीवन के हर पाप के लिए मुझे क्षमा करें

करना मैं ने तुम पर विश्वास किया, और अपना जीवन तुम्हारे हाथों में सौंप दिया

परिचय

Introduction

हमारे कैलेंडर या डायरी का वर्ष हमें लगभग उस समय की याद दिलाता है जब यीशु का जन्म हुआ था। हम उसका आगमन

वर्षों की गणना करें। इसलिए जब आप अपनी डायरी या कैलेंडर को देखते हैं, तो आपको फिर से यीशु की याद आ सकती है।

उन्होंने उसे नासरत का यीशु (यहोशू/यीशु) कहा, जो मूसा के प्रसिद्ध सेनापति के समान नाम था जिसने परमेश्वर के लोगों को उनकी प्रतिज्ञा की हुई भूमि तक पहुँचाया। यहोशू का अर्थ है परमेश्वर बचाता है, या परमेश्वर उद्धार है।

यह नाम हिब्रू और अरामी से יֵשׁוּעַ या के रूप में कई अनुवादों के माध्यम से हमारे पास आता है, फिर ग्रीक में Iesous के रूप में, फिर लैटिन में IESVS के रूप में, और बाद में IESUS के रूप में, जैसा कि किंग जेम्स बाइबिल के 1611 के पहले संस्करण में था। छिपा हुआ था। इस सदी के बाद, 'मैं' को 'जे' ने बदल दिया, इसलिए अंग्रेजी नाम जेसु (शाब्दिक) और जीसस (नामित) हो गया, लेकिन अंततः अंग्रेजी में सिर्फ जीसस बन गया। अनुवाद हैं।

बाइबिल के अंग्रेजी अनुवाद नासरत के जोशुआ / जीसस के लिए जीसस नाम और इसी नाम वाले अन्य लोगों के लिए यहोशू नाम का उपयोग करते हैं। इसलिए अंग्रेजी में नाम नासरत के यीशु के लिए अद्वितीय और पवित्र हो गया, यीशु परमेश्वर का पुत्र, दुनिया का उद्धारकर्ता। अपने जन्म से पहले, स्वर्गदूत गेब्रियल ने अपने नाम की घोषणा अपनी माँ, मैरी और जोसेफ को की, जिन्होंने मैरी से शादी की। गेब्रियल ने समझाया कि यीशु (यहोशू/यीशु) को यह नाम इसलिए दिया गया था क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा।

एक बेहतरीन प्रेम कहानी शुरू हुई थी। यीशु हमें बचाने और हमें अनन्त जीवन देने आए।

उसके अनुयायियों ने उसके जीवन और उसके प्रेम की कहानी को चार सुसमाचारों में दर्ज किया: मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना। शेष नया नियम इस अद्भुत जीवन और प्रेम के रहस्य और आश्चर्य की पड़ताल करता है।

विद्वानों के पास बाइबल के बारे में और इसे किसने, कब, कहाँ और क्यों लिखा है, इसके बारे में कई चौंकाने वाले सिद्धांत हैं। मैं पारंपरिक व्याख्याओं के साथ जाने के लिए संतुष्ट हूँ जिनका उपयोग अधिकांश इतिहास में किया गया है।

यीशु का अनोखा और अद्भुत जीवन, हमारे लिए उसकी क्रूर मृत्यु, और उसका शक्तिशाली पुनरुत्थान, हम सभी के लिए उसके और परमेश्वर के अनन्त प्रेम को प्रकट करता है। यहां तक कि जब आप इसे पढ़ते हैं उसे रोक सकते हैं और धन्यवाद दे सकते हैं।

यूहन्ना का सुसमाचार यीशु में प्रकट हुए परमेश्वर के अनन्त प्रेम पर जोर देता है। इसमें अधिकांश बाइबिल प्रसिद्ध संदर्भों में शामिल हैं:

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

क्योंकि परमेश्वर ने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत को दण्ड दे, परन्तु इसलिये कि उसके द्वारा जगत का उद्धार हो।

उस प्रेम ने, जो क्रूस पर शक्तिशाली रूप से प्रदर्शित किया गया है, अरबों लोगों के जीवन को बदल दिया है, विश्वासियों को परमेश्वर और अन्य लोगों के साथ एक अंतरंग और शाश्वत संबंध में बहाल कर दिया है।

तीन भौतिक रूपक मुझे लगातार जागरूक होने में मदद करते हैं, और हमारे साथ भगवान की निरंतर उपस्थिति के लिए आभारी होने के लिए तैयार हैं:

(1) प्रकाश आपको घेरता है। इसके माध्यम से आप इसे पढ़ सकते हैं। सूरज हमेशा चमकता है, भले ही वह हमारे द्वारा अस्पष्ट हो। प्रकाश हमारे चारों ओर चमकता है, भले ही हम इससे अनजान हों। भगवान प्रकाश है। और इसमें कोई अंधेरा नहीं है हम इसके प्रकाश में रह सकते हैं।

(2) रक्त आपके शरीर में हर समय पंप करता है, सफाई और उपचार। हम इससे अनजान हो सकते हैं जब तक कि अलार्म जैसी प्रतिक्रियाएँ हमारे धड़कते दिलों को सचेत न करें। यीशु का खून हमेशा है, सब। पापों से शुद्ध। हम उस पर भरोसा कर सकते हैं क्योंकि वह हमारे साथ है।

(3) हम जागरूक हुए बिना सांस ले सकते हैं, या हम जागरूकता के साथ गहरी सांस ले सकते हैं, जैसा आपने अभी किया होगा! सांस हमारे फेफड़ों और शरीर को साफ करती है। भगवान आत्मा और सांस या ताजी हवा है। जैसे, वह हमें शुद्ध कर सकता है।

ईश्वर के प्रेम का प्रकाश अब आप में जीवन की सांस ले।

हम परमेश्वर के स्वरूप में उसके साथ एक शाश्वत, प्रेमपूर्ण संबंध रखने के लिए बनाए गए हैं जो मृत्यु से परे है। हम परमेश्वर के बिना शर्त प्रेम को जान और अनुभव कर सकते हैं, चाहे हम उससे कितनी भी दूर क्यों न हों। सबसे अधिक खोए हुए लोग अक्सर उसकी क्षमा और प्रेम के लिए सबसे अधिक आभारी होते हैं। हम सभी कई तरह से गलती करते हैं और हम सभी को क्षमा की आवश्यकता है और हमें वास्तव में आभारी होना चाहिए।

हम जैसे हैं वैसे ही परमेश्वर हमें जानता और प्यार करता है। उससे प्रार्थना करना या उससे बात करना आसान हो जाता है क्योंकि वह पहले से ही हमारी असफलताओं और संघर्षों को जानता है और जैसे हैं वैसे ही हमारा स्वागत करता है।

यह ऐसा है जैसे हम हैं। हम जितने अधिक विश्वासपूर्वक उसके पास आते हैं, उतना ही अधिक वह हमें बदल सकता है

अगर हमें विश्वास करने में परेशानी होती है, तो हम कम से कम कह सकते हैं, "भगवान, अगर तুম यहाँ हो, तो मुझे मदद करना।"

जब हम प्रार्थना करते हैं या भगवान से बात करना चाहते हैं, तो कुछ विचार रास्ते में आ सकते हैं। बस उसे वे विचार दें। वह पहले से ही इसके बारे में सब कुछ जानता है और हमसे वैसे ही प्यार करता है जैसे हम हैं।

यदि हम परमेश्वर की उपेक्षा करके और अपने मार्ग पर चलकर उसके प्रेम और दया को अस्वीकार करते हैं, तो हम उसके प्रकाश और प्रेम से दूर अनन्त अंधकार की निंदा करते हैं।

यदि हम उस पर विश्वास करते हैं, उस पर भरोसा करते हैं और उसके प्रेम और क्षमा को स्वीकार करते हैं, तो वह हमें जीवन, अपना अनन्त जीवन देता है। यह हमें नया बनाता है। हम बदलते हैं।

दुनिया भर में सभी धर्मों के लोगों की बड़ी संख्या है और किसी ने चार्लोट एलियट के लोकप्रिय भजन 'एज़ आई एम' में प्रार्थना की होगी, जिसमें ये अनुकूलित छंद हैं:

मैं जैसा हूँ, बिना किसी दलील के लेकिन तेरा खून मेरे लिए बहाया गया।

और यह कि तू मुझे अपने पास आने की आज्ञा देता है,

हे परमेश्वर के पुत्र, मैं आता हूँ, मैं आता हूँ।

यद्यपि मैं अनेक शंकाओं, झगड़ों और आंतरिक और बाह्य भयों के साथ अनेक संघर्षों में फंसा हुआ हूँ,

हे परमेश्वर के पुत्र, मैं आता हूँ, मैं आता हूँ।

ईश्वर हमारा स्वागत करता है और हम सब यही प्रार्थना कर सकते हैं। यीशु के लिए एक शीर्षक, जैसा कि इस गीत में है, परमेश्वर का बलिदान मेमना है जो हमारे पापों को हर लेता है।

यीशु का जीवन एक विशाल विषय है जिसके बारे में लाखों पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। मुझे आशा है कि मेरा छोटा सा योगदान आपको एक उपयोगी अवलोकन प्रदान करेगा। मैं नए संशोधित मानक संस्करण से उद्धृत करता हूँ जब तक कि अन्यथा संकेत न दिया गया हो, और इसमें कई फुटनोट शामिल हैं। जिसे आप और जानने के लिए एक्सप्लोर कर सकते हैं।

बेशक, सबसे अच्छी बात यह है कि प्रेरित सुसमाचार अब 700 से अधिक विभिन्न भाषाओं और बाइबल के कुछ हिस्सों में, विशेष रूप से सुसमाचारों में, 3,500 से अधिक भाषाओं में बाइबल के अनुवाद हैं। इन सुसमाचारों को पढ़ें और उनका पालन करें इसे करें

1. जन्म और लड़कपन

Birth And Boyhood

यह शुरुआत में शुरू हुआ, यह महान प्रेम कहानी, "शुरुआत में भगवान ने आकाश और पृथ्वी को बनाया।"

उसने ऐसा क्यों किया? हमारे लिए।

उसने तुम्हारे लिए किया। वह आपसे इतना प्यार करता था कि उसने आपको उसे जानने और उसका आनंद लेने के लिए बनाया था जैसा कि आप इसे पढ़ते हैं, और हमेशा के लिए। वह आपको अंतरंग, अनंत प्रेम प्रदान करता है। उसने आपको आपके माता-पिता के परमानंद के अद्भुत मिलन के माध्यम से बनाया है।

उसने पृथ्वी को हमारे रहने और देखभाल करने और शासन करने के लिए बनाया है। उसने हमारे लिए स्वर्ग (बहुवचन) बनाया, भौतिक आकाश और विशाल, अनन्त महिमा के क्षेत्र भी विशेष रूप से हमारे लिए तैयार किए।

उसने हमें अपने अद्भुत प्रेम को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए स्वतंत्र बनाया। दुख की बात है कि हम अपने रास्ते चले गए। भेड़ों की तरह हम सब भटक गए। हम सब अपनी-अपनी राह पर चल पड़े। इस प्रकार परमेश्वर ने अपने दास, उसके पुत्र, हमारे सारे अधर्म पर डाल दिया। परमेश्वर अपने पुत्र के द्वारा हम सब के लिए उनके महान प्रेम में हमें बचाता है। इसे पढ़कर आप अब रुक सकते हैं और उसे धन्यवाद दे सकते हैं।

शुरुआत में आदम और हव्वा ने परमेश्वर और एक दूसरे के साथ घनिष्ठ, निर्लज्ज संबंध का आनंद लिया। फिर, हमारी तरह, उन्होंने झूठ पर विश्वास किया और स्वर्ग को खोते हुए अपने रास्ते चले गए। परन्तु परमेश्वर ने फिर भी उन्हें और उनके वंशजों को आशीष दी और उन्हें सम्भाला, जिन्होंने उससे प्रेम करना और उसके लिए जीना चुना। दुख की बात है कि कुछ ही ने किया।

नूह और उसके परिवार ने परमेश्वर से प्रेम किया और उसकी आज्ञा का पालन किया और उस ने उन्हें बड़ी बाढ़ से बचाया। भगवान की आज्ञा मानने और सूखी जमीन पर एक बड़ी नाव बनाने के लिए लोगों ने उनका उपहास किया - सूखी गोदी में भी नहीं। इन्द्रधनुष बन गया भगवान की निशानी नूह और उसके वंशजों के लिए वाचा हम सहित।

अब्राहम, अरब प्रायद्वीप (अब इराक) के उत्तर-पश्चिम में पश्चिमी एशिया में विस्तृत उपजाऊ टाइग्रिस और यूफ्रेट्स घाटियों से एक धनी शेख, ईश्वर से प्यार करता था और उसकी आज्ञा का पालन करता था। नाम बदला अब्राहम (परमेश्वर का मित्र) उसने वादा किया था भूमि, अब इस्राएल कहा जाता है, जो उसके पोते को दिए गए नाम से दिया गया था, जो एक स्वर्गदूत के साथ या यहोवा के साथ कुशती करता था।? खतना उनके और उनके वंश के लिए वाचा का चिह्न बन गया जिसके द्वारा परमेश्वर हम सभी के लिए अपना उद्धार प्रदान करेगा।

इब्राहीम और उसके वंशज लेसूस और उसके अनुयायियों की तरह उस सख्त प्रतिज्ञा की भूमि पर चले। तो हमारे परिवार ने 1981-82.8 में एक महीने के लिए किया था

राजा डेविड ने लगभग 1000 ईसा पूर्व से 40 वर्षों तक वहां शासन किया, जिसे भगवान के अपने दिल के अनुसार एक व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया था जो वह करेगा जो भगवान चाहता था। यह डेविड जैसे दोषपूर्ण लोगों के लिए भगवान के प्यार और अनुग्रह की एक अद्भुत तस्वीर है। उसके वंशजों ने उसकी राजधानी यरूशलेम से लेकर बाबुल तक अपने राज्य के पतन तक शासन किया। मरियम के माध्यम से डेविड से मानव यीशु का वंशज था, जैसा कि मैरी के पति जोसेफ थे, जो डेविड के शाही वंश के वंशज भी थे।

भगवान ने अपने लोगों को इतिहास के माध्यम से आशीर्वाद दिया जब वे उसके प्रति वफादार रहे लेकिन दुख की बात है कि हमारी तरह, वे अक्सर अपने तरीके से चले गए, भगवान के रास्ते पर नहीं। इज़राइल का उत्तरी राज्य 722 ईसा पूर्व तक अशूर के लिए बंदी बना लिया गया था, जैसा कि यहूदा के दक्षिणी राज्य ने 597 ईसा पूर्व से बाबुल के लिए किया था। तब फारस के कुसू ने 538 ईसा पूर्व से बंधुओं को बंधुआई में लौटने की अनुमति दी। बेबीलोन की सेनाओं ने बंधुओं को बंधुओं की लहरों में ले लिया, और निर्वासित विभिन्न समूहों में लौट आए, फिर अरामी भाषा बोलते हुए, उनके हिब्रू शास्त्रों के समान एक सेमिटिक भाषा। यरूशलेम में उनका मंदिर 586 ईसा पूर्व से 516 ईसा पूर्व तक 70 वर्षों तक खंडहर में पड़ा रहा। लौटने वाले बंधुओं को यहूदियों के रूप में जाना जाने लगा, यह शब्द यहूदा के पूर्व राज्य से लिया गया है।

सिकंदर महान की विजय ने लगभग 333 ईसा पूर्व से इज़राइल में ग्रीक संस्कृति और भाषा की स्थापना की, अंततः 165 ईसा पूर्व से मैकाबीन विद्रोह को जन्म दिया, जिसमें यहूदियों ने 134 ईसा पूर्व से स्वतंत्रता प्राप्त की।

उनकी स्वतंत्रता 63 ईसा पूर्व तक एक सदी से भी कम समय तक चली जब युद्धरत भाइयों ने रोम से अपील की, और रोमन सेनाओं ने आक्रमण किया और 12,000 को मार डाला यरूशलेम की घेराबंदी में मंदिर के याजकों सहित लोग। रोम ने तब यहूदिया प्रांत पर शासन किया, जिसका नाम यहूदा के पिछले राज्य से भी रखा गया था।

वे गहरी यादें यीशु के दिनों के इज़राइल में मजबूत हो गईं जब यहूदी चाहते थे कि उनका मसीहा उन्हें छुड़ाए। कट्टरपंथी अक्सर रोमन कब्जे वाली सेनाओं पर हमला करते थे। रोम ने तेजी से और बेरहमी से जवाबी कार्रवाई की। उनकी सेनाओं ने हजारों लोगों को मार डाला, सैकड़ों को क्रूस पर चढ़ा दिया, जैसा कि यहूदा गैलीलियन के नेतृत्व में विद्रोह में 6 ईस्वी में हुआ था जब यीशु एक लड़का था। यीशु के बुजुर्ग रिश्तेदार पुराने पुजारी जकर्याह और उनकी पत्नी एलिजाबेथ यरूशलेम के पास रहते थे, और जकर्याह का शाब्दिक अर्थ था अपने रोस्टर के दौरान मंदिर में धूप चढ़ाते समय स्तब्ध रह गए जब देवदूत गेब्रियल ने उन्हें बताया कि उनके पास जॉन नाम का एक बेटा होगा। नौ महीने बाद जकर्याह फिर बोला अपने बेटे के जन्म पर जब उसने घोषणा की कि लड़के का नाम जॉन है।

उस मंदिर मुठभेड़ के छह महीने बाद, गेब्रियल फिर से दिखाई दिया, इस बार नासरत की उत्तरी पहाड़ियों में मैरी के सामने। उन्होंने घोषणा की कि मैरी पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ धारण और उसके बेटे को येशुआ (यहोशू/यीशु) कहा जाएगा, जिसका अर्थ है 'भगवान बचाता है' या 'भगवान मोक्ष है'।

मैरी की गर्भावस्था ने उसके होने वाले पति जोसेफ के लिए एक समस्या खड़ी कर दी। एक अच्छा आदमी होने के नाते उसने चुपचाप अलग होने या तलाक लेने का फैसला किया और अब कोई उपद्रव नहीं किया, मैरी गर्भवती थी। एक स्वर्गदूत ने एक सपने में हस्तक्षेप किया और चमत्कारी गर्भावस्था के बारे में बताया और मैरी के बेटे का नाम येशुआ (यहोशू/यीशु) रखा जाएगा क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा। मत्ती ने लिखा कि इसने यशायाह की भविष्यवाणी को पूरा किया:

कि, देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इममानुएल रखा जाएगा जिस का अर्थ यह है “परमेश्वर हमारे साथ”। मत्ती 1:23, यशायाह 9:6

महान प्रेम कहानी उस पवित्र, चमत्कारी गर्भाधान के माध्यम से इतिहास में प्रवेश कर गई। उसकी खबर से उत्साहित, मैरी ने यरूशलेम के पास अपने रिश्तेदारों एलिजाबेथ और जकर्याह से मिलने के लिए लगभग 100 किमी (64 मील) दक्षिण की यात्रा की। ओल्ड एलिजाबेथ ने घोषणा की कि जब उसने मैरी की खबर

सुनी तो उसका बच्चा उसके गर्भ में उछला। मरियम एलिज़ाबेथ और उसके गूंगे पति के साथ तीन दिनों तक रही यूहन्ना के जन्म तक के महीने (जब जकर्याह फिर बोला)। उन्होंने जिब्राईल के इस वचन पर विश्वास किया कि यूहन्ना एलियाह की आत्मा में प्रभु के आने की घोषणा करेगा। अलौकिक रूप से धन्य उन दो महिलाओं ने अपने गर्भ में परमेश्वर के प्रेमपूर्ण उद्देश्यों के आश्चर्य को देखा।

यह समय की पूर्णता में आया था। पिछला इतिहास यीशु के मसीहा, मसीह, परमेश्वर के पुत्र के रूप में आने की ओर इशारा करता है। अब हम उस जन्म से इतिहास की तारीख निकालते हैं।

उसका जन्म

His Birth

इतिहासकार ल्यूक हमें जन्म का विवरण देता है। रोमन साम्राज्य ने एक जनगणना की घोषणा की और सभी पुरुषों (जिन्हें उन्होंने तब गिना था) को अपने मूल स्थान पर जाना था। राजा दाऊद के वंशज यूसुफ को दाऊद के गृह नगर बेतलेहेम जाना था। इसलिए गर्भवती मरियम ने एक बार फिर दक्षिण की यात्रा की, इस बार यूसुफ के साथ बेतलेहेम को, जो यरूशलेम से 12 किमी (8 मील) दक्षिण में पहाड़ियों में बसा था। आज बेथलहम आधुनिक विशाल शहर यरूशलेम के दक्षिणी उपनगर की तरह है।

ल्यूक की कहानी उस जनगणना के समय और लेसस के जन्म की पहचान करती है। लगभग 500 साल बाद 525 ईस्वी में डायोनिसियस एक्जिगुस नाम के एक भिक्षु ने ईसा पूर्व के वर्षों के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले ईसा पूर्व के साथ एडी प्रणाली (एनो डोमिनि, लैटिन के लिए 'प्रभु के वर्ष') की शुरुआत की। आधुनिक गणना में ईसा का जन्म लगभग 4 या 6 ईसा पूर्व में हुआ है। हाल के वर्षों में कई प्रकाशन वैकल्पिक आम युग, सीई, का उपयोग करते हैं। और 'आम युग से पहले, ईसा पूर्व। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि सामान्य युग यीशु के जन्म के समय से है।

भीड़भाड़ वाले बेथलहम में रिश्तेदारों के पास अपने अतिथि कक्ष में कोई जगह नहीं थी इसलिए जोसेफ और मैरी ने एक स्थिर का इस्तेमाल किया और अपने छोटे बच्चे को जानवरों के खाने के डिब्बे, एक चरनी में आराम दिया। आधुनिक अनुवाद सही ढंग से ध्यान देते हैं कि अतिथि कक्ष में कोई जगह नहीं थी इसलिए मैरी ने अपने पहले बेटे को अस्तबल में जन्म दिया। "उसने उसे कपड़े में लपेट दिया और उसे एक चरनी में रख दिया, क्योंकि उनके लिए कोई अतिथि कमरा उपलब्ध नहीं था।" 1611 के किंग जेम्स संस्करण अनुवाद से 'सराय' में कोई कमरा नहीं होने की परंपरा है।

बेतलेहेम के आसपास की पहाड़ियों में चरवाहों ने काफी रात बिताई थी! उन्होंने एक स्वर्गदूत को अनोखे जन्म की घोषणा करते देखा और सुना, उन्हें चरनी में बच्चे को निर्देशित किया। स्वर्गदूत ने दाऊद के नगर में जन्मे एक उद्धारकर्ता, मसीह और प्रभु की घोषणा की। उनके आगे आश्चर्य करने के लिए अचानक स्वर्गदूतों का एक समूह भी प्रकट हुआ, जो सभी परमेश्वर की महिमा कर रहे थे।

उन चरवाहों ने बच्चे को अस्तबल में पाया और सभी को आश्चर्यजनक बातें बताने लगे जो उन्होंने देखी और सुनी थीं। यह दिलचस्प और महत्वपूर्ण है कि मंदिर में वार्षिक बलिदान के लिए तैयार किए जा रहे बेदाग

मेमने बेथलहम के झुंडों के बीच पैदा हुए और चरवाहे किए गए। यीशु के लिए एक उपाधि परमेश्वर का मेम्रा है जो हमारे लिए बलिदान किया गया था।

उस ज़माने में लोग अक्सर चरवाहों को नज़रअंदाज़ कर देते थे, उन्हें हीन समझते थे, जैसा कि उन्हीं पहाड़ियों में उनसे पहले युवा डेविड था। वहाँ शमूएल ने राजा होने के लिए दाऊद का अभिषेक किया और वहाँ दाऊद का बड़ा पुत्र राजा उत्पन्न हुआ।

यूसुफ और मरियम यूसुफ के पुरखा नगर बेतलेहेम में रहे। बढ़ई को आसानी से काम मिल सकता था क्योंकि हमेशा घर और फर्नीचर बनाने या मरम्मत करने की आवश्यकता होती थी।

हैरानी की बात है कि लगभग एक साल या ठीक एक साल बाद, पूर्व के ज्योतिषी, बुद्धिमान पुरुष बेथलहम में उनके घर आए। वे एक असामान्य तारे पर नज़र रख रहे थे और उनका मानना था कि यह एक महान राजा के जन्म का प्रतीक है। स्वाभाविक रूप से वे राजधानी यरूशलेम गए, नए राजा की तलाश में, राजा हेरोदेस के विस्मय और अलार्म के लिए। उन्होंने जिन विद्वानों से परामर्श किया, उन्होंने कहा कि उनका महान राजा बेतलेहेम से होगा। विद्वान मीका की मसीहा की भविष्यवाणियों से परिचित थे, जो यशायाह के समकालीन थे (दोनों वादा किए गए मसीहा के बारे में भविष्यवाणी कर रहे थे), 722 ईसा पूर्व में इज़राइल के उत्तरी राज्य के अशशूर के पतन से पहले बोल और लिख रहे थे, लेकिन बचे हुए लोगों का वादा करना वापस आ जाएगा जो देखेगा परमेश्वर के अनन्त राज्य की स्थापना हुई। वे मीका 4:1-5 और 5:1-5 जानते थे (बिना किसी अध्याय और पद के, जैसा कि 1551 से यूनानी और अन्य अनुवादों में जोड़ा गया था)। इसमें यह भविष्यवाणी शामिल थी:

हे बेतलेहेम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारों में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिये एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करने वाला होगा; और उसका निकलना प्राचीन काल से, वरन अनादि काल से होता आया है। इस कारण वह उन को उस समय तक त्यागे रहेगा, जब तक जच्चा उत्पन्न न करे; तब इस्राएलियों के पास उसके बचे हुए भाई लौट कर उन से मिल जाएंगे। और वह खड़ा हो कर यहोवा की दी हुई शक्ति से, और अपने परमेश्वर यहोवा के नाम के प्रताप से, उनकी चरवाही करेगा। और वे सुरक्षित रहेंगे, क्योंकि अब वह पृथ्वी की छोर तक महान् ठहरेगा। और वह शान्ति का मूल होगा, जब अशशूरी हमारे देश पर चढ़ाई करें, और हमारे राजभवनों में पांव धरें, तब हम उनके विरुद्ध सात चरवाहे वरन आठ प्रधान मनुष्य खड़े करेंगे।

मीका 5:2-5

एक महान डेविडिक राजा के बारे में 700 साल पहले की एक और प्रसिद्ध मसीहा की भविष्यवाणी ने घोषणा की:

क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत, युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिये वे उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से ले कर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए ओर संभाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा।

यशायाह 9:6-7

बुद्धिमान लोगों और उनके दल ने यरूशलेम के दक्षिण में बेतलेहेम में घर पर चमकते सितारे को देखा, और वहां बच्चे के राजा की पूजा की। उन्होंने मैरी और जोसेफ को सोने, लोबान और लोहबान के अमूल्य उपहार दिए, जो निश्चित रूप से उनकी अचानक शरणार्थी स्थिति के माध्यम से उनकी मदद करते थे।

एक स्वप्न ने उन अंतर्राष्ट्रीय आगंतुकों को चेतावनी दी कि वे हेरोदेस को वापस रिपोर्ट न करें, जैसा कि उसने अनुरोध किया था, इसलिए उन्होंने यरूशलेम को दरकिनार करते हुए पूर्व की ओर एक और मार्ग लिया।

एक स्वर्गदूत फिर से एक सपने में यूसुफ को दिखाई दिया, उसे हेरोदेस की योजना के बारे में चेतावनी दी कि वह शिशु राजा को नष्ट कर देगा। स्वर्गदूत ने यूसुफ से कहा कि वह मिस्र भाग जाए और जब तक उसे लौटने के लिए न कहा जाए, तब तक वहीं रहना। उन्होंने जल्दी से पैक किया और उस रात चले गए।

मैथ्यू बताता है कि कैसे अपने रोष में हेरोदेस ने बेथलहम में दो साल तक के लड़कों को मार डाला। हेरोदेस अपने शासन के लिए खतरा पैदा करने वाले किसी भी व्यक्ति की हत्या करने के लिए प्रसिद्ध था, जिसमें उसके अपने तीन बेटे और उसकी एक पत्नी भी शामिल थी।

यहूदी इतिहासकार फ्लेवियस जोसेफस ने कुख्यात राजा हेरोदेस द ग्रेट को अपनी युवावस्था में एक सफल निर्माता के रूप में वर्णित किया, जो अपने 36 साल के शासनकाल के अंतिम दशक के दौरान तेजी से पागल और निर्दयी हो गया था। उन्होंने 516 ईसा पूर्व के आसपास निर्वासितों को लौटाकर बनाए गए दूसरे मंदिर

का नवीनीकरण और विस्तार किया, इसे सुलैमान द्वारा निर्मित पहले मंदिर के आकार में बहाल किया, और उनकी टीमों ने अंततः अपने उत्तरी छोर पर एंटोनिया किले के साथ बलुआ पत्थर मंदिर माउंट के आकार को दोगुना कर दिया। उनके कई महल किले में एक यरूशलेम में और दूसरा मृत सागर द्वारा मसादा में, 70 ईस्वी के रोमन आक्रमण के खिलाफ यहूदियों के अंतिम स्टैंड का स्थान था। हेरोदेस द ग्रेट, एक इदुमियन पिता से, एक यहूदी के रूप में उठाया गया था, जो रोम के अधीन शासित था।



यरूशलेम में हेरोदेस के मंदिर का मॉडल

उनका लड़कपन

His Boyhood

मरियम और यूसुफ के साथ मिस्र भागकर हेरोदेस के क्रोध से बचकर, लगभग एक वर्ष का युवा लड़का शरणार्थी बन गया। इसलिए यह संभावना है कि मिस्र में काहिरा में स्थित यहूदी प्रवासी के बीच यीशु का प्रारंभिक बहु-सांस्कृतिक और बहुभाषी लड़कपन था। वे हेरोदेस की मृत्यु के बाद तक वहीं रहे।

फिर एक और स्वप्न में एक स्वर्गदूत ने यूसुफ को उन लोगों की मृत्यु की सूचना दी, जो बच्चे को मारना चाहते थे और उसे वापस इस्राएल देश में भेज दिया। परमेश्वर ने उसे एक सपने में चेतावनी दी थी कि वह यहूदिया नहीं लौटा, जहां हेरोदेस के पुत्र अरखिलौस ने शासन किया था, बल्कि फिर से गलील में नासरत लौट आया।

परिवार नासरत के आसपास प्रसिद्ध हो गया। बढ़ई के व्यापार का अनुवाद बिल्डर, कारीगर, पत्थर के काम करने वाले और धातु के कामगार के रूप में भी किया जा सकता है। यीशु (यहोशू) और उसके भाई जेम्स

(यूनानी में याकूब), जोसेफ, साइमन और यहूदा (या यहूदा) पारिवारिक व्यवसाय सीखेंगे और अपनी बहनों की देखभाल करेंगे। कल्पना कीजिए कि आपका बड़ा भाई यीशु की तरह बुद्धिमान, ईमानदार, देखभाल करने वाला और प्यार करने वाला है। नगरवासी उसे बड़ई और बड़ई के पुत्र के रूप में जानते थे।

वयस्कों के रूप में, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद, वे भाई और अन्य रिश्तेदार जैसे मैरी और मैरी की बहन और उनके बेटे यीशु के अनुयायियों की कंपनी में शामिल हो गए। याकूब (याकूब) और यहूदा (यहूदा) ने विश्वासियों का मार्गदर्शन करने के लिए छोटे, मजबूत, व्यावहारिक, देहाती पत्र लिखे, जो अब हमारी बाइबल में शामिल हैं।

यीशु नियमित रूप से यरूशलेम चला गया। भक्त यहूदियों ने अपने तीन प्रमुख पर्वों में से प्रत्येक के लिए यरूशलेम की यात्रा की, अप्रैल-मई के आसपास फसह और पित्तुकुस्त और अक्टूबर में तम्बू। यीशु ने 12 साल के लड़के के रूप में फसह की दावत में भाग लिया, वार्षिक उत्सव के बाद मंदिर में अतिरिक्त दिन बिताते हुए, उन शास्त्रों पर चर्चा करते हुए जिन्हें वह पूरा करने के लिए आया था। विद्वान उनकी बातों पर चकित थे समझ और उसके प्रश्न।

12 साल के लड़के, अब की तरह, अपने धर्मग्रंथों के बड़े अंशों को पढ़ सकते थे, जिसमें टोरा (मूसा की पांच किताबें) और भजन और साथ ही पैंगबर शामिल थे। उनसे उनकी समझ के बारे में पूछताछ की जाएगी और वे पुजारियों और विद्वानों को अपने प्रश्न प्रस्तुत कर सकते हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु उन मंदिर चर्चाओं में तीन दिन अतिरिक्त रुके और उन्हें आश्चर्य हुआ कि उनके 'माता-पिता' नहीं जानते थे कि वह कहाँ होंगे। उसने उन्हें अपने स्वर्गीय पिता के बारे में एक प्रेमपूर्ण अनुस्मारक दिया जब मरियम ने कहा, "देखो, तुम्हारे पिता और मैं बड़ी चिंता में तुम्हें ढूँढ़ रहे हैं।"

एक शुद्ध, मजबूत, सतर्क और दयालु लड़का, यीशु ने शास्त्रों में बताए अनुसार अपने भाग्य का अध्ययन किया और अपने पिता के प्रेमपूर्ण उद्देश्य को लगातार अपनाया। एक किशोर के रूप में बढ़ते हुए वह हमेशा अपने स्वर्गीय पिता की इच्छा को पूरा करते हुए वफादार और अपने मानवीय माता-पिता के अधीन रहे।

वह उन वार्षिक फसह समारोहों के महत्व को जानता होगा। उन्होंने न केवल मिस्र में अपने लोगों को गुलामी से बचाने में परमेश्वर की शक्तिशाली और प्रेमपूर्ण दया को याद किया, बल्कि परमेश्वर के पुत्र के अंतिम बलिदान की ओर भी इशारा किया, जो परमेश्वर के मेमने के रूप में दुनिया के पाप को दूर करता है। निर्गमन 12 पहले फसह की कहानी कहता है।

फिर यहोवा ने मिस्र देश में मूसा और हारून से कहा, कि यह महीना तुम लोगों के लिये आरम्भ का ठहरे; अर्थात् वर्ष का पहिला महीना यही ठहरे। इस्राएल की सारी मण्डली से इस प्रकार कहो, कि इसी महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार, घराने पीछे एक एक मेम्रा ले रखो। और यदि किसी के घराने में एक मेम्रे के खाने के लिये मनुष्य कम हों, तो वह अपने सब से निकट रहने वाले पड़ोसी के साथ प्राणियों की गिनती के अनुसार एक मेम्रा ले रखे; और तुम हर एक के खाने के अनुसार मेम्रे का हिसाब करना। तुम्हारा मेम्रा निर्दोष और पहिले वर्ष का नर हो, और उसे चाहे भेड़ों में से लेना चाहे बकरियों में से।

और इस महीने के चौदहवें दिन तक उसे रख छोड़ना, और उस दिन गोधूलि के समय इस्राएल की सारी मण्डली के लोग उसे बलि करें। तब वे उसके लोहू में से कुछ ले कर जिन घरों में मेम्रे को खाएंगे उनके द्वार के दोनों अलंगों और चौखट के सिरे पर लगाएं। और वे उसके मांस को उसी रात आग में भूजकर अखमीरी रोटी और कड़वे सागपात के साथ खाएं। उसको सिर, पैर, और अतडियों समेत आग में भूजकर खाना, कच्चा वा जल में कुछ भी पकाकर न खाना। और उस में से कुछ बिहान तक न रहने देना, और यदि कुछ बिहान तक रह भी जाए, तो उसे आग में जला देना। और उसके खाने की यह विधि है; कि कमर बान्धे, पांव में जूती पहिने, और हाथ में लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाना; वह तो यहोवा का पर्व होगा। क्योंकि उस रात को मैं मिस्र देश के बीच में से हो कर जाऊंगा, और मिस्र देश के क्या मनुष्य क्या पशु, सब के पहिलौठों को मारूंगा; और मिस्र के सारे देवताओं को भी मैं दण्ड दूंगा; मैं तो यहोवा हूं। और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह लोहू तुम्हारे निमित्त चिन्ह ठहरेगा; अर्थात् मैं उस लोहू को देखकर तुम को छोड़ जाऊंगा, और जब मैं मिस्र देश के लोगों को मारूंगा, तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नाश न होगे।

निर्गमन 12:1-13

निसान की 14 तारीख की दोपहर में मारे गए बेदाग मेमने को उसी शाम निसान की 15 तारीख को फसह या सेडर भोजन में खाया जाएगा क्योंकि नया दिन सूर्यास्त के बाद शुरू हुआ था।

वह दिन अखमीरी रोटी के पर्व के एक सप्ताह का पहला दिन था, जिसे यीशु और उसका परिवार और दोस्त हर साल यरूशलेम में मनाते थे, फसह के भोजन से शुरू होकर, बलि के पास्का मेमना खाते थे।

फसह, एक वसंत त्योहार, उत्तरी वसंत विषुव के बाद पूर्णिमा पर शुरू होता है। उत्तरी गोलार्ध में वसंत विषुव 20 या 21 मार्च के आसपास पड़ता है क्योंकि सूर्य उत्तर की ओर भूमध्य रेखा को पार करता है, महीने का पहला दिन निसान का।

इसलिए पर्व 15 तारीख को शुरू हुआ और 21 निसान (आमतौर पर अप्रैल की शुरुआत) को समाप्त हुआ।
रोटी या अन्य मिश्रण में सभी खमीर निषिद्ध थे और वे केवल अखमीरी रोटी खाते थे। यह दोनों इब्रानियों के
बंधन में दुख और पलायन में मिस्र छोड़ने पर उनकी जल्दबाजी का प्रतीक था।



भगवान ने नहीं देखा कि घर के अंदर कौन
रहने लायक है। भगवान ने केवल खून देखा

यीशु ने यरूशलेम में वार्षिक उत्सवों में भाग लिया, विशेष रूप से वे जो फसह, पित्तुकुस्त और झोपड़ियों के
तीन त्योहारों से जुड़े थे। अपनी युवावस्था और मर्दानगी में, यीशु इन पर्वों को मनाने के लिए हर साल कम से
कम तीन बार यरूशलेम की यात्रा करेंगे, जैसा कि इस्राएल के सभी भक्त पुरुषों ने किया था।

परमेश्वर ने मूसा को वार्षिक पर्वों की तिथियां और विवरण दिया, जैसा कि लैव्यव्यवस्था 23 में संक्षेप में
बताया गया है। यहां उन पर्वों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

1. फसह (पेसाच) - निसान 14-15 (मार्च/अप्रैल)
2. अखमीरी रोटी (छग हमोत्जी) - निसान 15-22
3. पहले फल (योम हबीकुरीम) - निसान 16-17
4. पेंटेकोस्ट (शावुत) - सिवन 6-7 (मई/जून)
5. तुरही (योम तेरुआ) - तिथ्री 1

(सितंबर अक्टूबर)

6. प्रायश्चित (योम किप्पुर) - तिथी 10

7. झोपड़ी (सुक्कोट) - तिथी 15-22

(1) फसह। त्योहार वर्ष पहले महीने (निसान 14) के 14 वें दिन फसह में पूर्णिमा के साथ शुरू हुआ, जब बेदाग मेमना मारा गया, यह मनाते हुए कि कैसे मौत का दूत उनके दरवाजे पर मेमने के खून के साथ घरों में 'पार' गया। पोस्ट और सरदल। यीशु परमेश्वर का हमारा फसह का मेमना है।

(2) अखमीरी रोटी। यह पर्व अगले दिन (निसान 15) से शुरू हुआ और सात दिनों तक चला। उन्होंने उस सप्ताह केवल खमीर या खमीर रहित भोजन ही खाया। यीशु बिना पाप के, बेदाग और शुद्ध रहा।

(3) पहला फल। सब्त के दूसरे दिन मनाया जाने वाला, वे यहोवा के सामने पूला लहराने के लिए गेहूं और जौ की शुरुआती फसलें ले आए। उन्होंने निसान के 14 वें दिन फसह के मेमने की बलि दी, फिर अखमीरी रोटी का पहला दिन सब्त के बाद मनाए जाने वाले पहले फल के पर्व के साथ 15 वां दिन था। यीशु उस दिन जी उठा, जो अनन्त जीवन का पहला फल था।

(4) पेंटेकोस्ट। सातवें सब्त के बाद के रविवार को (फसह के सब्त के 50 दिन बाद) उन्होंने गर्मी की फसल की शुरुआत को चिह्नित करते हुए खमीर/खमीर और नए मांस के साथ दो रोटियां चढ़ायीं। उस दिन यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद परमेश्वर का आत्मा उड़ेली गया था।

शरद ऋतु / पतझड़ त्यौहार

(5) तुरही। सातवें महीने (तिथरी 1) का पहला दिन राम के सींग को उड़ाने के साथ मनाया गया। तुरही क्षेत्र कार्यकर्ताओं के लिए मंदिर में आने का संकेत थी। एक दिन, तुरही फूंकी जाएगी, मरे हुएओं को जी उठाया जाएगा, और हम प्रभु की वापसी पर बदल जाएंगे। (1 कुरिन्थियों 15:52)

(6) प्रायश्चित। यह सबसे बड़ा पवित्र दिन सातवें महीने के दसवें दिन पड़ता है। उपवास और बलिदान का दिन, यह वर्ष में एक बार एकमात्र समय था जब महायाजक ने पवित्र स्थान में पवित्र स्थान में वाचा के सन्दूक के स्वर्ण दया आसन पर बलिदान का रक्त छिड़का और फिर बाद में तम्बू में मंदिर में। याजकों ने परमेश्वर

को समर्पित एक बकरी को स्वतंत्रता में छोड़ा, प्रतीकात्मक रूप से लोगों के पापों को दूर करने के लिए, कभी वापस न आने के लिए। इस तरह हमें बलि का बकरा शब्द मिला। यीशु हमारा प्रायश्चित बलिदान है और हमारे पाप को दूर करता है।

(7) तम्बू। सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन ने बूथों में जश्न मनाने का एक सप्ताह शुरू किया, जो इस्राएल के जंगल में भटकने के 40 वर्षों के दौरान उनके लिए परमेश्वर की देखभाल की याद दिलाता है। वह रात को निवास के ऊपर एक चमकीले बादल और आग के खम्भे के साथ उनकी अगुवाई करता था। वह अपनी आत्मा के द्वारा हमारी अगुवाई करता है।

सर्दियों का त्योहार

डेडिकेशन ऑफ डेडिकेशन (हनुका) ने दिसंबर में 165 ईसा पूर्व में मंदिर की सफाई का जश्न मनाया, जब ग्रीक साम्राज्य के खिलाफ मैकाबीन विद्रोह के दौरान जैतून का तेल आठ दिनों तक जलता रहा। अगले अप्रैल में अपने अंतिम फसह के बलिदान से पहले यीशु ने इस वैकल्पिक दावत में भाग लिया।

अपनी युवावस्था और मर्दानगी के दौरान, यीशु अपने परिवार और दोस्तों के साथ गलील से, यरदन की विस्तृत घाटी के साथ, यरीहो और पहाड़ियों तक यरूशलेम में फसह में एक सप्ताह के तीन मुख्य वार्षिक उत्सवों के लिए, पित्तुकुस्त में एक सप्ताह के अंत में यात्रा करेगा, और झोपड़ियों में एक सप्ताह से अधिक।

वे यरूशलेम और उसके आस-पास के रिश्तेदारों से मिलने जाते थे, जिनमें मरियम की रिश्तेदार इलीशिबा, उसका पति जकर्याह और उसका अभिषिक्त बेटा यूहन्ना शामिल था जो उसके जन्म से ही आत्मा से भरा हुआ था। यूहन्ना जानता था कि यीशु अद्वितीय और निष्पाप था, लेकिन उसने यह महसूस नहीं किया कि यीशु वास्तव में वांछित मसीहा था जब तक कि यीशु पर परमेश्वर का आत्मा नहीं आया जब यूहन्ना ने उसे बपतिस्मा दिया।

परमेश्वर की महिमा ने मानव यीशु को भर दिया। उसके शिष्य यूहन्ना ने लिखा, "हमने उसकी महिमा देखी है... अनुग्रह और सच्चाई से भरपूर।" अन्तिम भोज के समय, यहूदी के मरने के दिन, यीशु ने कहा, "जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है।" और इब्रानियों को लिखे गए पत्र में आगे कहा गया है, "वह परमेश्वर की महिमा का प्रतिबिम्ब और परमेश्वर के अस्तित्व की सटीक छाप है।"

परमेश्वर अपने इकलौते पुत्र के रूप में हमारे बीच चला। कुछ ने उस पर विश्वास किया और उसका अनुसरण किया। बहुतों ने नहीं किया। आज भी ऐसा ही है।

2. सेवा की शुरुआत

Ministry Begins

यीशु शुरु से ही विवादास्पद रहे हैं।

वह कई हत्या के प्रयासों से बच गया। दो राजा, पिता और पुत्र, उसे मारना चाहते थे। उसके अपने शहरवासियों ने उसे एक चट्टान पर धकेलने का प्रयास किया। यरूशलेम में उग्र लोगों ने उसे एक से अधिक बार पथराव करने का प्रयास किया। धार्मिक नेताओं ने उन्हें कई बार मारने की साजिश रची।

लेकिन यीशु ने क्रूस पर अपनी बलिदान मृत्यु का समय, दिन और स्थान चुना।

तनाव बढ़ गया। कई लोगों का मानना था कि उत्तर में नासरत गाँव की ग्रामीण पहाड़ियों के प्रसिद्ध, कट्टरपंथी युवा भविष्यवक्ता लंबे समय से प्रतीक्षित मसीहा, मसीह थे। उस प्राचीन शीर्षक मसीहा (हिब्रू) या मसीह (यूनानी) का अर्थ था परमेश्वर का अभिषिक्त जन। लोगों को उम्मीद थी कि उनका मसीहा उन्हें रोमन साम्राज्य के अत्याचार से मुक्त करेगा और अपने अनन्त राज्य की स्थापना करेगा। उन्होंने किया, लेकिन वैसा नहीं जैसा उन्होंने उम्मीद की थी।

कुछ लोग, जैसे जोशीले, अपने राष्ट्र को मुक्त करने के लिए लड़ना चाहते थे। रोमन सैनिकों ने अपने साम्राज्य का विरोध करने की निरर्थकता के सार्वजनिक प्रदर्शन के रूप में इन विद्रोहियों को क्रूरता से सूली पर चढ़ा दिया। युवा नबी का एक शिष्य शमौन जोशीला था।

अन्य लोगों, जैसे कि कई यहूदी नेताओं ने, शांति बनाए रखने और आगे के आक्रमण और विनाश को रोकने की उम्मीद में, अपने रोमन अधिपतियों के साथ सहयोग किया। कट्टरपंथी भविष्यवक्ता के शिष्यों में से एक मत्ती था जो रोम के लिए कर संग्रहकर्ता था। लोग टैक्स लेने वालों को देशद्रोही मानते थे।

लोकप्रिय भविष्यवक्ता के अन्य शिष्यों ने गलील में एक उत्पादक मछली पकड़ने का व्यवसाय चलाया, नावों के मालिक थे और कई मछुआरों को रोजगार दिया। उनमें से कुछ अपने नेता की गिरफ्तारी, यातना और सार्वजनिक निष्पादन की दर्दनाक और भ्रमित करने वाली घटनाओं के बाद अस्थायी रूप से अपने व्यवसाय में लौट आए।

इस कट्टरपंथी युवा भविष्यवक्ता ने यहूदी नेताओं को नाराज़ किया। उसने उनके कई सख्त धार्मिक कानूनों और परंपराओं को तोड़ा। उन्होंने सभी प्रकार के लोगों का स्वतंत्र रूप से स्वागत किया और व्यापक रूप से वेश्याओं और पापियों के मित्र के रूप में जाने जाते थे, जिसमें कर संग्रहकर्ता जैसे देशद्रोही भी शामिल थे। उन्होंने उनके घरों का दौरा किया। उन्होंने कठोर धार्मिक नेताओं के घरों में शामिल होने के लिए पापियों का स्वागत किया, जो हैरान, भयभीत और क्रोधित थे।

यहूदी इतिहासकार जोसीफस ने यहूदी इतिहास के अपने विवरण में यीशु की लोकप्रियता का उल्लेख किया। द टेस्टिमोनियम फ्लेवियनम (फ्लेवियस जोसेफस की गवाही), यहूदियों की उनकी प्राचीन वस्तुओं में दिए गए नाम, 93-94 ईस्वी के आसपास, पुस्तक 18, अध्याय 3, खंड 3 में लिखा गया है, यह कहता है (शायद संपादित):

इस समय के बारे में यीशु रहते थे, एक बुद्धिमान व्यक्ति, अगर किसी को वास्तव में उसे एक आदमी कहना चाहिए। क्योंकि वह आश्चर्यजनक कर्म करने वाला और सत्य को सहर्ष स्वीकार करने वाले लोगों का गुरु था। उसने कई यहूदियों और कई यूनानियों पर जीत हासिल की। वह मसीह था। और जब पिलातुस ने हमारे बीच के प्रधान पुरुषों के दोष के कारण उसे क्रूस पर चढ़ा दिया था, तो जो पहले उसे प्यार करने आए थे, वे नहीं रुके। वह उन्हें जीवन का तीसरा दिन बिताते हुए दिखाई दिया, क्योंकि परमेश्वर के नबियों ने इन बातों और उसके बारे में एक हजार अन्य चमत्कारों की भविष्यवाणी की थी। और ईसाइयों का गोत्र, जो उनके नाम से जाना जाता है, आज तक गायब नहीं हुआ है।

यीशु की सेवकाई और मृत्यु की तारीखों के बारे में बहुत सारी बहसें हैं, लेकिन अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला एक क्रम यह है कि उनके मंत्रालय में पहला फसल संभवतः ईस्वी सन् 28 के आसपास था और अप्रैल 30 की शुरुआत में सूली पर चढ़ा दिया गया था। विद्वान कई अन्य संभावनाओं पर बहस करते हैं।

यीशु की सार्वजनिक सेवकाई तब शुरू हुई जब वह जॉर्डन नदी में अपने बपतिस्मे के बाद लगभग 30 वर्ष के थे और 40 दिनों के उपवास के बाद यहूदिया के रेगिस्तान में जहां उन्होंने मजबूत प्रलोभन को अस्वीकार कर दिया। जॉर्डन गलील की मीठे पानी की झील से समुद्र तल से 210 मीटर (700 फीट) नीचे, 100 किमी (60 मील) के लिए 10 किमी (6 मील) चौड़ी जॉर्डन घाटी से मृत सागर तक, समुद्र तल से 430 मीटर (1400 फीट) नीचे बहती है। पृथ्वी पर यह सबसे निचला स्थान यरूशलेम के पहाड़ी शहर से लगभग 50 किमी (35 मील) दक्षिण-पूर्व में लगभग 750 मीटर (2,500 फीट) की दूरी पर है।

बाइबिल इतिहास ऑनलाइन से निम्नलिखित नक्शा यीशु की यात्रा और मंत्रालय की एक उपयोगी तस्वीर देता है। यीशु और हजारों अन्य लोग अक्सर गलील और यरुशलम के बीच 100 किमी या लगभग 70 मील की दूरी पर चलते थे, विशेष रूप से तीन मुख्य वार्षिक पर्वों के लिए।

बाइबिल इतिहास ऑनलाइन पर जाने वाले लिंक के साथ वेबसाइट और प्रकाशन के उपयोग की अनुमति है:
<https://bible-history.com/maps/palestine-nt-times>.



नए नियम में इस्राएल

बाइबिल इतिहास ऑनलाइन

मैं इन खंडों में यीशु के जीवन और सेवकाई के अपने सारांश को व्यवस्थित करता हूँ:

1 जन्म और लड़कपन

2 मंत्रालय शुरू

3 पहले से दूसरे फसह तक

4 दूसरे से तीसरे फसह 5 पिन्तेकुस्त तक फसह का पर्व

यह अध्याय आपको उन तीन फसहों से जुड़े वर्षों का एक सिंहावलोकन देता है और फिर उन तीनों में से पहले के आसपास की घटनाओं का वर्णन करता है।

कई संभावित अनुक्रम और कालक्रम हैं। एक क्रम यह है कि यीशु की सेवकाई में तीन फसह शामिल थे।

पहले से दूसरे फसह तक

First To Second Passover

पहला फसह उनके परिवार के बाद हुआ, और उनके कुछ शिष्यों ने काना में एक शादी में भाग लिया, जहां उन्होंने पानी को शराब में बदलने का अपना पहला चमत्कार किया। तब उसका परिवार और कुछ प्रारंभिक चेले, गलील झील पर कफरनहूम गए, और उस भीड़ में शामिल हो गए, जो यरदन की चौड़ी घाटी से यरीहो तक जाती थी और पहाड़ियों पर फसह के लिए यरूशलेम तक जाती थी। वहाँ, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला और यीशु दोनों ही भीड़ को प्रचार कर रहे थे और लोगों को परमेश्वर की ओर मुड़ने के लिए बुला रहे थे। यीशु ने नीकुदेमुस को विश्वास और नए जन्म के बारे में समझाया, और प्रचार करने के लिए यरदन लौट आया। उनके शिष्यों ने लोगों को पश्चाताप के संकेत के रूप में बपतिस्मा भी दिया। जब यीशु को पता चला कि उसकी बढ़ती लोकप्रियता ने फरीसियों को चिंतित किया है और धमकी दी है, तो उसने पीछे हटने का फैसला किया, और सामरिया की पहाड़ियों के माध्यम से गलील लौट आया जहां उसने सामरी महिला और वहाँ के ग्रामीणों से बात की।

यीशु ने गलील झील के उत्तर पश्चिम में कफरनहूम में अपने आधार के आसपास गलील में अपनी प्रारंभिक सेवकाई शुरू की। उसने अपने पहले शिष्यों को सूचीबद्ध किया जो उसके साथ जुड़ गए, जैसा कि कई अन्य लोगों ने किया, जिनमें महिलाएं भी शामिल थीं जिन्होंने उनका समर्थन किया।

गलील में मुख्य मंत्रालय में अपने बारह करीबी शिष्यों को मिशन पर भेजना शामिल था और इसमें गलील में यीशु के अधिकांश मंत्रालय शामिल थे।

दूसरा से तीसरा फसह

Second To Third Passover

दूसरे फसह ने जेल में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर काट दिया, और जब यीशु अपने शिष्यों के साथ झील के उस पार चले गए। फसह की तीर्थयात्रा के लिए इकट्ठा हुई भीड़, उत्तरी तट के चारों ओर उनका पीछा करती थी, और उसने बीमारों को चंगा किया, प्रचार किया, और उन्हें एक लड़के के दोपहर के भोजन से खिलाया। वे उसे तुरंत अपना राजा बनाना चाहते थे, लेकिन वह प्रार्थना करने के लिए पहाड़ियों पर चला गया, और बाद में तूफानी पानी पर चला गया, और शिष्यों के साथ उनकी नाव में शामिल हो गए, जो तुरंत किनारे पर पहुंच गई। इस बार यरुशलम में फसह के अवसर पर जब यीशु का धार्मिक नेताओं के साथ संघर्ष हुआ तो तनाव तेजी से बढ़ गया।

गलील में अंतिम सेवकाई कैसरिया फिलिप्पी के पास के पहाड़ों में रूपान्तरण में समाप्त होती है जहाँ उसने मूसा और एलिय्याह के साथ पृथ्वी से अपने प्रस्थान के बारे में बात की। यीशु ने यरुशलम की अपनी अंतिम यात्रा की तैयारी की। उसने अपने सत्तर अनुयायियों को मिशन पर उन स्थानों पर भेजा जहाँ वह यरुशलम की अपनी अंतिम यात्रा पर जाने वाला था।

गलील और यहूदिया के माध्यम से उनकी अंतिम यात्रा में सितंबर/अक्टूबर के आसपास झोपड़ियों के पर्व के लिए यरुशलम की यात्रा, और दिसंबर की सर्दियों में समर्पण के पर्व के लिए, जिसे अब हनुक्का कहा जाता है, शामिल हैं। अप्रैल में फसह के लिए यरुशलम की उनकी अंतिम यात्रा मुठभेड़ों के बाद यरीहो में बरतिमाई और जक्कई के साथ, और बेथानी में लाजर को मृत्यु से जिलाया।

यहूदिया में उस बाद की सेवकाई में यीशु ने यरदन घाटी के साथ यरुशलम की अपनी अंतिम यात्रा जारी रखी, दक्षिणी यरदन में यरीहो के माध्यम से, बेथानी की पहाड़ियों तक, और पास के यरुशलम तक।

पिन्तेकुस्त का फसह

Passover To Pentecost

तीसरे और अंतिम फसह में यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान शामिल था। फिर वह अपने स्वर्गारोहण तक चालीस दिनों के दौरान अपने कई अनुयायियों के सामने प्रकट हुआ।

यरुशलम में अंतिम मंत्रालय, जिसे पैशन वीक या होली वीक के रूप में जाना जाता है, यीशु के विजयी प्रवेश के साथ शुरू हुआ जिसे अब पाम संडे कहा जाता है। सुसमाचार अपने पाठ का लगभग एक तिहाई उस अंतिम सप्ताह के लिए समर्पित करते हैं। फिर, केवल एक महीने से अधिक समय तक, जी उठे हुए प्रभु अक्सर अपने अनुयायियों के सामने प्रकट हुए।

यीशु की सेवकाई संभवतः उन तीन फसह को कवर करती है, जैसा कि यूहन्ना का सुसमाचार सुझाव देता है: पहला यूहन्ना 2 में वर्णित है, दूसरा यूहन्ना 6:4 में, और तीसरा (अंतिम भोज और सूली पर चढ़ाया जाना) यूहन्ना 11:55 में; 12:1; 13:1; 18:28, 39; और 19:14। सभी सुसमाचार उस अंतिम सप्ताह का बहुत विस्तार से वर्णन करते हैं।

पतरस, चेलों में अगुवा, ने फसह के पर्व के पचास दिन बाद पिन्तेकुस्त के पर्व पर प्रचार किया, और लगभग तीन हजार लोगों ने विश्वास किया। पतरस ने सख्त यहूदी कानूनों को तोड़ा जब उसने बाद में कैसरिया में रोमन सूबेदार कुरनेलियुस के विशाल घर में प्रचार किया। उन्होंने बताया कि कैसे सिर्फ यहूदियों के लिए ही नहीं बल्कि सभी के लिए भगवान की कृपा की खुशखबरी है।

पतरस ने यीशु की सेवकाई को इस प्रकार सारांशित किया:

तब पतरस ने मुंह खोलकर कहा; अब मुझे निश्चय हुआ, कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन हर जाति में जो उस से डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है। जो वचन उस ने इस्त्राएलियों के पास भेजा, जब कि उस ने यीशु मसीह के द्वारा (जो सब का प्रभु है) शान्ति का सुसमाचार सुनाया। वह बात तुम जानते हो जो यूहन्ना के बपतिस्मा के प्रचार के बाद गलील से आरम्भ करके सारे यहूदिया में फैल गई। कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया: वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। और हम उन सब कामों के गवाह हैं; जो उस ने यहूदिया के देश और यरूशलेम में भी किए, और उन्होंने उसे काठ पर लटकाकर मार डाला। उस को परमेश्वर ने तीसरे दिन जिलाया, और प्रगट भी कर दिया है। सब लोगों को नहीं वरन उन गवाहों को जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से चुन लिया था, अर्थात् हम को जिन्होंने ने उसके मरे हुआओं में

से जी उठने के बाद उसके साथ खाया पीया। और उस ने हमें आज्ञा दी, कि लोगों में प्रचार करो; और गवाही दो, कि यह वही है; जिसे परमेश्वर ने जीवतों और मरे हुएओं का न्यायी ठहराया है।

प्रेरितों के काम 10:34-42

यहूदिया में प्रारंभिक सेवकाई

Early Ministry in Judea

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, बीहड़ जंगल का भविष्यद्वक्ता, ऊंट के बालों को चमड़े की पट्टी से बांधे हुए, जंगली शहद से मीठी हुई टिड्डियों की एक श्रेणी का आहार खा रहा था, एलिय्याह की आत्मा और शक्ति में प्रभु के आने का मार्ग तैयार करने के लिए आया था। उसने लोगों को तैयार होने, पाप से फिरने और यरदन नदी में बपतिस्मा लेने के लिए बुलाया।

यीशु अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए बपतिस्मा लेने आया। यूहन्ना को आश्चर्य हुआ और उसने महसूस किया कि यीशु को उसे बपतिस्मा देना चाहिए, लेकिन यीशु ने अपने पिता की आज्ञा मानने पर जोर दिया। जब वह जल में से ऊपर आया, तो परमेश्वर का आत्मा उस पर कबूतर की नाई उतरा। यूहन्ना ने इसे देखा और महसूस किया कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का अभिषिक्त, मसीहा, परमेश्वर का पुत्र, परमेश्वर का मेम्ना था जो संसार के पाप को उठा ले जाता है। जब परमेश्वर की आत्मा ने यीशु को भर दिया तो परमेश्वर ने कहा, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ।"

यीशु का अभिषिक्त, परमेश्वर की आत्मा द्वारा चमत्कारिक रूप से कल्पना की गई थी, अब उसका अभिषेक, शक्ति और बपतिस्मा परमेश्वर के पवित्र आत्मा द्वारा और सेवकाई के लिए किया गया था। उस सेवकाई की शुरुआत में प्रार्थना और उपवास के अपने 40 दिनों के दौरान वह उस अभिषेक और शक्ति का दुरुपयोग करने के लिए खुद को खिलाने के लिए, दुनिया पर शासन करने और प्रदर्शन करने के लिए परीक्षा में था। उन्होंने प्रासंगिक शास्त्रों का हवाला देते हुए प्रलोभन का विरोध किया। तब उसकी सेवकाई शुरू हुई, पवित्र आत्मा द्वारा सशक्त और नेतृत्व किया गया।

यीशु पूरी तरह से मनुष्य थे (सुपर-बॉय या सुपर-मैन नहीं)। वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था, लेकिन उसने अपने अधिकारों से खुद को खाली कर लिया और पूरी तरह से मानव बन गया। अब, परमेश्वर के आत्मा द्वारा अभिषिक्त और सशक्त होकर उसने परमेश्वर के आत्मा की शक्ति में अपनी सेवकाई शुरू की। बाद में उन्होंने अपने अनुयायियों को उसी तरह अपने अधिकार से सशक्त बनाया।

यहूदिया में यीशु की प्रारंभिक सेवकाई उसके बपतिस्मा, उसके उपवास और प्रलोभनों के साथ शुरू हुई, और अनुयायियों को दक्षिण में यहूदिया और उत्तर में गलील दोनों में उसके साथ रहने के लिए आमंत्रित किया।

बहुत से लोग यीशु को गलील के आस-पास शिष्यों को बुलाते हुए परिचित हैं, लेकिन यह भूल सकते हैं कि उनमें से कई ने दक्षिणी जॉर्डन में जॉन द बैपटिस्ट को जवाब देने वाली भीड़ के बीच उसका पीछा करना शुरू कर दिया, और फिर यीशु को भी।

गलील झील से बहने वाली मीठे पानी की नदी के साथ व्यापक उपजाऊ जॉर्डन घाटी के साथ बहुसंख्यक स्वतंत्र रूप से चले गए। यह मुख्य व्यापारिक और यात्रा मार्ग था, विशेष रूप से यरूशलेम में वार्षिक दावत के समय।

शुरुआत में जॉन द बैपटिस्ट और जीसस दोनों ने जॉर्डन घाटी में प्रचार किया और यीशु के शिष्यों ने भी प्रतिक्रिया देने वाले कई लोगों को बपतिस्मा दिया। यीशु का अनुसरण करने वाली भीड़ तेजी से बढ़ी, खासकर जब यूहन्ना ने यीशु को परमेश्वर का पुत्र, मसीहा कहा।

अन्द्रियास और उसके भाई शमौन, जिन्हें यीशु ने पतरस कहा, ने यीशु के बारे में यूहन्ना के वचन पर विश्वास किया और उससे मिले। यीशु ने फिलिप्पुस और नतनएल को अपने साथ आने के लिए आमंत्रित किया और जल्द ही यह बात फैल गई। यूहन्ना के बपतिस्मा के समय से यीशु का अनुसरण करने वाले कई लोगों में से दो अन्य थे जोसफ और मथायस।

यूहन्ना आनन्दित हुआ कि यीशु की प्रसिद्धि और लोकप्रियता में वृद्धि हुई। उन्होंने जोर देकर कहा कि यीशु को अवश्य ही बढ़ना चाहिए जब वह, जॉन को कम करना चाहिए। इसलिए जब यीशु ने उसके बपतिस्मे के बाद पहले फसह के पहले और बाद में यात्रा की, तो अधिकाधिक भीड़ उसके पीछे हो ली।

उस पहले फसह से पहले उनमें से एक समूह गलील लौट आया, और फिर यीशु अपने परिवार के साथ अपने कुछ शिष्यों के साथ काना में शादी में शामिल हो गए, जहाँ वे शराब से बाहर हो गए, संभवतः यीशु के अनुयायियों की बढ़ती संख्या के कारण। यीशु ने पानी को सबसे अच्छी दाख-मदिरा में बदल दिया जब उसकी माँ ने उससे मदद के लिए कुछ करने का आग्रह किया। अपने बपतिस्मे में सशक्त होने के बाद यह उसका पहला चमत्कारी संकेत था। उन्होंने सबसे अच्छी शराब प्रदान की। आज लोग अक्सर शादियों में इसका जिक्र करते हैं। तब यीशु और उसका परिवार और नए अनुयायी गलील झील के कफरनहूम को गए।

उत्तर की ओर उस यात्रा के बाद, यीशु और अनुयायियों की बढ़ती संख्या परदन घाटी के साथ फसह की दावत के लिए यरूशलेम की ओर लौटी। यीशु ने बढ़ती भीड़ को सिखाया और उसके शिष्यों ने कई अनुयायियों को बपतिस्मा दिया जो यीशु मसीह में विश्वास करते थे।

यरूशलेम की उस यात्रा में संभवतः धार्मिक नेता नीकुदेमुस, एक फरीसी के साथ प्रसिद्ध चर्चा शामिल थी, जो रात में यीशु के साथ बात करता था, शायद दिन के समय भारी भीड़ से बचता था। नीकुदेमुस ने बाद में अगले वर्ष झोपड़ियों के पर्व में यीशु का समर्थन करके, शासक परिषद के कई महासभा के साथ संघर्ष किया, और अगले वर्ष उसने एक अन्य विश्वासी, अरिमथिया के जोसेफ को यीशु के शरीर को कब्र में रखने में मदद की।

लोग कई तरह से यीशु का अनुसरण करते थे। सबसे ज्यादा संख्या उपचार और मदद के लिए आई। यात्रा करने वाले युवा रब्बी के शिक्षण और कहानियों ने भारी भीड़ को आकर्षित किया। उसने असामान्य अधिकार के साथ सिखाया और लगातार समझाया कि कैसे परमेश्वर के राज्य में जीवन जीना है। उन्होंने हमेशा दृष्टान्तों का इस्तेमाल किया। 29 उनकी कहानियाँ और दूसरों को बताना आसान था। हालाँकि, उनके अर्थ और महत्व ने अक्सर लोगों को हैरान कर दिया, जिसमें उनके निकटतम शिष्य भी शामिल थे। इसलिए यीशु ने नियमित रूप से उनके वास्तविक महत्व को उन लोगों को समझाया जो वास्तव में राज्य के जीवन को समझना और जीना चाहते थे।

भले ही यीशु बहुत लोकप्रिय थे और एक विशाल अनुयायी को आकर्षित करते थे, उन्होंने लोगों को चुनौती दी और उनका सामना किया, विशेष रूप से छोटे दिमाग वाले लोग जो अपनी परंपराओं में फंस गए थे और सभी लोगों के लिए भगवान के विशाल प्रेम को समझने के इच्छुक नहीं थे, खासकर पाप में फंसे लोगों और बहिष्कृत और बाहरी लोगों के लिए।

अपने पूरे मंत्रालय में यीशु ने अक्सर अपने शिष्यों को उनकी संकीर्णता और तर्क के लिए फटकार लगाई कि उनके अनुयायियों में सबसे बड़ा या सबसे अच्छा कौन था। यीशु ने जोर देकर कहा कि सबसे महान वे हैं जिन्होंने सेवा की, और जिन्होंने दूसरों के लिए अपना जीवन लगा दिया, और जो वास्तव में परमेश्वर की महिमा चाहते थे, न कि अपनी महिमा। आत्म-अस्वीकार, आत्म-भोग नहीं, उसका तरीका था।

यीशु ने अपने निकटतम अनुयायियों को तब फटकार लगाई जब वे उच्च पद चाहते थे, और जब वे विरोधियों को दंडित करना चाहते थे, और जब वे बच्चों को दूर रखते थे, और विशेष रूप से जब उन्होंने उस पर संदेह किया था या विश्वास की कमी थी।

वे भी हमारी तरह धीमे सीखने वाले थे। यहां तक कि अंतिम भोज में उनके साथ अपनी आखिरी रात में भी, उन्होंने अभी भी इस बारे में तर्क दिया कि कौन सबसे बड़ा या सबसे अच्छा, या सबसे प्रभावी था। यीशु ने तब भी उनके धूल भरे पैर धोकर उनका सामना किया, जो उनमें से कोई भी कर सकता था लेकिन जाहिर तौर पर किसी ने नहीं किया।

अपने पूरे जीवन और सेवकाई के दौरान यीशु ने अक्सर उन लोगों की प्रशंसा की, जो उस पर विश्वास करते थे, जिन्होंने सेवा की थी, और जो परमेश्वर के लिए सम्मान और जीवन जीते थे।

आप यीशु के जीवन और सेवकाई के जीवनी क्रम की चर्चाओं का अध्ययन कर सकते हैं। इंटरनेट आर्काइव Giuseppe Ricciotti की क्लासिक, विद्वानों की किताब द लाइफ ऑफ क्राइस्ट (1947) के मुफ्त डाउनलोड देता है। वह यीशु के जीवन और सेवकाई का विस्तृत कालानुक्रमिक क्रम देता है (इतालवी से अनुवादित): https://archive.org/details/thelifeofchrist_201911

इन घटनाओं के अनुक्रम के संबंध में विद्वानों की राय व्यापक रूप से भिन्न है, लेकिन इस पुस्तक में मैं एक संभावित विकल्प के रूप में प्रारंभिक पारंपरिक विचारों का पालन करता हूं।

3. पहले से दूसरे फसह

First to Second Passover

यरुशलम के पूर्वी रिज पर स्थित मंदिर यहूदी जीवन के केंद्र में था। 586 ईसा पूर्व में नबूकदनेस्सर द्वारा सुलैमान के मंदिर (लगभग 950 ईसा पूर्व निर्मित) को नष्ट कर दिया गया था। 70 साल बाद फारस के साइरस के तहत कैद से रिहा किए गए यहूदियों ने 516 ईसा पूर्व से छोटे दूसरे मंदिर का निर्माण किया। हेरोदेस महान ने इसका विस्तार किया।

हेरोदेस मंदिर, 20 ईसा पूर्व में शुरू हुआ, मंदिर को उसके मूल आकार में बढ़ा दिया और टैंपल माउंट के आकार को दोगुना करके लगभग 35 एकड़ कर दिया, जिसके उत्तर-पूर्वी किनारे पर रोमन गैरीसन एंटोनिया किले थे। इसे पूरा करने में 46 साल लगे, जो 26 ई.पू. के कुछ समय बाद उनके बपतिस्मा के बाद यीशु का पहला फसह हो सकता है। यह उनके सार्वजनिक मंत्रालय की शुरुआत में उनके लगभग 30 वर्ष के होने के साथ मेल खाता है, उनके जन्म की तारीख लगभग 6 या 4 ईसा पूर्व के रूप में पहचानी गई है।

उसके बपतिस्मे के बाद पहले फसह के बाद, यीशु और उसके शिष्यों का बढ़ता हुआ दल दक्षिण जॉर्डन लौट आया जहाँ वह और जॉन द बैपटिस्ट दोनों प्रचार कर रहे थे, परमेश्वर के राज्य की घोषणा कर रहे थे और लोगों से परमेश्वर की ओर मुड़ने का आग्रह कर रहे थे। यीशु की प्रसिद्धि बढ़ी। यरूशलेम में चिंतित धार्मिक नेताओं को संदेह था कि नासरत के युवा भविष्यवक्ता और चमत्कार कार्यकर्ता लंबे समय से मसीहा हो सकते हैं। जब यीशु ने उनकी चिंताओं और विरोध के बारे में सुना तो वह चुपचाप उत्तर की ओर अंतर्देशीय पहाड़ी मार्ग से होते हुए शोमरोन की ओर चला गया।

वहाँ वह शोमरोन की स्त्री से याकूब के कुएँ के पास चारों ओर की पहाड़ियों के बीच मिला, और वहाँ दो दिन तक रहा और सामरियों को परमेश्वर का राज्य समझाता रहा। इससे अचरज हुआ कि यहूदियों के लिए उनके शिष्यों का भी सामरी लोगों के साथ कोई व्यवहार नहीं था। यीशु अक्सर सभी लोगों, विशेषकर उपेक्षित और बहिष्कृत लोगों के लिए अपने प्रेम और करुणा से लोगों को चौंकाते हैं।

काना में वापस यीशु ने कफरनहूम में एक शाही अधिकारी के बेटे को एक शब्द के साथ चंगा किया। अधिकारी ने उस पर विश्वास किया और घर लौटने पर अपने बेटे को ठीक पाया।

यूहन्ना 5, फसह के 50 दिन बाद, संभवतः पन्तेकुस्त के पर्वों में से एक के लिए यरूशलेम में यीशु की संक्षिप्त, विवादास्पद यात्रा के बारे में बताता है। यीशु ने बेथेस्डा के कुंड में सब्त के दिन एक अपंग को चंगा किया। धार्मिक नेताओं ने गुस्से में उस आदमी से पूछताछ की क्योंकि उसने सब्त के दिन अपनी लुढ़की हुई चटाई ढोई थी। वे परमेश्वर के प्रेम और करुणा को नहीं समझ सकते थे जो उनके मानव निर्मित नियमों और पवित्रशास्त्र की कानूनी व्याख्या से परे थे,

गलील में प्रारंभिक सेवकाई

Early Ministry in Galilee

प्रारंभिक गैलीलियन मंत्रालय तब शुरू हुआ जब जॉन बैपटिस्ट के कैद होने के बाद यीशु गलील लौट आया।

जब उस ने यह सुना कि यूहन्ना पकड़वा दिया गया, तो वह गलील को चला गया। और नासरत को छोड़कर कफरनहूम में जो झील के किनारे जबूलून और नपताली के देश में है जाकर रहने लगा।

मत्ती 4:12-13

यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया।

और कहा, समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो॥

मरकुस 1:14-15

फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा, और उस की चर्चा आस पास के सारे देश में फैल गई।

लूका 4:14

यीशु ने अपने पहले चेलों को बुलाया जो उसके साथ यात्रा करने लगे। वह नासरत की यात्रा के लिए लौटा, जहाँ उसके अपने मिशन और सभी राष्ट्रों के सभी लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम के बारे में उसकी व्याख्या ने नगरवासियों को नाराज कर दिया। वे इतने गुस्से में थे कि उन्होंने उसे मारने की कोशिश की।

यीशु ने कफरनहूम में झील पर अपना सेवकाई आधार स्थापित किया जहाँ भाइयों अन्द्रियास और पतरस और भाइयों जेम्स और यूहन्ना का मछली पकड़ने का व्यस्त व्यवसाय था। यीशु ने उनकी आराधनालय में शिक्षा दी, अशुद्ध आत्मा को बाहर निकाला और पतरस की सास को चंगा किया। लोग उसकी शिक्षा पर चकित थे क्योंकि उसने इस तरह के अधिकार के साथ बात की और उसके बारे में रिपोर्ट व्यापक रूप से फैल गई।

यीशु ने उस क्षेत्र में अपने कर संग्रह बूथ से मैथ्यू (जिसे लेवी भी कहा जाता है) को बुलाया और मैथ्यू ने भी यीशु के साथ यात्रा करने के लिए अपना लाभदायक व्यवसाय छोड़ दिया। मत्ती और यूहन्ना दोनों ने अंततः उन यात्राओं के दौरान यीशु की शिक्षाओं और चमत्कारों के बारे में लिखा।

मैथ्यू ने माउंट पर यीशु के उपदेश को रिकॉर्ड किया, मैथ्यू में पांच प्रवचनों में से पहला (नवीकरण जर्नल में लिंक पर एक मुफ्त पीडीएफ के साथ मैथ्यू में किंगडम लाइफ देखें)। ल्यूक मैदान पर उपदेश में इसी तरह की शिक्षा को दर्ज करता है। यहाँ मैं पर्वत पर उपदेश और यीशु की मौलिक शिक्षा के मुख्य अंशों को संक्षेप में प्रस्तुत करता हूँ। परमेश्वर का प्रेम का तरीका, जैसा कि यीशु में दिखाया गया है, जीवन और समाज का सामना करता है और बदल देता है।

धन्यवाद चीजों को उल्टा कर देता है। जो लोग परमेश्वर के राज्य का अनुसरण करते हैं और उसमें जीते हैं, वे वास्तव में धन्य हैं।

यीशु ने लोगों का न्याय उनके दिल और इरादों से किया। जो लोग अपने और सभी लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम को अस्वीकार या विरोध करते हैं, उनके लिए परमेश्वर के प्रकाश से दूर, अनन्त अंधकार की निंदा किए जाने का खतरा है। हमें अपने शत्रुओं से प्रेम करना है और उन लोगों के लिए प्रार्थना करना है जो हमें सताते हैं। हमें दूसरों को वैसे ही माफ करना चाहिए जैसे भगवान हमें माफ करते हैं।

यीशु ने व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को अपने आप में पूरा किया, और दूसरों के साथ करने के सुनहरे नियम के अनुसार जीते हुए जो आप चाहते हैं कि वे आपके लिए करें, सभी कानून और भविष्यद्वक्ताओं को पूरा करते हैं।

प्रभु की प्रार्थना इस बात का एक नमूना है कि कैसे प्रार्थना की जाए, न कि व्यर्थ दोहराव का साधन। इसके वर्तमान संस्करणों में इस तरह के शब्द शामिल हैं:

स्वर्ग में हमारे पिता, आपके नाम से पवित्र।

तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा पृथ्वी पर वैसे ही पूरी हो जैसे स्वर्ग में होती है।

हमें इस दिन की हमारी रोटी दो,

और हमारे पापों को क्षमा कर जैसे हम उन लोगों को क्षमा करते हैं जो हमारे विरुद्ध पाप करते हैं।

हमें परीक्षा से दूर ले चलो और बुराई से छुड़ाओ,

क्योंकि तेरा ही राज्य, शक्ति और महिमा युगानुयुग है। तथास्तु।

उस प्रार्थना का एक अरामी रूप शुरू होता है, अबावून डी'बाश्माया, जिसका अर्थ है, "प्रिय जो हर जगह है।"

यीशु ने हमें चुनौती दी कि हम सब से ऊपर परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता के अनुसार जीवन व्यतीत करें और तब परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा। अगर हम उनकी शिक्षा पर चलते हैं तो यह रेत पर नहीं, बल्कि चट्टान पर अपना घर बनाने जैसा है।

लोग यीशु की शिक्षा से चकित और अचंभित थे क्योंकि उसने उन्हें परम अधिकार वाले व्यक्ति के रूप में सिखाया था न कि दूसरों की तरह जो अन्य लोगों को उद्धृत करते थे। यीशु ने सभी के लिए परमेश्वर के प्रेम के मार्ग को सिखाया और प्रदर्शित किया।

धार्मिक नेताओं के साथ संघर्ष बढ़ गया क्योंकि यीशु ने पापियों के साथ स्वतंत्र रूप से संबद्ध किया और सब्ब के दिन लोगों को चंगा किया। धार्मिक नेताओं के सख्त नियमों और परंपराओं ने सब्ब के दिन किसी भी तरह के काम को करने के लिए अशुद्ध और निषिद्ध लोगों के साथ जुड़ने पर रोक लगा दी।

यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि सब्ब के दिन भी याजक बलि चढ़ाते थे, आठवें दिन लड़कों का खतना किया जाता था, लोग जानवरों को बचाते थे और आवश्यकतानुसार उन्हें पानी पिलाते थे, और गिरे हुए बच्चों की मदद करते थे। यीशु ने सब्ब के दिनों में लोगों को चंगा करने सहित, अपने सभी कार्यों में परमेश्वर के प्रेम, न्याय और करुणा को प्रकट किया।

गलील में मुख्य सेवा

Main Ministry in Galilee

मुख्य गैलीलियन मंत्रालय, जॉन द बैपटिस्ट (मैथ्यू 8-14) की मृत्यु के लिए पर्वत पर उपदेश से अनुसरण करता है। मैथ्यू ने यीशु के बारे में अपने आख्यानो को यीशु के शिक्षण के अंशों के साथ बदल दिया, जैसा कि इस अनुकूलित व्याख्यात्मक सारांश में है।

परमेश्वर के राज्य में जीवन के लिए मसीह की योजना

पहले शिष्यों की बुलाहट (मत्ती 4:12-23) पर्वत पर उपदेश (मत्ती 5-7)

परमेश्वर के राज्य का प्रसार

लेवी/मत्ती का आह्वान (मत्ती 9:9-13) मिशन उपदेश (मत्ती 9:35-10:42) परमेश्वर के राज्य का रहस्य

सरल के लिए रहस्योद्घाटन (मत्ती 11:25-30)

दृष्टान्त उपदेश (मत्ती 13)

पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य और चर्च

भोजन 5000, कनानी स्त्री, पतरस का अंगीकार (मत्ती 14-17) समुदाय का उपदेश (मत्ती 18:15-35)

अधिकार और निमंत्रण: अंतिम फसल पर

अंतिम दृष्टान्त, श्रद्धांजलि, सबसे बड़ी आज्ञा (मत्ती 20-24) अंतिम उपदेश (मत्ती 25)

यीशु के दृष्टान्तों ने लोगों को परेशान किया। वह लगातार चीजों को घुमाता रहा। उदाहरण के लिए गुड सेमेरिटन कहानी ने नफरत करने वाले सामरी की प्रशंसा की (यहूदियों का उनके साथ कोई व्यवहार नहीं था) और सम्मानित धार्मिक नेताओं की निंदा की।

यीशु की कुछ सबसे प्रसिद्ध कहानियाँ उनकी शिक्षाओं के विरोध और सभी के लिए उनकी करुणा, विशेष रूप से पापियों के लिए विकसित हुईं। तीन प्रसिद्ध उदाहरण खोई हुई भेड़, खोया सिक्का, और खोया हुआ पुत्र (उत्तु पुत्र) की कहानियाँ हैं। यीशु ने वे कहानियाँ क्यों सुनाई? ल्यूक हमें बताता है क्यों। यीशु ने देशद्रोही माने जाने वाले तुच्छ कर संग्रहकर्ताओं और वेश्याओं सहित कुख्यात पापियों का स्वागत किया, जो

अक्सर उनके साथ भोजन करते थे। धार्मिक नेताओं और विद्वानों ने इसके लिए यीशु की कड़ी आलोचना की, इसलिए उन्होंने उन कहानियों के साथ प्रतिक्रिया दी।

यीशु ने रोज़मर्रा की ज़िंदगी से लिए गए कई दृष्टांत या रूपक बताए। उदाहरण के लिए, उसने कठोर, पथरीली, कंटीली और अच्छी भूमि पर बोए गए बीज के बारे में बात की। उसने समझाया कि परमेश्वर का वचन कभी-कभी कठोर-हृदय के लोगों, या उथले-दिमाग वाले लोगों, या सांसारिक-बुद्धिमान लोगों, या खुले-हृदय वाले लोगों पर पड़ता था, जिसके अलग-अलग परिणाम होते थे। इसने अच्छे जीवन में अच्छे फल पैदा किए।

सारी रात प्रार्थना करने के बाद, यीशु ने अपने कई अनुयायियों में से बारह शिष्यों को चुना और उन्हें प्रचार करने, बीमारों को चंगा करने और अशुद्ध आत्माओं को बाहर निकालने के लिए नियुक्त किया, जैसा उसने किया था। मत्ती 10:2-4 पर आधारित एक गीत जिसे हम में से बहुतों ने बच्चों के रूप में गाया था, 'शेक्स में लाना' की धुन पर, शिष्यों के नामों को सूचीबद्ध करता है:

यीशु ने उसकी मदद करने के लिए 12 शिष्यों को बुलाया था, शमौन पतरस, अन्द्रियास, याकूब, उसका भाई यूहन्ना, फिलिप्पुस, थोमा, मत्ती, अल्फियस का पुत्र याकूब, थदियस, शमौन, यहूदा और बार्थोलोम्यू।

उसने हमें भी बुलाया है, उसने हमें भी बुलाया है। हम उनके शिष्य हैं। मेरे साथ कोई नहीं है; क्या आप? उसने हमें भी बुलाया है, उसने हमें भी बुलाया है। हम उसके चेले हैं, हमें उसका काम करना चाहिए।

यीशु ने अपने चेलों और अन्य लोगों को प्रचार करने और चंगा करने के लिए भेजा, जिसमें सभी के लिए परमेश्वर का प्रेम और करुणा दिखाया गया। कई महिलाओं ने यीशु और उनकी टीम के साथ यात्रा की और भोजन और कपड़ों के साथ उनका समर्थन किया। उनमें से कुछ अमीर परिवारों से थे।

यूहन्ना बैपटिस्ट ने जेल में अपने दो शिष्यों को यीशु से पूछने के लिए भेजा कि क्या वह वास्तव में मसीहा है, इसलिए यीशु ने संक्षेप में बताया कि उसने अपने मसीहा के प्रमाण के रूप में उपचार और शिक्षण में क्या किया।

यीशु ने लोगों को क्षमा करने और चंगा करने के द्वारा लगातार सभी लोगों के लिए अपना महान प्रेम दिखाया, और बड़ी भीड़ उसके पास जमा हो गई।

जब उस ने भीड़ को देखा तो उस को लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों की नाईं जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे।

मत्ती 9:36

यह जानकर यीशु वहां से चला गया; और बहुत लोग उसके पीछे हो लिये; और उस ने सब को चंगा किया।

मत्ती 12:15

और जहां कहीं वह गांवों, नगरों, या बस्तियों में जाता था, तो लोग बीमारों को बाजारों में रखकर उस से बिनती करते थे, कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छू लेने दे: और जितने उसे छूते थे, सब चंगे हो जाते थे॥

मरकुस 6:56

और सब उसे छूना चाहते थे, क्योंकि उस में से सामर्थ निकलकर सब को चंगा करती थी॥

लूका 6:19

सुसमाचार हमें यीशु के लोगों को चंगा करने, और लोगों को स्वतंत्र करने, और यहाँ तक कि मरे हुएों को जिलाने के कई विवरण देते हैं।

उसने सिखाया और कफरनहूम में अपने आधार से यात्रा की, कई शहरों और गांवों का दौरा किया। उसने सिपाही के अनुरोध पर एक शब्द के साथ एक सेंचुरियन के नौकर को चंगा किया। यीशु ने उसके विश्वास और अधिकार की उसकी समझ के लिए उसकी प्रशंसा की। नैन में उसने एक विधवा के पुत्र को मृत्यु से पाला।

जब उनके चिंतित शिष्यों ने उन्हें नींद से जगाया तो उन्होंने झील पर एक तूफान को शांत कर दिया। झील के उस पार उसने दो राक्षसी पागलों को मुक्त कर दिया। कफरनहूम में फिर से उसने अधिक लोगों को चंगा किया, जिसमें एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को उसकी चटाई पर क्षमा करना और चंगा करना शामिल था, चार दोस्तों द्वारा छत से नीचे उतरना क्योंकि वे भीड़ के माध्यम से नहीं जा सकते थे। धार्मिक नेताओं ने इसे ईशनिंदा बताते हुए पाप क्षमा करने के लिए उनकी आलोचना की। छत की मरम्मत के लिए पूर्व बढ़ई का होना आसान होगा। पास चलते हुए यीशु ने मत्ती को अपने साथ आने के लिए बुलाया।

यीशु ने उस स्त्री को चंगा किया जिसे बारह वर्ष से रक्तस्राव हुआ था और आराधनालय के नेता याईर की 12 वर्षीय बेटी को मृत्यु से जिलाया। जब वह उनके घर से निकला तो दो अन्धे उसके पीछे पीछे दूसरे घर में गए, और उस ने उन्हें चंगा किया, क्योंकि वे विश्वास करते थे। उनके जाने के बाद लोग उसके पास एक गूंगी आत्मा से पीड़ित एक व्यक्ति लाए, जिसे उसने चंगा किया लेकिन धार्मिक नेताओं ने उस पर गुप्त शक्ति का उपयोग करने का आरोप लगाया।

बाद में, यीशु ने एक अंधे और गूंगे व्यक्ति को मुक्त कर दिया, लेकिन फिर से फरीसियों ने उस पर गुप्त शक्ति का उपयोग करने का आरोप लगाया। यीशु ने उन्हें दृढ़ता से चेतावनी दी कि वे इस तरह पवित्र आत्मा पर दोष न लगाएं अन्यथा उन्हें क्षमा नहीं किया जा सकता है। यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि दुष्ट या अशुद्ध आत्माओं को बाहर निकालने से पता चलता है कि परमेश्वर का राज्य उसमें आया था।

यीशु के चारों ओर लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। बहुत से लोग उसे चंगा होने के लिए छूना चाहते थे, और वे थे। चंगाई चाहने वाली विशाल भीड़ के कारण कभी-कभी यीशु और उसके शिष्यों के पास खाने का समय नहीं होता था। कभी-कभी यीशु समय के लिए, अकेले समय के लिए फिसल जाते थे। यीशु अक्सर भोर से पहले अकेले प्रार्थना करने के लिए उठते थे और कभी-कभी पूरी रात अपने पिता के साथ घनिष्ठ संगति में प्रार्थना करते हुए बिताते थे।

यूहन्ना ने अपने सुसमाचार को सात शक्तिशाली चिन्हों के आसपास लिखा जो यीशु के सच्चे स्वभाव और महिमा को प्रदर्शित करते थे। यूहन्ना ने यीशु की शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित किया, जो उसकी शक्ति और अधिकार के इन चिन्हों के इर्दगिर्द निर्मित थी।

पहले फसह के आसपास:

1. पानी को दाखरस में बदलना (2:1-12)
2. रईस के बेटे को चंगा करना (4:46-54)
3. बेथेस्डा में आदमी को चंगा करना (5:1-47)

दूसरे फसह के आसपास:

4. 5000 को खाना खिलाना (6:1-4)
5. पानी पर चलना (6:15-21)
6. अंधे को चंगा करना (9:1-41) तीसरे फसह के आसपास:
7. लाजर का जी उठना (11:1-57) मसीह का पुनरुत्थान (2:18-22; 20;21)

यूहन्ना का सुसमाचार इन घटनाओं को संकेत कहता है, और दिखाता है कि कैसे यीशु ने समझाया कि उसके चिन्ह परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसकी दिव्यता और अधिकार की ओर इशारा करते हैं।

यूहन्ना हमें यीशु के 'मैं हूँ' कथन भी देता है। उनकी ग्रीक पांडुलिपि में बहुत जोर दिया गया था, अहंकार ईमी - मैं अकेला हूँ, या मैं स्वयं हूँ। यीशु की ये बातें अद्वितीय और चुनौतीपूर्ण दावे हैं। वे तस्वीरें या रूपक कई लोगों को परेशान करते हैं।

1. जीवन की रोट्टी मैं हूँ ... और जो कोई मेरे पास आता है मैं उसे कभी नहीं भगाऊंगा (यूहन्ना 6:35, दूसरे फसह के ठीक पहले, अप्रैल)।

2. मैं जगत का प्रकाश हूँ। जो कोई मेरे पीछे हो लेगा, वह कभी अन्धकार में नहीं चलेगा, परन्तु उसके पास जीवन की ज्योति होगी (यूहन्ना 8:12, झोपड़ियों के पर्व, अक्टूबर में)।

3. मैं भेड़ के लिए द्वार / द्वार हूँ ... मैं द्वार / द्वार हूँ। जो कोई मेरे द्वारा प्रवेश करेगा, वह उद्धार पाएगा, और भीतर आकर बाहर जाएगा, और समर्पण के पर्व, दिसंबर में यूहन्ना 10:7, 9 में चरागाह पाएगा।)

4. मैं अच्छा चरवाहा हूँ। अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना जीवन देता है (यूहन्ना 10:11, समर्पण के पर्व पर, दिसंबर)।

5. पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ। जो मुझ पर विश्वास करते हैं, भले ही वे मर जाएं, जीवित रहेंगे, और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा। क्या आप इस पर विश्वास करते हैं? (यूहन्ना 11:25-26, अंतिम फसह से पहले बेथानी में)।

6. मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ। कोई मेरे द्वारा यूहन्ना 14:6, अन्तिम भोज के समय पिता के पास नहीं आता।)

7. सच्ची दाखलता मैं ही हूँ, और दाखलता पिता मेरा है।... मैं दाखलता हूँ, तुम शाखाएँ हो। जो मुझ में बने रहते हैं, और मैं उन में बहुत फल लाते हैं, क्योंकि मेरे सिवा तुम कुछ नहीं कर सकते (यूहन्ना 15:1, 5, अन्तिम भोज के समय)।

जब यीशु झोपड़ियों के पर्व पर यरूशलेम में विद्वानों से भिड़ गया तो उसने घोषणा की "इब्राहीम से पहले, मैं हूँ" (यूहन्ना 8:58)। इससे वे इतने क्रोधित हो गए कि उन्होंने उस पर फेंकने के लिए पत्थर उठाए लेकिन वह उनसे दूर खिसक गया।

4. दूसरा से तीसरा फसह

Second to Third Passovers

गलील में अंतिम सेवकाई

Final Ministry in Galilee

अंतिम गैलीलियन मंत्रालय जॉन बैपटिस्ट के सिर काटने के बाद शुरू हुआ।

हेरोदेस महान की मृत्यु के बाद, सम्राट ऑगस्टस ने हेरोदेस के राज्य को उसके तीन पुत्रों में विभाजित कर दिया। अरखिलौस ने सामरिया, यहूदिया पर शासन किया और इडुमिया लगभग नौ वर्षों तक रहा जब तक कि सम्राट ऑगस्टस ने उन्हें रोम के राज्यपालों के साथ बदल दिया, जिसमें प्रोक्पूरेटर पॉन्टस पिलाट भी शामिल था, जिन्होंने 26-36 ईस्वी के दौरान यहूद के बड़े हुए प्रांत पर शासन किया था। हेरोदेस एंटीपास गलील और पेरिया के चतुर्भुज बन गए और यीशु के मंत्रालय के दौरान शासन किया। फिलिप, जॉर्डन नदी के उत्तर और पूर्व के प्रदेशों के टेट्रार्क, को उसकी पत्नी हेरोडियास ने तलाक दे दिया था, जिसने तब एंटीपास से शादी की थी।

जॉन द बैपटिस्ट ने सार्वजनिक रूप से एंटीपास को फटकार लगाई, जिन्होंने विरोध या विद्रोह के किसी भी संकेत के खिलाफ जल्दी और क्रूरता से काम किया। वह कैद और बाद में जॉन का सिर काट दिया, हालांकि वह उसका सम्मान करता था और उससे डरता था। अपने जन्मदिन के लिए एक राजकीय भोज में उनकी बेटी के नृत्य ने एंटीपास को इतना प्रसन्न किया कि उसने सार्वजनिक रूप से उसे वह पेशकश की जो वह चाहती थी, और अपनी माँ के निर्देश पर उसने जॉन का सिर मांगा। एंटीपास ने अपनी सार्वजनिक प्रतिज्ञा के कारण खेदपूर्वक पालन किया।

जब यीशु ने यूहन्ना की मृत्यु के बारे में सुना तो वह झील के उत्तर में बेथसैदा के पास एकांत स्थान पर एकांत में चला गया। यह एक समय था जब उन्होंने अपने 70 अनुयायियों को मिशन पर जोड़े में उन स्थानों पर भेजा था जहां वे जा रहे थे और उन्होंने लोगों के ठीक होने और मुक्त होने की सूचना दी। फसह के निकट होने के कारण बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी, और भीड़ गलील से यरदन घाटी के पास की यात्रा के लिए इकट्ठी हो गई थी।

जेरूसलम। भीड़ ने गलील के उत्तरी तट के आसपास यीशु और उसके शिष्यों के साथ नाव का पीछा किया। यीशु ने उन पर दया की, बीमारों को चंगा किया, उन्हें सिखाया और एक लड़के के दोपहर के भोजन से 5,000 से अधिक की भीड़ को खिलाया, पहला दो बार उसने चमत्कारिक ढंग से भीड़ को भोजन कराया। वे उसे वहीं अपना राजा बनाना चाहते थे।

उसने चेलों को उनकी नाव पर विदा किया और अकेले प्रार्थना करने के लिए पहाड़ियों पर गए। उस रात वह उनके पास लौट आया, और पानी पर चल रहा था, जैसा कि पतरस ने यीशु की ओर देखा था। जब वह डूबा तो यीशु ने उसे पकड़ लिया। जब वे एक साथ नाव पर चढ़े, तो हवा थम गई और वे सभी तुरंत किनारे पर थे। चकित शिष्यों ने यह घोषणा करते हुए उसकी पूजा की, "वास्तव में आप परमेश्वर के पुत्र हैं।"

बाद में, यीशु ने उत्तर की ओर सूर और भूमध्य सागर में सीदोन की यात्रा की, जहाँ उसने कनानी की बेटी को चंगा किया, भले ही वह इस्राएल के लिए उसके मिशन से परे था। यीशु फिर गलील झील लौट आया। तीन दिनों के उपचार और शिक्षण के बाद, उसने चमत्कारिक रूप से एक भोजन से 4,000 से अधिक लोगों को भोजन कराया। वह दिकापोलिस, गलील के दक्षिण पूर्व के दस नगरों, चंगाई और शिक्षा के लिए चला गया।

भीड़, और यहाँ तक कि यीशु के शिष्यों ने, उनसे उनके विजयी राजा होने की अपेक्षा की, एक ऐसा विजेता जो उन्हें रोमन शासन से मुक्त करेगा और इस्राएल में अपना राज्य स्थापित करेगा (यूहन्ना 6:15; प्रेरितों के काम 1:6)। परन्तु उसका चिरस्थायी राज्य उनके विचारों से भिन्न था।

रोम के साम्राज्य के अत्याचार, और अधीन लोगों पर लगाए गए भारी करों ने कई यहूदियों में आक्रोश और क्रोध को भड़का दिया। वे चाहते थे कि उनका वादा किया गया मसीहा उन्हें आज़ाद करे, और भीड़ ने यीशु में एक नए, शक्तिशाली, स्वतंत्र और न्यायपूर्ण राज्य के लिए एक बड़ी आशा देखी।

यीशु ने इस बात पर बल दिया कि परमेश्वर के पुत्र और हमारे उद्धारकर्ता के रूप में अपने आप में विश्वास के द्वारा परमेश्वर का अनन्त राज्य हमारे दिलों में था।

यीशु ने तीन बार अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की

Jesus prophesied his death three times

यीशु ने अपने शिष्यों को अपनी निकट आने वाली मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में तीन बार बताया, लेकिन वे नहीं समझे। भ्रमित और व्यथित वे उससे इसके बारे में पूछने से डरते थे:

सबसे पहले, कैसरिया फिलिप्पी में (मत्ती 16:21-28; मरकुस 8:31-38; लूका 9:21-27)। दूसरा, गलील में (मत्ती 17:22-23; मरकुस 9:30-32; लूका 9:43-45)। तीसरा, यरूशलेम के निकट (मत्ती 20:17-19; मरकुस 10:32-34; लूका 18:31-34)।

(1) यीशु की गलीली सेवकाई शिष्यों को भीड़ से दूर गलील झील के उत्तर की पहाड़ियों में ले जाने में समाप्त हुई। कैसरिया फिलिप्पी में, माउंट हेमोन की ओर, यीशु ने उन्हें अपनी आसन्न मृत्यु के बारे में बताया। प्रार्थना करने के बाद, यीशु ने अपने शिष्यों से पूछा कि लोग उसे कौन समझते हैं। जॉन द बैपटिस्ट को मृतकों से एलियाह या किसी अन्य भविष्यवक्ता को जीवित करने के लिए लोकप्रिय राय उनके द्वारा दी गई थी। जब यीशु ने उनसे पूछा कि वे क्या सोचते हैं, पतरस, उनके स्वाभाविक नेता, ने घोषणा की कि यीशु वास्तव में मसीहा, मसीह, परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त मसीहा राजा था, जिससे पूरा राष्ट्र आने और अपने अनन्त राज्य की स्थापना करने की अपेक्षा करता था।

यीशु ने पतरस को याद दिलाया कि परमेश्वर ने उसे उस पर प्रकट किया था। तब यीशु ने उनसे कहा कि वह फिर से यरूशलेम जाएगा और गिरफ्तार किया जाएगा, यातना दी जाएगी और मार डाला जाएगा। पतरस ने उस विचार का कड़ा विरोध किया, और अपने प्यारे प्रभु से कड़ी फटकार लगाई।

छह दिन बाद यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ पहाड़ों पर चढ़ गया और उसका रूपान्तर हो गया, वह स्वर्गीय महिमा में चमक रहा था। उसने मूसा और एलियाह के साथ पृथ्वी से अपने प्रस्थान के बारे में बात की।

मूसा और एलियाह दोनों ने असामान्य तरीके से पृथ्वी को छोड़ दिया था। मूसा ने चालीस वर्ष तक इस्राएलियों का नेतृत्व करने के बाद, यरदन घाटी के दक्षिण-पूर्व में नबो के पहाड़ों से प्रतिज्ञा की भूमि को देखा। भगवान ने उससे बात की जैसे एक आदमी अपने करीबी दोस्त के साथ बात करता है। मूसा ने अपना नेतृत्व यहोशू को सौंप दिया, जो इस्राएलियों को उनके वादा किए हुए देश में ले गया। मूसा और परमेश्वर के साथ अकेला चला गया, जिसने उसके शरीर को दफनाया। मूसा, उस पर्वत पर रूपान्तरण के समय, वादा किए गए देश में था, अपनी बुलाहट की पूर्ति और आने वाले एक महान भविष्यवक्ता के बारे में उसकी भविष्यवाणी को देखकर, जो अब परमेश्वर के पुत्र यीशु में पूरी हुई है।

एलियाह को एक बवंडर द्वारा स्वर्ग में ले जाया गया था जब घोड़ों और आग के रथ ने उसे उसके शिष्य एलीशा से अलग कर दिया था, जो तब चिन्हों और चमत्कारों के उस अभिषिक्त और शक्तिशाली मंत्रालय

में जारी रहा था। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला एलिय्याह की आत्मा में आया था, और अब एलिय्याह वहाँ यीशु के साथ बात कर रहा था कि कैसे यीशु अपनी प्रायश्चित मृत्यु के द्वारा अपने मसीहाई मिशन को पूरा करेगा। कई विद्वान उस मुठभेड़ की व्याख्या मूसा और एलिय्याह के रूप में करते हैं जो कानून और भविष्यद्वक्ताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी यीशु में पूरे हुए थे।

पतरस, याकूब और यूहन्ना ने रूपान्तरण को देखा जहाँ मूसा और एलिय्याह ने यीशु के साथ उसके आने के बारे में बात की और परमेश्वर ने महिमा के बादल से कहा: यह मेरा पुत्र है, मेरा प्रिय, जिससे मैं प्रेम करता हूँ; उसे सुनो। (मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:2-8; लूका 9:28-36; 2 पतरस 1:16-18) देखें।

ट्रांसफ़िगरेशन, एक महत्वपूर्ण घटना जिसे सुसमाचार के मध्य में बताया गया था, यीशु की यरूशलेम की अंतिम यात्रा और उसकी मृत्यु की शुरुआत का प्रतीक है। (मत्ती 16:21; cf. मार्क 8:31-32; लूका 9:21-22)

(2) रूपान्तरण के बाद जब वे दक्षिण की यात्रा कर रहे थे, यीशु ने फिर से अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की। “वे वहाँ से चले और गलील से होते हुए चले। और वह नहीं चाहता था कि किसी को पता चले, क्योंकि वह अपने शिष्यों को यह कहते हुए सिखा रहा था, ‘मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे। और जब वह मारा जाएगा, तो तीन दिन के बाद जी उठेगा।’ परन्तु वे उस वचन को न समझे, और उस से पूछने से डरते थे।” (मरकुस 9:30-32)

मत्ती कहता है कि चेले बहुत व्यथित थे। लूका आगे कहता है कि उसके चेले समझ नहीं पाए, और अर्थ उन से छिपा हुआ था। (मत्ती 17:22-23; लूका 9:43-45)

(3) अंत में, जब वे यरूशलेम के पास पहुँचे, तो यीशु ने अपने शिष्यों को बताया कि वहाँ उसके साथ क्या होगा।

और जब यीशु यरूशलेम को जा रहा था, तो बारह चेलों को एक तरफ ले गया, और रास्ते में उनसे कहा, ‘देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं। और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालने की आज्ञा देंगे, और अन्यजातियों के हाथ में कर देंगे, कि वे ठठों में उड़ाए जाएं, कोड़े मारे जाएं, और कूस पर चढ़ाएं, और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा।’ (मत्ती 20:17-19; मरकुस 10:32-34; लूका 18:31-34)

यीशु ने न केवल अपनी मानवता को दिखाने के लिए स्वयं को मनुष्य के पुत्र के रूप में संदर्भित किया, बल्कि यह दानियेल की पुस्तक से एक मसीहाई शीर्षक भी था। वहाँ, मनुष्य के पुत्र के समान एक को प्रभुत्व और महिमा और एक राज्य दिया जाता है जो नष्ट नहीं होगा।

यहूदिया में अंतिम सेवा

Later Ministry in Judea

अपनी लंबी अंतिम यात्रा के दौरान दक्षिण यीशु ने अपने 70 अनुयायियों को परमेश्वर के राज्य के बारे में बताने, बीमारों को चंगा करने और अशुद्ध आत्माओं को बाहर निकालने के लिए अपने आगे जोड़े में जाने के लिए नियुक्त किया। उन्होंने अपनी सेवकाई में परमेश्वर की शक्ति का अनुभव किया जैसे यीशु ने अपने में किया था।

जैसे-जैसे भीड़ और विरोध बढ़ता गया, यीशु ने यरूशलेम में दो और दावतों में भाग लिया, सितंबर/अक्टूबर में झोपड़ियों का पर्व, और दिसंबर में समर्पण का पर्व।

(1) सितंबर/अक्टूबर के आसपास झोपड़ियों का पर्व या बूथों का पर्व (सुक्कोट) का सात दिवसीय पर्व गर्मियों की फसल के अंत का जश्न मनाता है और साथ ही जब वे मिस्र से पलायन के दौरान बूथों में रहते थे तो अपने लोगों के लिए भगवान की देखभाल भी करते थे। जब यीशु के भाई उस दावत के लिए जा रहे थे, तो उन्होंने यीशु को यहूदिया में सार्वजनिक रूप से जाने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि उसने अपना अधिकांश समय यरूशलेम में धार्मिक जीवन और अधिकार के केंद्र से दूर गलील में बिताया था। उस समय उसके भाई पूरी तरह से विश्वास नहीं करते थे कि वह वास्तव में वादा किया गया मसीहा है। बाद में, उसके पुनरुत्थान के बाद उन्होंने विश्वास किया और कलीसिया में अगुवे बन गए। उनमें से दो ने याकूब और यहूदा के संक्षिप्त पत्र लिखे।

यीशु देर से और चुपके से झोपड़ियों के उस पर्व में गया। कुछ नेता चाहते थे कि उन्हें गिरफ्तार कर फांसी दी जाए। दावत के दौरान उन्होंने उसे गिरफ्तार करने के लिए मंदिर के पहरेदारों को भेजा लेकिन पहरेदारों ने उसे चकित कर दिया और कुछ भी नहीं किया।

उस त्योहार सप्ताह के प्रत्येक दोपहर को याजकों ने मंदिर की वेदी पर पानी और शराब का एक दान डाला, और दावत के आखिरी और सबसे बड़े दिन के दौरान (संभवतः जब पानी डाला जा रहा था) यीशु ने

साहसपूर्वक घोषणा की, "यदि कोई प्यासा है वे मेरे पास आकर पीए। विश्वासियों के जीवन में आत्मा काम करेगी।

यीशु के बारे में बहस गरमा गई। कुछ लोगों ने सोचा कि वह वह भविष्यद्वक्ता है जिसकी भविष्यवाणी मूसा ने की थी। दूसरों का मानना था कि वह वादा किया गया मसीहा था। मंदिर के पहरेदार, यीशु को गिरफ्तार करने के लिए भेजे गए, यह कहते हुए उसके बिना लौट आए कि कोई भी उसके जैसा नहीं बोला। फरीसियों ने पहरेदारों पर यीशु द्वारा मूर्ख बनाए जाने का आरोप लगाया। हालाँकि, नीकुदेमुस ने यीशु के सुने जाने के अधिकार का बचाव किया। उन्होंने उसके साथ यह घोषणा करते हुए बहस की कि पवित्रशास्त्र में गलील से कोई नबी नहीं आएगा। स्पष्ट रूप से उन्होंने अपना गृहकार्य नहीं किया था या ध्यान से यीशु के जन्मस्थान की खोजबीन नहीं की थी।

यूहन्ना का सुसमाचार बताता है कि कैसे अगले दिन जब यीशु ने मंदिर में शिक्षा दी तो फरीसियों और कानून के शिक्षकों ने व्यभिचार में पकड़ी गई एक महिला को लाया। वे यीशु को यह याद दिलाते हुए फँसाना चाहते थे कि उनका कानून कहता है कि उसे पत्थरवाह किया जाना चाहिए। यीशु ने उन्हें अपने स्वयं के पाप की याद दिलाते हुए कहा कि जो बिना पाप के हैं वे पहला पत्थर फेंक सकते हैं, एक कथन जिसे अक्सर अब अनुकूलित किया जाता है जैसे कि कांच के घरों में रहने वालों को पत्थर नहीं फेंकना चाहिए। तब यीशु ने धूल में लिखा। मुझे आश्चर्य है कि उसने क्या लिखा! मेरा अनुमान है कि उसने उनके पापों की पहचान करते हुए पवित्रशास्त्र लिखा था। उन्होंने अपने पत्थर गिराए और चले गए, सबसे बड़े से शुरुआत करते हुए जो शायद सबसे लंबे समय तक असफल रहे थे। यीशु ने परमेश्वर का अपार प्रेम दिखाया, और तब से कहा कि उसने उसकी निंदा नहीं की। उसने उसे पाप करना बंद करने के लिए भी कहा, जो वह लगातार सभी को बताता था।

यीशु ने एक भिखारी को जन्म से अंधा देखा, सो उसने भूमि पर थूका, मिट्टी बनाई और उस मनुष्य की आंखों पर लगा दिया। उसने उसे धोने के लिए शीलोह के कुण्ड में भेज दिया। यह सब के दिन था और फरीसी चंगाई के बारे में क्रोधित थे। उन्होंने उस व्यक्ति और उसके माता-पिता से गर्मजोशी से पूछताछ की। वह आदमी यीशु में विश्वास करता था इसलिए धार्मिक नेताओं द्वारा बहिष्कृत कर दिया गया था।

(2) दिसंबर में समर्पण का शीतकालीन पर्व (जिसे अब हनुका कहा जाता है) ने 165 ईसा पूर्व में सेल्यूसिड-यूनानियों पर मैकाबीन की जीत का जश्न मनाया, जब जैतून के तेल को आठ दिनों तक चमत्कारिक रूप से

साफ किए गए मंदिर में जला दिया गया, जब तक कि और अधिक बनाया जा सके। दावत समारोह में अभी भी पश्चिमी दीवार प्लाजा में एक बड़े मेनोरा पर आठ दीपक (प्रत्येक दिन एक) जलाना शामिल है।

यहूदी नेताओं ने उस दावत में यीशु को स्पष्ट रूप से घोषित करने के लिए चुनौती दी कि क्या वह वास्तव में मसीहा, अभिषिक्त व्यक्ति था। यीशु ने उन्हें फिर से याद दिलाया कि उसने अपने पिता के नाम पर जो चमत्कार किए, उससे पता चला कि वह परमेश्वर के पुत्र के रूप में कौन था। इससे वे क्रोधित हो उठे और उन्होंने ईशनिंदा के कारण उसे पत्थरवाह करने के लिए पत्थर उठाए। वह उनसे दूर हो गया।

यीशु यरदन नदी में लौट आया, जहाँ यहूजा बपतिस्मा दे रहा था, और वहाँ जनवरी और फरवरी तक रहा। उसे सुनने के लिए बड़ी भीड़ आई और उस पर विश्वास किया।

बाद में, यीशु ने दक्षिणी यरदन नदी के किनारे यरीहो की यात्रा की, जहाँ उसने अंधे बरतिमाई सहित कई लोगों को चंगा किया, और उसने तुच्छ चुंगी लेनेवाले जक्कई के साथ भोजन किया। जैसे-जैसे वह यरूशलेम की ओर बढ़ता गया, भीड़ बढ़ती गई। यीशु के पीछे चलनेवाली भीड़ को उम्मीद थी कि परमेश्वर का राज्य तुरंत उसके द्वारा आएगा। हुआ, लेकिन वैसा नहीं जैसा उन्होंने उम्मीद की थी।

जब वे यरूशलेम के ठीक पूर्व में जैतून के पहाड़ के दक्षिणी ढलान पर बेथानी पहुँचे, तो यीशु ने लाजर को मृत्यु से जिलाया, और उसके और उसकी बहनों मर्या और मरियम के साथ रहा। यीशु और लाजर दोनों को देखने के लिए जिज्ञासु, प्यार करने वाली भीड़ बढ़ती रही। वहाँ से यीशु अपने अंतिम सप्ताह के दौरान यरूशलेम में मील चला, और अक्सर रात में बेथानी लौटता था।

यीशु के लाजर को मरे हुआओं में से जिलाने की खबर जंगल की आग की तरह फैल गई। इसने विरोधी यहूदी नेताओं को क्रुद्ध कर दिया जो तब यीशु और लाजर दोनों को मरना चाहते थे।

वे फसह के पर्व के दौरान यीशु को मारना नहीं चाहते थे क्योंकि उन्हें लगा कि इससे लोगों में दंगा होगा क्योंकि यीशु बहुत लोकप्रिय थे और बहुत से लोग आश्वस्त थे कि वह उनका मसीहा है। हालाँकि, यीशु ने अपने आप को उन्हें देने के लिए चुना था जिस दिन फसह के मेमनों को मार दिया गया था।

5. फसह का पर्व पिनतेकुस्त तक

Passover to Pentecost

पवित्र सप्ताह या जुनून सप्ताह के रूप में जाना जाने वाला सप्ताह, प्रत्येक सुसमाचार का एक तिहाई भरता है। इसमें पाम संडे को यरूशलेम में यीशु का विजयी प्रवेश, मंदिर की सफाई, यहूदी नेताओं के साथ वाद-विवाद और संघर्ष, बेथानी में भोजन, द लास्ट सपर, गेथसमेन में पीड़ादायक प्रार्थना, धार्मिक और राजनीतिक नेताओं द्वारा उनकी पांच परीक्षाएं, उनका कोड़े लगाना, सूली पर चढ़ाना, दफनाना और फिर उसका विजयी पुनरुत्थान जिसे हम ईस्टर संडे कहते हैं।

मैं अपनी पुस्तकों कूसीफाइंड एंड राइजेन और द लायन ऑफ जूडाह में उस सप्ताह के अधिक विस्तृत बाइबिल विवरण देता हूँ, जिसमें नवीनीकरणजर्नल डॉट कॉम पर मुफ्त पीडीएफ है।

हालाँकि यीशु ने पवित्र सप्ताह में कई महत्वपूर्ण शास्त्रों को पूरा किया, यहूदी विद्वान इसे नहीं देख सके, और यहाँ तक कि उनके अनुयायियों ने भी इसे तब तक नहीं समझा जब तक कि उन्होंने अपने पुनरुत्थान के बाद इसे समझाया नहीं।

इसलिए इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण सप्ताह एक और सप्ताह के रूप में सामने आया, जिसमें वार्षिक फसह का उत्सव शामिल था, जिसमें भारी भीड़ यरूशलेम में भर गई थी। भीड़-भाड़ वाले शहर और यरूशलेम के आस-पास के क्षेत्रों में वह अंतिम नाटकीय सप्ताह, धार्मिक नेताओं और विद्वानों के साथ खुले संघर्ष में फूट पड़ा। उन्होंने शोरगुल वाली भीड़ को उसकी स्तुति करने की अनुमति देने के लिए यीशु की आलोचना की।

उत्साहित भीड़ चिल्लाई, "होसन्ना," जिसका अर्थ है, "भगवान हमें बचाओ।" वे एक मसीहा के लिए तरस रहे थे जो उन्हें रोम से मुक्त करेगा। मंदिर के उत्तर की ओर एंटोनिया किले में रोमन चौकी किसी भी अशांति या विद्रोह के लिए विशेष रूप से भीड़भाड़ वाले दावत के दिनों में हाई अलर्ट पर रही।

बहुत बड़ी भीड़ ने अपना लबादा सड़क पर फैला दिया, और दूसरों ने पेड़ों से डालियाँ काट कर सड़क पर फैला दीं। 'जो भीड़ उसके आगे-आगे जाती थी और उसके पीछे-पीछे जाती थी, वह चिल्लाती थी, 'दाऊद के पुत्र को होशाना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है! उच्चतम स्वर्ग में होसन्ना!'

जब वह यरूशलेम में आया, तो सारे नगर में कोलाहल मच गया, और पूछा, यह कौन है? भीड़ कह रही थी, 'यह भविष्यद्वक्ता यीशु है

गलील में नासरत।' (मत्ती 21:8-11; देखें मरकुस 11:1-10; लूका 19:28-40; यूहन्ना 12:12-19)

यीशु एक गधे पर सवार होकर जैतून के पहाड़ की ढलान पर, किद्रोन नदी के पार और राजधानी के पूर्वी हिस्से के मंदिर क्षेत्र में सवार हुए। उसने जकर्याह 9:9 (मत्ती 21:5) से एक प्रसिद्ध भविष्यवाणी को पूरा किया:

हे सिव्योन बहुत ही मगन हो। हे यरूशलेम जयजयकार कर! क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है, और गदहे पर वरन गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा।

यीशु रोया जब सब आनन्दित थे:

जब वह निकट आया तो नगर को देखकर उस पर रोया। और कहा, क्या ही भला होता, कि तू; हां, तू ही, इसी दिन में कुशल की बातें जानता, परन्तु अब वे तेरी आंखों से छिप गई हैं। क्योंकि वे दिन तुझ पर आएंगे कि तेरे बैरी मोर्चा बान्धकर तुझे घेर लेंगे, और चारों ओर से तुझे दबाएं। और तुझे और तेरे बालकों को जो तुझ में हैं, मिट्टी में मिलाएं, और तुझ में पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ेंगे; क्योंकि तू ने वह अवसर जब तुझ पर कृपा दृष्टि की गई न पहिचाना।

लूका 19:41-44

यीशु ने अपने कयामत को करीब आते देखा। लगभग 40 साल बाद ईस्वी सन् में 70 रोमन सेनाओं ने शहर को बर्खास्त कर दिया, इसकी इमारतों को नष्ट कर दिया और इसके लोगों को मार डाला।

उस सप्ताह की शुरुआत में धार्मिक नेताओं के साथ तनाव बढ़ गया और विस्फोट हो गया क्योंकि उत्साहित भीड़ ने यीशु को पढ़ाते सुना, और उसने अंधों और अपंगों को चंगा किया।

यीशु ने बेईमान व्यापारियों के मंदिर के दरबार को साफ करके मंदिर के अधिकारियों के साथ तुरंत संघर्ष किया, जिन्होंने बलि के जानवरों की जरूरत वाले फसल की भीड़ से मंदिर के लिए भारी आय जुटाई।

उस सप्ताह की शुरुआत में प्रत्येक दिन, यीशु ने मंदिर क्षेत्र में उपदेश दिया, लगातार धार्मिक पदानुक्रम के साथ संघर्ष किया जिसने उसे फंसाने की कोशिश की जैसे कि उससे रोम को कर देने के बारे में पूछना। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के शाश्वत मूल्यों की घोषणा करने का तर्क उठाया।

फरीसियों ने पवित्रशास्त्र के आधार पर सैकड़ों नियमों और परंपराओं का पालन किया लेकिन यीशु ने परमेश्वर से प्रेम करने और दूसरों से प्रेम करने के लिए आज्ञाओं को दो भागों में समेट दिया। सदृकियों ने राजनीतिक पक्ष लिया और मृत्यु, स्वर्गदूतों और राक्षसों के बाद जीवन से इनकार किया, लेकिन यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि ईश्वर जीवितों का ईश्वर है, जिसमें उनके पूर्वजों की मृत्यु भी शामिल है।

यीशु ने धार्मिक विद्वानों को भ्रमित किया, उनकी मान्यताओं में खामियां दिखाते हुए कहा कि उनके शास्त्रों ने उनके बारे में बात की थी लेकिन वे इसे नहीं देख पाए। उदाहरण के लिए, बिल्डरों द्वारा खारिज कर दिया गया पत्थर, सबसे महत्वपूर्ण पत्थर, सबसे महत्वपूर्ण पत्थर बन गया।

यीशु ने एक दाख की बारी के मालिक की कहानी सुनाई जिसने अपने नौकरों और फिर अपने इकलौते बेटे को उसका हक दिलाने के लिए भेजा, लेकिन किरायेदारों ने उनके साथ दुर्व्यवहार किया और उनके बेटे सहित कई को मार डाला। मालिक उन्हें कड़ी से कड़ी सजा देगा। धार्मिक नेताओं ने महसूस किया कि कहानी उनके लिए पूरी तरह से लक्षित थी।

उस हफ्ते की शुरुआत में हर रात यीशु और उसके सबसे करीबी चेले मीलों पैदल चलकर बेथानी पहुंचे और वहां दोस्तों के साथ खाना खाया। उन भेंटों में एक भोजन भी शामिल था जहाँ लाजर की बहन मरियम ने उसके ऊपर बहुत महंगा सुगन्धित तेल उंडेल दिया। कुछ शिष्यों ने उसकी अधिकता की आलोचना की लेकिन यीशु ने उसके भव्य प्रेम के लिए उसकी प्रशंसा की, जिसे दुनिया भर में बताया जाएगा (जैसा कि पवित्रशास्त्र और यहां भी) और उसने अपने शरीर को दफनाने के लिए तैयार किया था। वह सुगंध उसके शरीर पर कई दिनों तक रहेगी।

शासकों के प्रसन्न आश्चर्य के लिए, यीशु के अनुयायियों में से एक ने चुपके से भीड़ से दूर, चुपचाप यीशु को धोखा देने के लिए सहमति व्यक्त की। शासक फसह की दावत के दौरान दंगों से बचने के लिए यीशु को मारना नहीं चाहते थे, लेकिन ठीक यही वह समय था जब यीशु ने फसह के मेमने मारे जाने पर खुद को उन्हें दे दिया था। यहूदियों के लिए वह दिन सूर्यास्त से अगले सूर्यास्त तक शुरू हुआ जब यीशु का घायल, वध शरीर पास में एक नए मकबरे में पड़ा होगा।

उनकी गिरफ्तारी, यातना और फांसी से पहले बड़ी भीड़ ने उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया था। लेकिन कुछ दिनों बाद उसकी मौत हो गई।

जब मैंने इस पर विचार किया तो मुझे एहसास हुआ कि यह अभी भी होता है। लाखों लोग उस पर भरोसा करते हैं, उस पर विश्वास करते हैं, और उसका अनुसरण करते हैं, लेकिन दूसरे उसे और उसके वचन को अस्वीकार करते हैं। कई सरकारी अधिकारियों ने उनके और उनके शिक्षण, कैद और उनके अनुयायियों की हत्या का विरोध किया। विभिन्न धर्मों के कई पैरोकार उनके अनुयायियों को मारते हैं। कई मीडिया आउटलेट उनके शिक्षण और अधिकार पर हमला करते हैं और उन्हें उद्धृत करने वालों की निंदा करते हैं। कई ईसाई अन्य ईसाइयों की आलोचना करते हैं और उन पर हमला करते हैं जो उनसे भिन्न हैं।

अच्छाई बुराई का सामना करती है। मैंने महसूस किया कि यीशु हम सभी का सामना करते हैं और चुनौती देते हैं क्योंकि हम सभी उनके मानकों और आवश्यकताओं से कम हैं। हमें अपनी असफलता को देखना चाहिए और क्षमा और जीवन के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। वह अनन्त जीवन देता है।

इसलिए उन्होंने हम सभी के लिए अपने महान प्रेम के कारण हमारे लिए मरना चुना। उन्होंने हमारी जगह ले ली। उसने हमारे अपराध और पाप को अपने ऊपर ले लिया और हमारे स्थान पर मर गया। फिर वह मृत्यु पर विजयी हुआ और उन सभी को अनन्त जीवन प्रदान करता है जो उस पर भरोसा करते हैं।

महायाजक और शासक महासभा के मुख्य पुजारी इस खतरनाक, कट्टरपंथी युवक को मारने के लिए दृढ़ थे। उनकी लोकप्रियता से ईर्ष्या और इस खतरे से प्रेरित होकर कि उनकी लोकप्रियता संभावित विद्रोह और गंभीर रोमन प्रतिशोध का कारण बन सकती है, धार्मिक नेता उन्हें मरना चाहते थे और इस खतरे को हटा दिया गया था।

आखिरकार उन्होंने उसे मार डाला। लेकिन यीशु ने अपने आप को उन्हें दे दिया, यह जानते हुए कि जब फसह के मेमनों को मार दिया जाएगा, तब उन्हें सार्वजनिक रूप से सूली पर चढ़ाया जाएगा। हालाँकि धार्मिक नेता यीशु को दावत के दौरान मारना नहीं चाहते थे और पीलातुस यीशु को बिल्कुल भी नहीं मारना चाहता था, यीशु ने तैयारी के दिन दावत के दौरान मरने का फैसला किया, जब विशेष फसह के सब्ब से एक दिन पहले बलि के पास्कल मेमे मारे गए थे। वह स्वयं परमेश्वर का अनन्त मेम्रा है जो हमारे पापों को हर लेता है।

यीशु ने उसी यहूदी दिन फसह, अंतिम भोज खाया, जिस दिन उनकी मृत्यु हुई थी। उसने अपने सबसे करीबी शिष्यों के साथ फसह का भोजन किया, यह जानते हुए कि अगली दोपहर उनकी मृत्यु से पहले यह उनके

साथ उनका अंतिम भोजन होगा। वह फसह के अर्थ को परमेश्वर के निर्दोष मेमने के रूप में पूरा करेगा, जो हम सभी के लिए मारा गया था।

उन्होंने उस भोजन को नया अर्थ दिया। हम इसे अंतिम भोजन कहते हैं। उसने उनसे कहा कि रोटी उसका शरीर है और शराब उसका खून है। उन्होंने इसके अर्थ और महत्व को पूरा किया। वह अपना संपूर्ण शरीर हम सभी के लिए बलिदान के रूप में दे रहे थे। उसने उनसे कहा कि हर बार जब वे ऐसा करें तो उन्हें याद करें। इसमें वह शामिल है जिसे हम अब भोजन या यूचरिस्ट (धन्यवाद) कहते हैं और हमारे घरों में एक साथ खाने और पीने का हिस्सा हो सकता है जैसा कि प्रारंभिक चर्च में था।

शिष्यों को उस भोजन के महत्व का एहसास नहीं था और यहाँ तक कि उनमें से सबसे महान कौन था, इस बारे में बहस भी करते थे। यीशु ने उनके पैर धोकर उस चर्चा को शांत कर दिया, एक दास की तरह कपड़े पहने उनकी कमर के चारों ओर एक तौलिया था, जिसे वह उनके पैरों को पोंछते थे। जिससे उनका सामना हुआ। पतरस ने आपत्ति की, लेकिन यीशु ने उससे कहा कि उसे इसे स्वीकार करना चाहिए और सबसे बड़ा दास था और उन्हें उसके उदाहरण का पालन करना चाहिए और एक दूसरे से प्यार करना और सेवा करना चाहिए।

यीशु ने वहाँ अपने सबसे करीबी दोस्तों के साथ अपने दिल की बात साझा की और उनके लिए प्रार्थना की। उसने वादा किया कि वह हमेशा उनके साथ उनकी आत्मा के साथ रहेगा।

वह भोजन भजन गाकर समाप्त हुआ। परंपरागत रूप से फसह के भोजन का समापन स्तुति के हिलेल स्तोत्र में से एक, भजन 115-118 के गायन के साथ हुआ।

शायद उन्होंने उद्धार गीत, भजन 115 गाया, जो भविष्यवाणियों से भरा हुआ था जिसे यीशु पूरा करेंगे।

हे इस्राएल यहोवा पर भरोसा रख! तेरा सहायक और ढाल वही है। हे हारून के घराने यहोवा पर भरोसा रख! तेरा सहायक और ढाल वही है। हे यहोवा के डरवैयो, यहोवा पर भरोसा रखो! तुम्हारा सहायक और ढाल वही है। यहोवा ने हम को स्मरण किया है; वह आशीष देगा; वह इस्राएल के घराने को आशीष देगा; वह हारून के घराने को आशीष देगा। क्या छोटे क्या बड़े जितने यहोवा के डरवैये हैं, वह उन्हें आशीष देगा। यहोवा तुम को और तुम्हारे लड़कों को भी अधिक बढ़ाता जाए! यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है, उसकी ओर से तुम आशीष पाए हो। स्वर्ग तो यहोवा का है, परन्तु पृथ्वी उसने मनुष्यों को दी है। मृतक जितने चुपचाप

पड़े हैं, वे तो याह की स्तुति नहीं कर सकते, परन्तु हम लोग याह को अब से ले कर सर्वदा तक धन्य कहते रहेंगे। याह की स्तुति करो!

भजन संहिता 115:9-18

उस भोजन के दौरान यीशु ने यहूदा को वह करने के लिए भेजा था जो यहूदा ने पहले से ही करने की योजना बनाई थी, उसे याजकों को पकड़वा दिया। अपने भोजन के बाद समूह यीशु के साथ मंदिर के पास से निकल गया, किद्रोन ब्रुक के पार, शहर के पूर्व में जैतून के पहाड़ की निचली ढलानों पर गतसमनी के ओलिव ग्रोव तक।

वहाँ गतसमनी के बगीचे या ग्रोव में यीशु ने तीन बार अकेले तड़प कर प्रार्थना की। उनके थके हुए शिष्य सो गए। यीशु का पसीना खून से लथपथ था। उसने अपने पिता से पूछा कि क्या यह प्याला उसके पास से निकल सकता है, लेकिन उसने कहा, "मेरी नहीं, बल्कि तुम्हारी इच्छा पूरी हो।" थोड़ी देर बाद, जब पतरस ने भीड़ से लड़ाई की, तो यीशु ने उसे यह कहते हुए रोक दिया कि उसे वह प्याला पीना चाहिए जो उसके पिता ने उसे दिया था।

कुछ विद्वान गतसमनी में उसकी प्रार्थना को अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने की प्रार्थना के रूप में देखते हैं। इब्रानियों के नाम पत्र इस संभावना का वर्णन इस प्रकार करता है:

किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे? क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे?

रोमियो 5:7-10

यहूदा वहाँ हथियारों से लैस भीड़ का नेतृत्व यीशु को गिरफ्तार करने के लिए कर रहा था जिसने खुद को उनके सामने आत्मसमर्पण कर दिया था। भीड़ यीशु की भयानक उपस्थिति पर पीछे की ओर गिर गई। पतरस ने महायाजक के सेवक मत्थस का कान काट दिया लेकिन यीशु ने पतरस को डाँटा और कान को चंगा किया, उसके शत्रुओं के लिए उसके प्रेम को दिखाते हुए उसका अंतिम उपचार कार्य।

परीक्षण

The Trials

यीशु ने पांच परीक्षणों को सहन किया, जिसमें दो मार-पीट और अधिक व्यक्तिगत दुर्व्यवहार शामिल थे, जिससे वह बुरी तरह घायल हो गया और इतना कमजोर हो गया कि, वह जितना मजबूत था, वह क्रॉसबीम को अन्य कैदियों की तरह अपने निष्पादन तक नहीं ले जा सका। यह सारांश उन कुछ तनावपूर्ण, हड़बड़ी वाली घटनाओं का वर्णन करता है, जिसमें याजकों की कार्यकारी परिषद, आंशिक संहेद्रिन की जल्दबाजी और अवैध देर रात से सुबह-सुबह बैठक शामिल है। 70 याजकों के महासभा ने रोम के साथ सहयोग किया और रोमन अधिकारियों के प्रति जवाबदेह था। अन्नास, एक पूर्व महायाजक, और उनके दामाद कैफा, वर्तमान महायाजक, प्रभावशाली सद्की पुरोहित परिवारों का हिस्सा थे जिन्हें रोमन अधिकारियों द्वारा स्वीकार्य और नियुक्त किया गया था।

(1) महायाजक के ससुर अन्ना के साथ मुकदमा

Trial with Annas, father-in-law of the high priest

मंदिर के पहरेदारों के सैनिकों ने देर रात गतसमनी में यीशु को गिरफ्तार किया और उसे बांध दिया। वे उसे पहले हन्ना के पास ले गए, जिसने यीशु से उसके शिष्यों और उसकी शिक्षा के बारे में पूछताछ की। यीशु ने हन्ना को याद दिलाया कि उसने खुलकर और खुलेआम बात की थी, गुप्त रूप से नहीं, और यह कि हन्ना उन लोगों से पूछ सकता था जिन्होंने उसे सुना था। मंदिर के पहरेदार के एक सिपाही ने उस जवाब से हैरान होकर यीशु के चेहरे पर प्रहार किया, यीशु से ताड़ना अर्जित करना क्योंकि उसने कुछ भी गलत नहीं कहा था। यीशु के साथ कठोर, शत्रुतापूर्ण व्यवहार शुरू हो गया था। हन्ना ने फिर बंधे हुए यीशु को कैफा के पास भेजा (यूहन्ना 18:12-14, 19-24)।

(2) महायाजक कैफा के साथ मुकदमा

Trial with Caiaphas, the high priest

उस प्रारंभिक पूछताछ के बाद, वे यीशु को महायाजक कैफा द्वारा न्याय दिलाने के लिए ले गए, जिसमें गतसमनी में गिरफ्तारी से पूरी रात क्रोधित बुजुर्गों का एक छोटा समूह शामिल था।

यीशु के दो अनुयायियों ने उस परीक्षण को देखा। उनमें से एक, जो महायाजक के लिए जाना जाता था (संभवतः नीकुदेमुस जिसने महासभा में यीशु का समर्थन किया था, या कहानी के लेखक) ने पतरस के आने की व्यवस्था की। पतरस ने एक

दूरी और बाद में उसने खुद को महायाजक के आंगन में चारकोल की आग में गर्म किया जब तक कि उसे वहां चुनौती नहीं दी गई और यीशु को जानने से इनकार कर दिया (यूहन्ना 18:10-11, 14; लूका 22:49-62)। यीशु ने मुड़कर पतरस की ओर देखा, जिसे तब याद आया कि कैसे यीशु ने उससे कहा था कि मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले पतरस तीन बार यीशु का इन्कार करेगा। मुर्गे के दूसरे बाँग देने पर पतरस चला गया और फूट फूट कर रोने लगा (लूका 22:61-62)।

बहुत से महायाजक, पुरनिये और शास्त्री शीघ्र ही इकट्ठे हो गए थे। यीशु चुप रहे जब गवाहों ने तर्क दिया और जो उन्होंने कहा था उससे असहमत थे। अंत में कैफा ने यीशु से पूछा कि क्या वह परमेश्वर का पुत्र मसीहा है, और यीशु ने उसके कथन की पुष्टि की। उन्होंने देखा कि निन्दा के रूप में और महायाजक ने क्रोध में अपने ही वस्त्र फाड़ दिए। उन्होंने यीशु को मृत्यु के योग्य करार दिया। वे थूकते हैं उस पर आंखें मूंद लीं, और उस पर प्रहार किया, और भविष्यद्वाणी करने को कहा, और कहा कि यह किसने किया। तब पहरेदारों ने उसे पकड़ लिया और बुरी तरह पीटा (मरकुस 14:53-65)।

एक चिकित्सक ने दो कोड़ों का वर्णन इस प्रकार किया:

यीशु की पिटाई विशेष रूप से गंभीर थी, इससे परे कि एक निन्दा कैदी आमतौर पर क्या अनुभव करेगा। रोमन हिरासत में रखे जाने से पहले यीशु को यहूदी मंदिर रक्षक सैनिकों द्वारा पीटा गया था। फिर उसे रोमन सैनिकों द्वारा फिर से पीटा गया और पीटा गया। रोमन सैनिकों के "पूरे दल" ने उसका मज़ाक उड़ाया और उसे बुरी तरह से पीटा। उसे बुरी तरह से पीटा गया, उस पर थूका गया, आंखों पर पट्टी बांधी गई और नकली शाही राजदंड के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली छड़ी से मारा गया (मत्ती 27: 27-31, यूहन्ना 19: 1-3)।

यहूदी हिरासत में रहते हुए यीशु की प्रारंभिक पिटाई की गंभीरता को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। थॉमस मैकगवर्न, एम.डी., लूका के यहूदी हिरासत में रहते हुए यीशु की पहली पिटाई के विवरण के बारे में एक दिलचस्प अवलोकन करता है। "जो लोग यीशु को पहरा दे रहे थे, वे उसका उपहास करने लगे और उन्हें पीटने लगे।" (लूका 22:63)। लूका यूनानी क्रिया डेरोंन्टेस (δέρποντες) का प्रयोग इस वाक्यांश के लिए करता है "और उसे मारो।" इस शब्द का ग्रीक मूल त्वचा, डर्मा (δέρμα) के लिए समान है, और "त्वचा को भगाने" का प्राथमिक अर्थ रखता है। "बीटना" एक द्वितीयक अर्थ है। जब इस शब्द का प्रयोग पिटाई या कोड़े मारने का वर्णन करने के लिए किया जाता है, तो इसका अर्थ है

पिटार्ई और गाली-गलौज की गंभीरता। एक चिकित्सक के रूप में लूका यीशु की पिटार्ई की गंभीरता का सटीक वर्णन करने के लिए विशिष्ट भाषा का उपयोग करता प्रतीत होता है।

चूँकि महासभा ने यीशु को मार डाला होता अगर उनके पास ऐसा करने का अवसर होता, तो ऐसा लगता है कि टेंपल गार्ड से उसकी पिटार्ई विशेष रूप से गंभीर होती। यहूदी कानून द्वारा मौत की अधिकतम सजा चालीस धारियों (व्यवस्थाविवरण 25: 3) थी। यहूदी अदालतों को शारीरिक दंड में स्वायत्तता थी और वे रोमन हस्तक्षेप के बिना अपने विवेक पर अपराधियों को कोड़े मार सकते थे। रोमन सैनिक बिना किसी प्रतिबंध के निंदा किए गए कैदियों को पीटने के लिए स्वतंत्र थे, एकमात्र शर्त यह थी कि कैदी को सूली पर चढ़ाने से पहले पीट-पीटकर मार डाला नहीं जाना चाहिए।

तदनुसार, परंपरागत रूप से यह माना जाता है कि यीशु को दो बार कोड़े मारे गए थे। पहली पिटार्ई महायाजक कैफा के घर में हुई थी, दूसरी पोंटियस पिलातुस के आदेश के तहत रोमन सैनिकों द्वारा की गई थी। कहा जाता है कि कैफा के घर से कोड़े का खंभा यरूशलेम में पवित्र सेपुलचर के चर्च में यीशु की अपनी माँ के दर्शन के चैपल में है। ऐसा माना जाता है कि पिलातुस के सैनिकों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला खंभा रोम में सांता प्रसेदे के चर्च में है।

[बर्जरोन, जोसेफ डब्ल्यू. जीसस का क्रूसीफिकेशन: एक मेडिकल डॉक्टर मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान की जांच करता है। सेंट पॉलीकार्प पब्लिशिंग हाउस। अध्याय 6: यीशु का निष्पादन।]

(3) महासभा के साथ मुक़दमा

Trial with the Sanhedrin

भोर तक मुख्य याजकों ने बुजुर्गों, शास्त्रियों और परिषद से परामर्श किया था, जो कि 70-सदस्यीय महासभा का एक आंशिक समूह था, जिसके पास निर्णय पारित करने का अधिकार था। उन्होंने यीशु से पूछा कि क्या वह वास्तव में मसीह, परमेश्वर का पुत्र था, और उसने उनके शब्दों की पुष्टि की। गुस्से में, उन्होंने उसे मौत की निंदा की। पहले, एक गर्म सेन्हेड्रिन बहस में, कैफा ने सलाह दी कि रोम के लिए एक बेचैन और बढ़ते विद्रोह पर हमला करने की तुलना में लोगों के लिए एक व्यक्ति को मरना बेहतर था। अरिमथिया से यूसुफ कुछ परिषद सदस्यों में से एक था जो उनके फैसले से असहमत थे (लूका 22:63-71; 23:1)।

(4) पीलातुस, राज्यपाल के साथ विचारण

Trial with Pilate, the Governor

परिषद ने यीशु को बांधा और उसे राज्यपाल पीलातुस के पास ले गया, क्योंकि उन्हें उसे मारने का अधिकार नहीं था। (मरकुस 15:1)।

इस घटना पर पछतावे के साथ, यहूदा ने चांदी के अपने 30 टुकड़े वापस फेंक दिए जो याजकों ने उसे यीशु को पकड़वाने के लिए दिए थे, और उसने बाहर जाकर खुद को फांसी लगा ली (मत्ती 27:1-10)।

पीलातुस क्रोधित सभा से मिलने के लिए निकला। उन्होंने यीशु पर राष्ट्र को विकृत करने, लोगों को कर देने से मना करने और स्वयं को मसीहा, एक राजा घोषित करने का आरोप लगाया। पिलातुस ने यीशु से पूछा कि क्या वह वास्तव में यहूदियों का राजा था, और यीशु अपने बयान की पुष्टि की।

पीलातुस ने अपनी पूछताछ से निष्कर्ष निकाला कि यीशु ने मृत्यु के योग्य कुछ भी नहीं किया था। परन्तु याजकों ने जोर देकर कहा कि यीशु खतरनाक था और उसने गलील से यहूदिया प्रांत में अपनी शिक्षा के द्वारा लोगों को उभारा था (लूका 23:1-5)। गलील के उनके संदर्भ ने पीलातुस को एक रास्ता दिया, इसलिए उसने यीशु को न्याय के लिए गलील के शासक हेरोदेस के पास भेजा।

(5) हेरोदेस एंटीपास के साथ परीक्षण

Trial with Herod Antipas

हेरोदेस अंतिपास, गलील का टेट्रार्क, दावत के लिए यरूशलेम में था। हेरोदेस लंबे समय से यीशु को देखना चाहता था और उसे उम्मीद थी कि वह उसे कुछ चमत्कार करते हुए देखेगा। उसने जीसस से लंबा सवाल किया लेकिन जीसस ने कुछ नहीं कहा। महायाजकों और शास्त्रियों ने उस पर घोर दोष लगाया। हेरोदेस और उसके सैनिकों ने यीशु का मज़ाक उड़ाया और उसे पीलातुस के पास वापस भेजने के लिए एक सुंदर वस्त्र पहनाया। उस दिन हेरोदेस और पीलातुस, जो शत्रु थे, मित्र बन गए (लूका 23:6-12)।

पहले हेरोदेस ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर काट दिया था और वह यीशु को भी मारना चाहता था (लूका 13:31-33) लेकिन यीशु ने धार्मिक नेताओं से कहा था कि वह लोमड़ी को बताए कि वह, यीशु, अपना काम पूरा करेगा और फिर यरूशलेम जाएगा। अब यरूशलेम में हेरोदेस आखिरकार उससे मिला लेकिन उसके साथ अवमानना की। इसलिए उसके दोषियों के निराश, क्रोधित समूह ने मंदिर के पहरेदारों के साथ, अपने कैदी को राज्यपाल के पास लौटा दिया।

(6) पिलातुस के साथ दूसरा परीक्षण

Second Trial with Pilate

पीलातुस यीशु को रिहा करना चाहता था लेकिन कट्टर धार्मिक नेताओं ने इसका कड़ा विरोध किया। वे राज्यपाल के किले के महल में प्रवेश नहीं करते थे क्योंकि वे अनुष्ठानिक रूप से अशुद्ध हो जाते थे और वे उस रात फसह का भोजन करना चाहते थे।

पीलातुस उनके पास बाहर गया और उनसे कहा कि वे अपनी ही व्यवस्था के अनुसार यीशु का न्याय करें, परन्तु उन्होंने ऊँचे स्वर में विरोध किया क्योंकि वे चाहते थे कि उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए। तब पीलातुस ने फिर से अपने मुख्यालय में प्रवेश किया और यीशु से उसके राज्य के बारे में और पूछताछ की। पीलातुस की पत्नी ने उसे एक संदेश भेजा जिसमें उसे चेतावनी दी गई थी कि उसका उस पीड़ित से कोई लेना-देना नहीं है क्योंकि उसने उसके बारे में एक बुरा सपना देखा था।

तब पीलातुस ने एक और चाल चली। हर साल उनके फसह के त्योहार में उसने एक कैदी को रिहा करने की पेशकश की। उसने उन्हें यीशु बरअब्बा नामक एक कुख्यात कैदी या उनके शिकार यीशु मसीह की पसंद की पेशकश की। महायाजकों और पुरनियों ने भीड़ को बरअब्बा के लिए चिल्लाने और यीशु को मार डालने के लिए मनाया। एक दंगा शुरू हो रहा था इसलिए पीलातुस ने आत्मसमर्पण कर दिया, पूरी बात से अपने हाथ धोए, और यीशु को सैनिकों को कोड़े और सूली पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया (मत्ती 27:15-26)।

रोमन सैनिकों द्वारा यीशु को कोड़े मारने या कोड़े मारने से बहुत से लोग परिचित हैं। क्रूस पर चढ़ने से पहले पीड़ितों के लिए यह सामान्य प्रथा थी। फिल्म द पैशन ग्राफिक रूप से रोमन कोड़े मारने का चित्रण करती है, हालांकि यह चित्रण भी पीड़ित के सिर से पैर तक कोड़े मारने की पूरी भयावहता नहीं दिखाता है, जैसा कि ट्यूरिन के कफन पर एक क्रूस पर चढ़ाए गए व्यक्ति की छवि में देखा जा सकता है, जिसे बेरहमी से कोड़े से मार दिया गया था और कंधे से पैर तक घायल।

एक यहूदी कोड़े की मार 40 कोड़े तक सीमित थी (व्यवस्थाविवरण 25:3), लेकिन रोमन सैनिकों की कोई सीमा नहीं थी सिवाय इसके कि पीड़ित को सूली पर चढ़ाए जाने से पहले कोड़े से बच जाना चाहिए। रोमन सैनिकों ने एक फ्लैगेलम, चमड़े की पट्टियों के एक चाबुक के साथ सीसा या हड्डी के टुकड़ों को सिरों में सिल दिया। उन्होंने पूरे शरीर को कुरेद दिया। यीशु की पिटाई क्रूर होती क्योंकि उसे यहूदियों के राजा के रूप में मार डाला जा रहा था और रोमन सैनिकों द्वारा उनके रोमन साम्राज्य की अवहेलना करने वाले विद्रोही के रूप में माना जाएगा।

राज्यपाल के सैनिक तब यीशु को मुख्यालय में ले गए और पूरे यरूशलेम दल को इकट्ठा किया, सामान्य रूप से 480 सैनिक। उन्होंने उसे उतार दिया, लाल रंग का बागा पहनाया, उसके सिर पर काँटों का ताज पहनाया, उसके दाहिने हाथ में एक सरकण्डा रखा, और उसका मज़ाक उड़ाते हुए घुटने टेक दिए। उन्होंने उस पर थूका और उसके सिर पर वार किया। जब उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया तो उन्होंने उसी के कपड़े उस पर डाल दिए और उसे सूली पर चढ़ाने के लिए बाहर ले गए (मत्ती 27:27-31)।

(7) स्वर्ग में परीक्षण

Trial in heaven

स्वर्ग के दरबारों ने यीशु को शुद्ध, सिद्ध भेंट, हमारे पाप का एकमात्र और एकमात्र विकल्प घोषित किया। परमेश्वर ने हमारे स्थान पर, हमारे मुक्तिदाता, हमारे उद्धारकर्ता और प्रभु में अपने पुत्र के बलिदान को स्वीकार किया। पॉल ने लिखा, "हमारे लिए वह जो पाप से अनजान था, उसे पाप बना दिया, कि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता ठहरें। (2 कुरिन्थियों 5:21)

यशायाह के सेवक गीत ने इसकी घोषणा की:

निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।।

यशायाह 53:4-6

स्वर्ग के यजमानों ने इसकी घोषणा की:

और जब मैं ने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिन की गिनती लाखों और करोड़ों की थी।

और वे ऊंचे शब्द से कहते थे, कि वध किया हुआ मेज़ा ही सामर्थ्य, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है।

सूली पर चढ़ाया

Crucifixion

रोमनों ने लोहे की छड़ से जबरदस्ती शासन किया। उन्होंने हजारों विद्रोही दासों और अपराधियों को सूली पर चढ़ा दिया, जैसे कि 600 ईसा पूर्व के स्पार्टाकस विद्रोह में क्रूस पर चढ़ाए गए, और 70 ईस्वी के यहूदी विद्रोह में एक दिन में 500 लोग। रोमन नागरिकों को सूली पर चढ़ाने की अपमानजनक सजा से छूट दी गई थी। रोमनों ने छह शताब्दियों तक सूली पर चढ़ाने का इस्तेमाल किया जब तक कि सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ने इसे 313 ईस्वी के आसपास गैरकानूनी घोषित नहीं कर दिया।

विजयी रोमनों ने सुनिश्चित किया कि उनके पीड़ितों को हजारों क्रॉस पर अधिकतम पीड़ा और अपमान का सामना करना पड़ा, सार्वजनिक रूप से और धीरे-धीरे उनकी अंतिम पीड़ादायक सांस में कष्टदायी दर्द में। इस तरह से हमें अपने अंग्रेजी शब्द एक्स्क्रुसीएट (excruciate(ex-crux - out of the cross) और ग्रीक शब्द एगोन (संघर्ष या प्रतियोगिता) से पीड़ा मिली।

रोमन सैनिक अपने असहाय पीड़ितों को सूली पर चढ़ाने से पहले उन्हें यातना दे सकते थे और उनका मज़ाक उड़ा सकते थे। यीशु को बेरहमी से पीटा गया, ठट्ठों में उड़ाया गया, निन्दा की गई और फिर सूली पर चढ़ा दिया गया। पहले मजबूत और स्वस्थ, उन्हें कष्टदायी दर्द, आघात और कमजोरी का सामना करना पड़ा। अन्य पीड़ितों की तरह क्रॉसबीम ले जाने के लिए उसके पास पर्याप्त ताकत नहीं थी। उसे सामान्य से अधिक बेरहमी से प्रताड़ित किया गया था।

उस दिन तीन पीड़ितों ने अपने क्रॉसबीम (पेटीबुलम) को सार्वजनिक निष्पादन के स्थान पर ले जाया। यीशु उस समय ऐसा करने के लिए बहुत कमजोर था, इसलिए सिपाहियों ने शमौन ऑफ साइरेन को, जो देश से आ रहा था, उसे ले जाने के लिए मजबूर किया। इंजील में क्रॉस का मतलब क्रॉसबीम और पूरी भीषण संरचना दोनों हो सकता है। सबसे आम ताऊ संरचना थी, एक राजधानी टी की तरह। पीड़ितों को क्रॉसबीम पर कीलों से लगाया जाता था और पेड़ के तने या डंडे पर फहराया जाता था और उनके पैरों को उस पर लगाया जाता था। एक कलात्मक आविष्कार पैरों का समर्थन करने के लिए क्रॉस के सामने से जुड़ा लकड़ी का ब्लॉक है लेकिन रोमन सैनिकों ने इसे नहीं जोड़ा। एक और प्रतीकात्मक कलात्मक आविष्कार क्रूस पर

यीशु के सिर पर कांटों का ताज है। पिछली यातना में कांटों का इस्तेमाल किया गया था, और फिर यीशु के कपड़े उस पर वापस डाल दिए गए जब तक कि सूली पर चढ़ाए जाने पर फिर से हटा नहीं दिया गया।

आमतौर पर चार सैनिक एक सेंचुरियन की देखरेख में प्रत्येक शिकार को सूली पर चढ़ाते थे। उस दिन उन्होंने यीशु के साथ बीच में तीन को सूली पर चढ़ा दिया। रोमनों ने अपने पीड़ितों को मुख्य सड़क के किनारे एक कस्बे या गाँव के बाहर सूली पर चढ़ा दिया जहाँ इसे देखा जा सकता था। उन्होंने पेड़ों को काट दिया और उनके पीड़ितों ने क्रॉसबीम को भयानक निष्पादन स्थल पर ले जाया, जहाँ उन्हें क्रॉसबार पर कीलों से लटका दिया गया और एक पेड़, एक पेड़ के तने, या एक डंडे पर फहराया गया। पतरस ने बाद में लिखा कि उसने हमारे पापों को अपने शरीर में पेड़ पर उठा लिया। यरूशलेम की शहर की दीवार के ठीक बाहर निष्पादन स्थल को खोपड़ी की जगह कहा जाता था, जिसके पास कब्रें थीं। पुराने शहर की दीवार के ठीक बाहर आज भी कब्रें और कब्रें हैं।

दर्शकों ने केंद्रीय पीड़ित को ताना मारा, जिसके ऊपर अरामी, ग्रीक और लैटिन में घोषणा की गई थी कि वह यहूदियों का राजा था। सिपाहियों ने अपने पीड़ितों के कपड़े आपस में बांट लिए और यीशु के अंगरखा के लिए जुआ खेला क्योंकि यह एक पूरे वस्त्र के रूप में बुना गया था। धार्मिक नेताओं और सैनिकों ने एक मसीहा और राजा के रूप में उनका उपहास किया जो खुद को या दूसरों को नहीं बचा सके।

वे नहीं जानते थे कि अपने सिद्ध जीवन के इस बलिदान से वह उन सभी को बचा लेगा जो उस पर भरोसा करते हैं।

लगभग नौ बजे उन्हें सूली पर चढ़ाया गया, और दोपहर से ही देश पर अन्धकार छा गया। लगभग तीन बजे परमेश्वर के मेमने की मृत्यु हो गई, उस समय दोपहर में मंदिर में बेदाग पास्कल मेग्रे मारे जा रहे थे।

चश्मदीनों ने भयानक तमाशा देखा और सुना। जॉन, देखा। वह वहाँ यीशु की माँ मरियम, उसकी बहन (आमतौर पर सैलोम, जॉन की माँ के रूप में पहचानी जाती है), क्लोपास की पत्नी मैरी और मैरी मैग्डलीन सहित वफादार महिलाओं के साथ था।

यह सूली पर चढ़ाए जाने का विवरण उन बयानों के पारंपरिक अनुक्रम का अनुसरण करता है जो यीशु ने छह दर्दनाक घंटों के दौरान मरने के दौरान दिए थे, जिसमें भजन संहिता 22:1 और 31:5 को उद्धृत करना शामिल है।

1. पिता उन्हें क्षमा कर, क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या करते हैं।

जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया तो यीशु ने कहा, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं" (लूका 23:34)। उन्होंने प्रेम और क्षमा का प्रदर्शन जारी रखा।

2. मैं तुम से सच कहता हूँ, आज तुम मेरे साथ जन्नत में रहोगे।

अपराधियों में से एक यीशु का उपहास करता रहा, लेकिन दूसरे अपराधी ने उसे डांटा और यीशु पर विश्वास करते हुए कहा, "यीशु, जब तुम अपने राज्य में आओ तो मुझे याद करो।" यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, आज तुम मेरे साथ स्वर्ग में होगे" (लूका 23:43)। जीवन चाहने वाले दोषी व्यक्ति के लिए यह एक बहुत ही सार्वजनिक रूपांतरण का क्षण था। परमेश्वर का प्रेम, अनुग्रह, दया और क्षमा हम सभी के लिए उपलब्ध है जैसा कि यीशु ने मरते समय भी प्रदर्शित किया था - विशेषकर मरने के द्वारा।

3. हे नारी, अपने पुत्र को निहारना; अपनी माँ को निहारना।

जब यीशु ने अपनी माता और अपने प्रिय चले को उसके साथ खड़े देखा, तो अपनी माता से अरामी भाषा में कहा, "प्रिय स्त्री, यह तेरा पुत्र है" और शिष्य से कहा, "यहाँ तेरी माता है" (यूहन्ना 19:26-27) वह शिष्य, कहानी का लेखक, जिसे आमतौर पर जॉन के रूप में पहचाना जाता है, मैरी को अपने घर ले गया।

4. हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया है?

दोपहर से दोपहर तीन बजे तक पूरे देश में अँधेरा छाया रहा, वह समय जब फसह के मेमनों का वध किया जा रहा था। यीशु ने जोर से एक मसीहाई भजन की शुरुआत को उद्धृत किया: "एली, एली, लेमा शबक्तनी?" - "हे भगवान, हे भगवान, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया?" वह स्तोत्र आगे कहता है: "जो मुझे देखते हैं वे सब मेरा उपहास करते हैं; वे ओंठ उड़ाते, और सिर हिलाते हुए कहते हैं, 'उसने यहोवा पर भरोसा रखा, उसे छुड़ाए; उसे छुड़ाए'... उन्होंने मेरे हाथों को बेधा और मेरे पांव ... वे मुझे देखते और घूरते हैं। वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते हैं, और मेरे वस्त्र के लिथे चिट्ठी डालते हैं।" कुछ लोगों ने सोचा कि वह एलियाह को बुला रहा है। (मत्ती 27:45-49; मरकुस 15:34; भजन संहिता 22:1, 7-8, 16-18)

5. मैं प्यासा हूँ।

अपने जीवन के कष्टदायी अंत में यीशु ने हांफते हुए कहा, "मैं प्यासा हूँ" (यूहन्ना 19:28)। पास में ही खट्टी दाख-मदिरा का एक घड़ा था, इसलिए किसी ने दाखरस से भरे हुए स्पंज को जूफा की एक डाली पर रख दिया और उसे अपने मुँह से लगा लिया (यूहन्ना 19:28-29; भजन संहिता 22:15; 69:3,21)। यह दिलचस्प है कि मिस्र में अपने पहले फसल पर इस्राएलियों ने अपने दरवाजे पर खून लगाने के लिए hyssop का इस्तेमाल किया।

6. यह समाप्त हो गया है।

जब यीशु ने जान लिया कि मैं जो कुछ करने आया हूँ वह सब हो गया है, तो उसने दाखमधु लिया, और कहा, "पूरा हुआ।" इसका अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है, "यह पूरा हुआ।" जॉन 19:30)

7. हे पिता, मैं अपना आत्मा तेरे हाथ में सौंपता हूँ।

यीशु ने ऊंचे शब्द से पुकारा, "हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ" (लूका 23:46; भजन संहिता 31:5), और पवित्रशास्त्र का हवाला देते हुए अपनी अंतिम सांस ली। पूरे इतिहास में सबसे बड़ा प्रेमपूर्ण बलिदान किया गया था।

पर्यवेक्षक सूबेदार ने घोषणा की कि मुख्य शिकार वास्तव में निर्दोष था और वह परमेश्वर का पुत्र था।

यहाँ क्रूस से उन शब्दों का सारांश दिया गया है।



1 पिता उन्हें क्षमा कर, क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या करते हैं। (लूका 23:34)

2 मैं तुम से सच कहता हूँ, आज तुम मेरे साथ स्वर्गलोक में रहोगे। (लूका 23:43)

3 हे नारी, अपने पुत्र को देख; अपनी माँ को निहारना। (यूहन्ना 19:26-27)

4 हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया है? (मत्ती 27:46; मरकुस 15:34; भज 22:1) 63

5 मुझे प्यास लगी है। (यूहन्ना 19:28; भजन संहिता 21:15-16; 69:21)

6 समाप्त हो गया है। (यूहन्ना 19:30)

7 हे पिता, मैं अपक्की आत्मा तेरे हाथ में सौंपता हूँ। (लूका 23:46; भजन संहिता 31:5)

परंपरागत रूप से, इन सात कथनों को शब्द कहा जाता है

1. क्षमा,
2. मोक्ष,
3. संबंध,
4. परित्याग,
5. संकट,
6. विजय, और
7. पुनर्मिलन।

आखिरकार सैनिकों ने दो पीड़ितों के पैरों को अभी भी जीवित कर दिया, इसलिए वे जल्दी से मर गए, अब और अधिक सांस लेने के लिए अपने नुकीले पैरों से ऊपर उठने में सक्षम नहीं थे। फसह का सब्ब सूर्यास्त के समय शुरू होने से पहले धार्मिक नेता उन्हें क्रूस से उतारना चाहते थे। केंद्रीय शिकार पहले ही मर चुका था इसलिए एक सैनिक ने सुनिश्चित करने के लिए भाले से उसके बाजू और दिल को छेद दिया। खून और पानी बह निकला।

रहस्य तेजी से गहराता गया। मत्ती ने बताया कि मंदिर का मोटा परदा ऊपर से नीचे की ओर फटा हुआ था। धरती हिल गई, चट्टानें फट गईं और कब्रें खुल गईं। बहुत से पवित्र लोगों के शरीर जो मर गए थे, जी उठे और यीशु के पुनरुत्थान के बाद कब्रों से बाहर आए और शहर में गए और बहुत से लोगों को दिखाई दिए।

भविष्यवक्ता यशायाह ने अपने सेवक गीतों में मसीहा की अत्यधिक पीड़ा की भविष्यवाणी की थी। उन गीतों में से अंतिम गीत परमेश्वर के दास की पीड़ा का वर्णन करता है, जो अंततः यीशु में पूरा हुआ।

जो समाचार हमें दिया गया, उसका किस ने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?

क्योंकि वह उसके साम्हने अंकुर की नाई, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले; उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते। वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुःखी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हम ने उसका मूल्य न जाना॥

निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों की नाई भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया॥ वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला। अत्याचार कर के और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किस ने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी। और उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि उसने किसी प्रकार का अपद्रव न किया था और उसके मुंह से कभी छल की बात नहीं निकली थी॥ तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब तू उसका प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी। वह अपने प्राणों का दुःख उठा कर उसे देखेगा और तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा।

इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और, अपराधियों के लिये बिनती करता है॥

यशायाह 53:1-12

मैं इस पुस्तक की घटनाओं को अपनी पुस्तक द लायन ऑफ जूडाह में और अधिक विस्तार से बताता हूँ, जिसमें एक मुफ्त पीडीएफ़ नवीनीकरण जर्नल डॉट कॉम पर है। वहाँ मैं पॉल के पत्रों से कुछ और

प्रकाशितवाक्य सहित नए नियम के विभिन्न अंशों सहित अतिरिक्त मार्ग शामिल करता हूं। मत्ती और यूहन्ना ने इन घटनाओं को व्यक्तिगत रूप से देखा। मरकुस ने इसका कुछ भाग यरूशलेम में देखा होगा। लूका ने अपनी दो पुस्तकों, लूका की सुसमाचार और प्रेरितों के कार्य के लिए चश्मदीद गवाहों से अपनी रिपोर्ट एकत्र की।

अरिमथिया के जोसेफ, निकोडेमस की सहायता से, यीशु के शरीर को क्रूस से लेने की अनुमति प्राप्त की और शरीर को अपने नए मकबरे में पास में रख दिया। उसने यीशु के शरीर को एक बड़ी सनी की चादर में लपेटा और उसके सिर के चारों ओर एक कपड़ा था। उसने कब्र के सामने एक विशाल पत्थर लुढ़का हुआ था। अगले दिन महायाजकों ने पत्थर को सील करने और सिपाहियों के पहरेदार को पहरे पर रखने की अनुमति प्राप्त की ताकि कोई भी शरीर को चुरा न सके।

जी उठने

Resurrection

उस फसह के सप्ताहांत में अफवाहें फैलने लगीं।

अधिकांश लोगों ने सोचा कि अविश्वसनीय अफवाहें असंभव थीं, और ऐसा कहा।

केवल कुछ, बहुत कम लोगों ने सोचा कि क्रूस पर चढ़ाया गया मसीहा जीवित था। एक महीने बाद भी उनके कुछ अनुयायियों को संदेह हुआ कि ऐसा हुआ था और वह वास्तव में जीवित थे।

क्रूस पर चढ़ाए गए, जैसे हजारों थे, उनके मसीहा और राजा तब रहस्यमय तरीके से 40 दिनों के दौरान फसह के दिन पूर्णिमा से बादलों से परे उनके स्वर्गारोहण तक दिखाई दिए।

तीसरे दिन, वह रहस्यमय तरीके से अपने कई दोस्तों के सामने आया। उस दिन और शाम को उसने उन्हें समझाया कि कैसे पवित्रशास्त्र कहता है कि मसीहा को कष्ट उठाना पड़ा।

इन रहस्यमय घटनाओं ने इसमें शामिल लोगों के जीवन को बदल दिया, और दुनिया के इतिहास को आकार दिया। यह कहानी इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं को कवर करती है क्योंकि इसने न केवल उस समय शामिल लोगों को प्रभावित किया बल्कि इतिहास के माध्यम से अनगिनत लाखों लोगों के जीवन और शाश्वत भाग्य को भी बदल दिया।

इस अध्याय में पुनरुत्थान के उन प्रकटनों का संक्षिप्त विवरण शामिल है।

जी उठने रविवार

Resurrection Sunday

(1) मरियम मगदलीनी - मरकुस 16:9; यूहन्ना 20:11-18

(2) महिलाएं - मत्ती 28:9-10

(3) क्लियोपास और दोस्त, एम्मास रोड - मार्क 16:12-13; लूका 24:13-34

(4) शमौन पतरस - लूका 24:34; 1 कुरिन्थियों 15:5

(5) चेले - मरकुस 16:14; लूका 24:36-49; यूहन्ना 20:19-23; 1 कुरिन्थियों 15:5

(1) मरियम मैगडलीन

Mary Magdalene

फसह के सब्त के बाद, मैरी, उसकी बहन (आमतौर पर सैलोम के रूप में पहचानी जाती है), और मैरी मैगडलीन भोर में कब्र पर गई और पाया कि बड़ा पत्थर लुढ़क गया और शरीर चला गया। कब्र में एक स्वर्गदूत ने उन्हें बताया कि यीशु जीवित था: "जैसा उसने कहा, वह जी उठा है।"

स्वर्गदूत ने औरतों को औरों को बताने के लिए भेजा, सो मरियम मगदलीनी दौड़कर लौटी, और पतरस और यूहन्ना को, जो दौड़कर कब्र की ओर भागे, परन्तु उसे वहां सनी का कपड़ा और सिर का कपड़ा उसके पास मुड़ा हुआ मिला, खाली पाया।

मरियम मगदलीनी कब्र पर रोती रही। उसने कब्र के अंदर देखा और दो स्वर्गदूतों को देखा जिन्होंने उससे पूछा कि वह क्यों रो रही है। फिर उसने एक आदमी को देखा जिसे वह माली समझती थी, जिसने उससे यह भी पूछा कि वह क्यों रो रही है, तो उसने उससे पूछा कि क्या उसने शरीर को हिलाया है। यीशु ने कहा, "मरियम।"

चकित होकर, वह अरामी भाषा में चिल्लाई, 'रब्बोनी!' (जिसका अर्थ है 'शिक्षक')। यीशु ने उससे यह भी कहा कि जाओ और दूसरों को खबर सुनाओ।

(2) महिला

The Women

महिलाओं ने बाद में बताया कि भूकंप आया था और एक बड़े स्वर्गदूत ने पत्थर को हटा दिया था। पहरेदार डर गए और मरे हुए आदमियों की तरह हो गए।

पवित्रशास्त्र में अक्सर स्वर्गदूत प्रकट होते हैं, आमतौर पर मजबूत युवा पुरुषों के रूप में, कभी पंखों के साथ नहीं। करुब और सेराफिम और कुछ स्वर्गीय जीव पंखों वाले हैं।

कब्र पर स्वर्गदूत को देखने के बाद यीशु उन महिलाओं के सामने प्रकट हुए और वापस भाग रहे थे। उसने उन्हें दूसरों को बताने का निर्देश दिया और वह उन्हें गलील में भी देखेगा।

(3) एम्मास की राहो पर क्लियोपास और दोस्त

Cleopas and Friend on the Emmaus Road

उसी दिन क्लियोपास और उसका दोस्त इम्मास तक करीब सात मील चलकर आए। चलते-चलते यीशु उनके साथ हो गए, लेकिन उन्होंने उसे नहीं पहचाना और उन्होंने उसे सूली पर चढ़ाए जाने और उस सुबह की अजीब घटनाओं के बारे में बताया। यीशु ने उन्हें कानून और सभी भविष्यवक्ताओं से याद दिलाया कि मसीहा को पीड़ित होना था और फिर उसकी महिमा में प्रवेश करना था। उन्होंने उसे भोजन के लिए आमंत्रित किया और जैसे ही उसने धन्यवाद दिया, उन्होंने महसूस किया कि वह कौन था, लेकिन वह गायब हो गया। वे फौरन औरोंको बताने के लिये यरूशलेम को लौट गए।

(4) शामों पत्रस

Simon Peter

क्लियोपास और उसके मित्र ने शिष्यों और अन्य लोगों को एक साथ एकत्रित पाया। चेलों ने कहा कि यह सब सच है, और यीशु भी उस दिन शामों पत्रस को दिखाई दिए थे।

(5) चले बंद दरवाजों के पीछे

The Disciples behind locked doors

उस शाम जब शिष्य बंद दरवाजों के पीछे मिले तो यीशु उन्हें दिखाई दिए। पहले तो वे चौंक गए और डर गए, यह सोचकर कि वह एक भूत है। उसने कहा, "शालोम" और उन्हें अपने हाथ और बाजू दिखाए और उन्हें उसे छूने और देखने के लिए आमंत्रित किया कि वह वास्तव में जीवित था। उसने उनके साथ उनकी पकी हुई मछलियाँ खाईं। वे अति प्रसन्न हुए। उसने उन्हें याद दिलाया कि उसने पहले उनसे कहा था कि जो कुछ उसके बारे में व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं और भजन संहिता में लिखा गया था, उसे पूरा किया जाना था, और यह कि उसके नाम पर पश्चाताप और क्षमा का प्रचार सभी राष्ट्रों में किया जाएगा।

उस ने उन पर यह कहते हुए फूंक मारी, कि पवित्र आत्मा ग्रहण करो। उसने उनसे कहा कि वह उन्हें भेज देगा जो उनके पिता ने वादा किया था, लेकिन उन्हें तब तक इंतजार करना चाहिए जब तक कि वे ऊपर से शक्ति के साथ नहीं आ जाते।

40 दिन (प्रेरितों के काम 1:3)

(6) थोमा के साथ चले, एक सप्ताह बाद - यूहन्ना 20:24-29।

(7) 500 एक बार में - 1 कुरिन्थियों 15:6।

(8) याकूब - 1 कुरिन्थियों 15:7।

(9) गलील समुद्र तट - यूहन्ना 21:1-25।

(10) गलील पर्वत - मत्ती 28:16-20।

(11) शिष्यों के साथ भोजन करना - प्रेरितों के काम 1:4-5।

(12) स्वर्गारोहण - जैतून का पर्वत - लूका 24:50-51; प्रेरितों के काम 1:6-9।

(6) तोमा के साथ बाकी शगिरदों, एक सप्ताह बाद

The Disciples with Thomas, one week later

थोमा चूक गया कि पहली रात उस पर विश्वास नहीं किया और वह तब तक विश्वास नहीं करेगा जब तक कि वह यीशु के घावों को नहीं छू सकता। एक हफ्ते बाद वे सभी फिर मिले। हालाँकि दरवाजे बंद थे, यीशु ने

आकर कहा, "शालोम।" उन्होंने थॉमस को अपने हाथों और बाजू को छूने और संदेह करने और विश्वास करने के लिए आमंत्रित किया। थोमा ने कहा, "हे मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर!" यीशु ने कहा, "तू ने मुझे देखकर विश्वास किया है; धन्य हैं वे, जिन्होंने नहीं देखा और अब तक विश्वास किया है।" (यूहन्ना 20:24-29)

(7) 500 एक बार में

500 at once

बाद में पौलुस ने रिपोर्ट किया, "उसके बाद, वह एक ही समय में पाँच सौ से अधिक भाइयों और बहनों को दिखाई दिया, जिनमें से अधिकांश अभी भी जीवित हैं, हालांकि कुछ सो गए हैं।"

(8) याकूब (और पौलुस का दर्शन)

James (and Paul's vision)

पौलुस ने यह भी बताया, "तब वह याकूब को और फिर सब प्रेरितों को दिखाई दिया, और सब से अन्त में मुझे भी ऐसा दिखाई दिया, मानो वह असामान्य रूप से जन्मा हो।" याकूब, यीशु का भाई, यरूशलेम की कलीसिया में एक प्रमुख अगुवा बन गया और उसने एक देहाती पत्र लिखा जो अब पवित्रशास्त्र में शामिल है।

(9) गलील का साहिलो

Galilee Shor

बाद में यीशु ने अपने सात शिष्यों को गलील की झील के किनारे दर्शन दिए। शमौन पतरस, थोमा, नतनएल, याकूब और यूहन्ना, और दो अन्य शिष्य पूरी रात असफल रूप से मछली पकड़ रहे थे। सुबह-सुबह यीशु किनारे पर खड़े हो गए और उनसे कहा कि वे अपना जाल नाव के दाहिनी ओर फेंक दें। जब उन्होंने किया, तो वे बड़े कैच के कारण नेट में नहीं जा सके।

यूहन्ना ने कहा, "यह यहोवा है!" और पतरस ने अपना चोगा पकड़ा, और कोई सौ मीटर तैरकर किनारे पर आ गया। बाकी लोग नाव में सवार होकर मछलियों से भरा जाल खींच रहे थे। किनारे पर उन्होंने वहाँ जलते अंगारों की आग देखी, जिस पर मछलियाँ और कुछ रोटियाँ थीं। यीशु ने उन्हें अपनी कुछ मछलियाँ लाने को कहा। उन्हें पता चला कि उनके पास 153 बड़ी मछलियाँ हैं लेकिन इतने सारे होने पर भी जाल नहीं फटा। सबने एक साथ खाना खाया।

जब वे समाप्त कर चुके तो यीशु ने पतरस से तीन बार पूछा कि क्या पतरस उससे प्रेम करता है और पतरस ने कहा कि उसने किया। जब यीशु ने तीसरी बार उससे पूछा तो पतरस आहत हुआ। हर बार यीशु ने पतरस को अपनी भेड़ों या मेमनों को चराने के लिए नियुक्त किया। यीशु ने कहा कि जब पतरस बूढ़ा होगा तो वह अपने हाथ फैलाएगा और दूसरे उसे कपड़े पहनाएंगे और उसे ले जाएंगे जहां वह नहीं जाना चाहता, यह दर्शाता है कि पतरस कैसे मरेगा। परंपरा कहती है कि पतरस को रोम में सूली पर चढ़ाया गया था और उसे उल्टा सूली पर चढ़ाने के लिए कहा गया था क्योंकि वह यीशु की तरह मरने के योग्य नहीं था। एक अफवाह फैल गई कि जॉन नहीं मरेगा लेकिन यीशु ने ऐसा नहीं कहा। जब पतरस ने यूहन्ना के बारे में पूछा, तो यीशु ने कहा, “यदि मैं चाहता हूँ कि वह मेरे लौटने तक जीवित रहे, तो तुझे यह क्या है?”

(10) गलील का पहाड़: महान हुकामो

Galeel ka pahaar: The great commission

जब ग्यारह शिष्य गलील के एक पहाड़ पर यीशु से मिले, भले ही कुछ ने संदेह किया, यीशु ने उन्हें वह दिया जिसे हम महान आज्ञा कहते हैं:

स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाकर सब जातियों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और जो कुछ मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है उसका पालन करना सिखाओ। और निश्चय मैं युग के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।’ (मत्ती 28:16-20)

(11) यरूशलेम में एक साथ भोजन करना

Eating together in Jerusalem

उन 40 दिनों के दौरान यीशु अपने शिष्यों से कई बार मिले, और एक बार जब वे यरूशलेम में एक साथ भोजन कर रहे थे, तो उसने उनसे कहा कि जब तक परमेश्वर की शक्ति उन पर न आए, तब तक प्रतीक्षा करें।

और उन से मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिस की चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे। (प्रेरितों के काम 1:4-5)

(12) स्वर्गारोहण

The Ascension

यीशु अपने चेलों को जैतून के पहाड़ पर बैतनिय्याह के पास ले गए और उन्हें आशीर्वाद दिया। जब वह उन्हें आशीर्वाद दे रहा था, तब उसने उन्हें छोड़ दिया और स्वर्ग में उठा लिया गया। वहाँ, उस पहाड़ पर, जो यरूशलेम के सामने है, उसने उनसे कहा कि वे उन समयों या तारीखों को नहीं जान पाएंगे, जिन्हें पिता ने निर्धारित किया है, लेकिन उन्होंने उन्हें अपना अंतिम वादा दिया:

परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे। (प्रेरितों के काम 1:8)

तब वह चढ़ा, और एक बादल ने उसे उन के साम्हने से छिपा लिया। जब उन्होंने ध्यान से देखा, तो सफेद रंग के दो आदमी उनके पास खड़े हो गए और उनसे कहा कि यह वही यीशु वापस आएगा जैसे उन्होंने उसे स्वर्ग में जाते देखा था।

पवित्र आत्मा के बारे में यीशु का वादा दस दिन बाद पिनतेकुस्त के दिन नाटकीय रूप से पूरा हुआ। वे पवित्र आत्मा से भरे हुए थे और जब पतरस ने उस दिन साहसपूर्वक प्रचार किया तो लगभग 3,000 लोगों ने विश्वास किया। चर्च तेजी से विकसित हुआ।

विश्वासियों ने घरों में मुलाकात की और मंदिर में पूजा भी की जब तक कि उत्पीड़न ने उनमें से कई को यरूशलेम से बाहर नहीं निकाल दिया। कई शहीदों में सबसे पहले, स्टीफन को शहर की दीवार के बाहर, मंदिर के पास पत्थर मारकर मार डाला गया था। वे जहाँ कहीं भी गए उन्होंने परमेश्वर के पुत्र यीशु का सुसमाचार सुनाया, और लोगों ने विश्वास किया।

उन्होंने नए विश्वासियों के लिए परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण होने के लिए प्रार्थना की। फिलिप्पुस ने सामरिया में बड़ी संख्या में प्रचार किया और सामर्थी रूप से प्रार्थना की, और तब पतरस और यूहन्ना ने आकर विश्वासियों पर हाथ रखा और पवित्र आत्मा उन पर भी उतरा। सामरियों को विश्वासियों में शामिल किया गया था।

शाऊल विश्वासियों को सता रहा था, लेकिन एक तेज रोशनी ने उसे अंधा कर दिया, और उसने यीशु को सीरिया के दमिश्क के रास्ते में उससे बात करते हुए सुना, जहाँ वह और अधिक विश्वासियों को सताने के लिए जा रहा था। उन विश्वासियों में से एक, हनन्याह ने शाऊल के लिए प्रार्थना की, जो तब चंगा हुआ और

आत्मा से भर गया। वह जल्दी से एक प्रभावी प्रचारक और मिशनरी बन गया, जिसका नाम बदलकर पॉल रखा गया, जिसे अन्यजातियों के लिए एक प्रेरित के रूप में जाना जाता है।

पीटर ने अंततः सख्त परंपराओं को तोड़ा और सेंचुरियन कॉर्नेलियस के घर में प्रचार किया। उसके सारे घराने ने विश्वास किया और जब पतरस उन्हें उपदेश दे रहा था, तब उन पर परमेश्वर का आत्मा उण्डेला गया। रोमी साम्राज्य में खुशखबरी फैलती रही।

उन आत्मा से भरे विश्वासियों ने यीशु के नाम पर चंगाई की आज्ञा देना और बुरी आत्माओं को बाहर निकालना सीखा। सीरिया में अन्ताकिया में बहु-राष्ट्रीय, बहु-नस्लीय चर्च में विश्वासियों को पहले ईसाई, मसीह-अनुयायी कहा जाता था।

कुछ विश्वासियों के पास यीशु या स्वर्गदूतों के दर्शन थे जैसा कि पौलुस ने किया था, या जैसा यूहन्ना ने पतमुस में कैद होने पर किया था। यूहन्ना ने हमारे लिए उन दर्शनों को यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन की पुस्तक में दर्ज किया, जो अब बाइबल की अंतिम पुस्तक है। इसमें ये प्रेरक खुलासे शामिल हैं:

और मैं ने उसे जो मुझ से बोल रहा था; देखने के लिये अपना मुंह फेरा; और पीछे घूम कर मैं ने सोने की सात दीवटें देखीं। और उन दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरुष को देखा, जो पांवों तक का वस्त्र पहिने, और छाती पर सुनहला पटुका बान्धे हुए था। उसके सिर और बाल श्वेत ऊन वरन पाले के से उज्ज्वल थे; और उस की आंखे आग की ज्वाला की नाई थी। और उसके पांव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्टी में तपाए गए हों; और उसका शब्द बहुत जल के शब्द की नाई था। और वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिए हुए था; और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी; और उसका मुंह ऐसा प्रज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है। जब मैं ने उसे देखा, तो उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा और उस ने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रख कर यह कहा, कि मत डर; मैं प्रथम और अन्तिम और जीवता हूं। मैं मर गया था, और अब देख; मैं युगानुयुग जीवता हूं; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं।

प्रकाशित वाक्य 1:12-18

फिर मैं ने स्वर्ग को खुला हुआ देखा; और देखता हूं कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वास योग्य, और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और लड़ाई करता है। उस की आंखे आग की ज्वाला हैं; और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं; और उसका एक नाम लिखा है, जिस उस को छोड़

और कोई नहीं जानता। और वह लोह से छिड़का हुआ वस्त्र पहिने है: और उसका नाम परमेश्वर का वचन है।

और स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है। और जाति जाति को मारने के लिये उसके मुंह से एक चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा। और उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु॥

प्रकाशित वाक्य 19:11-16

और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं। फिर उस ने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गई हैं, मैं अलफा और ओमिगा, आदि और अन्त हूं: मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंटमेंत पिलाऊंगा। जो जय पाए, वही इन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा।

प्रकाशित वाक्य 21:5-7

‘यह मैं हूं, यीशु, जिसने चर्चों के लिए इस गवाही के साथ अपने दूत को तुम्हारे पास भेजा है। मैं जड़ और दाऊद का वंशज हूं, जो भोर का चमकीला तारा है।’

मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा, कि तुम्हारे आगे कलीसियाओं के विषय में इन बातों की गवाही दे: मैं दाऊद का मूल, और वंश, और भोर का चमकता हुआ तारा हूं। और आत्मा, और दुल्हिन दोनों कहती हैं, आ; और सुनने वाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंटमेंत ले॥

प्रकाशित वाक्य 22:16-17

निष्कर्ष

Conclusion

यीशु का जीवन इतिहास की महान प्रेम कहानी है। इस संक्षिप्त पुस्तक का संक्षिप्त विवरण आपको इस महान सुसमाचार की ओर संकेत करता है कि यीशु कौन है और उसने क्या किया। उस कहानी को बाइबल में सबसे अच्छी तरह बताया गया है, परमेश्वर का प्रेरित वचन।

मुझे उम्मीद है कि यह संक्षिप्त टिप्पणी आपको फिर से उस ईश्वर-श्वासित जीवित शब्द की ओर इशारा करती है। जब मैंने इन सुसमाचारों की सुसंगत कहानी पर शोध किया तो इसने मुझे नई अंतर्दृष्टि प्रदान की।

कई लेखक लोकप्रिय पांच प्रेम भाषाओं पर चर्चा करते हैं: प्रतिज्ञान, सेवा, उपहार, समय और स्पर्श। यीशु ने इन सभी को विभिन्न तरीकों से प्रदर्शित किया।

उन्होंने विश्वास की पुष्टि की और प्रशंसा की, विशेष रूप से उपचार और सहायता के लिए उस पर विश्वास। उन्होंने प्रतिदिन सेवा की और अपने शिष्यों के पैर धोकर इसे नाटकीय रूप से दिखाया। उसने हमारे लिए अपना जीवन दिया और अंततः वह उन सभी को अनन्त जीवन देता है जो विश्वास करते हैं। अपने अनुयायियों के साथ उनके तीन साल के क्वालिटी टाइम ने उन्हें सेवा करने के लिए तैयार किया। उनके स्पर्श ने लोगों को शारीरिक और आध्यात्मिक उपचार और स्वतंत्रता प्रदान की।

यूहन्ना ने अपने सुसमाचार को लिखने के कारण को जिस तरह से सारांशित किया, मैं उससे प्यार करता हूँ: “यीशु ने अपने चेहलों के साम्हने और भी बहुत से चिन्ह दिखाए, जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।” (जॉन 20:31)

आपके लिए मेरी यही प्रार्थना है, मेरे पाठक। यहाँ मेरा प्रतिध्वनित सॉनेट है, जिसे पचास साल पहले लिखा गया था।

पाप आत्मा का पीछा करता है, और पूरे में व्याप्त है
जीवन के यहाँ रहते थे जहाँ हम, भय से बंधे हुए, प्रकट होने की स्वतंत्रता के लिए दूर-दूर तक शिकार करते हैं
ध्रुव से ध्रुव तक हमारे मन पर नियंत्रण है।

वह योग्य लक्ष्य मजाक लगता है। पाप चुरा लिया
हमारी आजादी प्रिय, छोड़ दिया दर्द और शोक करने के लिए
हर जीवन, एक मात्र दिल का दर्द, या सिसकना, या आंसू,
जैसे खोया हुआ तिल, अंधा, अपने छेद में गंदा।
परमेश्वर के प्रेम ने मसीह के माध्यम से पाप से लड़ने और उस पर विजय पाने के लिए कदम रखा जो
लहलुहान होकर मर गया और उन सभी के सर्वोच्च प्रमुख के रूप में उठ खड़ा हुआ जो उसे प्रभु का दावा करते
हैं। हमारा पतन, कोलाहल और शोर उसी में समाप्त हो सकता है। हम जीतेंगे
भय से मुक्ति, मुक्ति, मृतकों में से जीवन, पित्त से असीम, उसकी पुकार के उत्तर में।

चर्चागत प्रश्न

Discussion Questions

अध्याय 1: जन्म और लड़कपन

1. आपकी पसंदीदा क्रिसमस कैरोल्स में से एक क्या है और क्यों?
2. क्रिसमस की कहानी के बारे में आपको सबसे ज्यादा आश्चर्य क्या है?
3. यीशु के लड़कपन और यौवन के बारे में आपको क्या चुनौती है?

आप क्या चाहेंगे कि लोग आपके लिए प्रार्थना करें?

अध्याय 2: मंत्रालय शुरू

1. आपको क्या लगता है कि यीशु की सार्वजनिक सेवकाई उसके बपतिस्मे के बाद क्यों शुरू हुई?
2. यीशु की सेवकाई के बारे में आपको सबसे अधिक कौन सी पहली लगती है? (जैसे आत्माओं को बाहर निकालना)
3. यीशु का चेला होने के बारे में आपको क्या चुनौतियाँ हैं?

आप किस प्रार्थना को प्राप्त करने की सराहना करेंगे?

अध्याय 3: पहले से दूसरे फसह तक

1. आपको क्यों लगता है कि यूहन्ना 3:16 इतना लोकप्रिय और प्रसिद्ध क्यों है?
2. यीशु की प्रारंभिक सेवकाई में आप किसे पहचान सकते हैं (जैसे नीकुदेमुस, सामरी महिला, शिष्य, धार्मिक नेता)?
3. आपको क्या लगता है कि यीशु के चेलों ने क्या चुनौती दी?

अभी-अभी कौन सी प्रार्थना आपको प्रोत्साहित करेगी?

अध्याय 4: दूसरे से तीसरे फसह तक

1. यीशु के बारे में आपको सबसे ज्यादा क्या प्रभावित करता है?
2. यीशु के बारे में आपको सबसे ज्यादा क्या चुनौती है?

3. यीशु के बारे में आपको सबसे अधिक आश्चर्य किस बात से हुआ?

अभी-अभी कौन-सी प्रार्थना आपकी मदद करेगी?

अध्याय 5: पिन्तेकुस्त का फसह

1. सूली पर चढ़ाए जाने के बारे में आपको सबसे अधिक आश्चर्य किस बात से हुआ?

2. यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में आपको क्या मदद या चुनौती देता है?

3. पवित्र आत्मा के बारे में आपकी सबसे अधिक रुचि किसमें है?

अब आप क्या प्रार्थना समर्थन चाहेंगे?

परिशिष्ट 1

Appendix 1

यरूशलेम त्योहारों के साथ कालक्रम

यीशु का जन्म और लड़कपन

विवरण - स्थान - पवित्रशास्त्र

मसीह की दिव्यता। यूहन्ना 1 अध्याय 1 से 5

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की जन्म घोषणा - यरूशलेम - लूका 1 अध्याय 5 से 25

कुँवारी मरियम का विवाह - नासरत - मत्ती 1 अध्याय 18, लूका 1 अध्याय 27

यीशु की जन्म घोषणा - नासरत - लूका 1 अध्याय 26 से 38 लगभग 120 मील (190 किमी) - लगभग दो सप्ताह की यात्रा

एलिजाबेथ के साथ मैरी की मुलाकात - यहूदिया - ल्यूक 1 अध्याय 39-55 लगभग 120 मील - लगभग दो सप्ताह की यात्रा

नासरत में उसकी वापसी - नासरत - ल्यूक 1 अध्याय 56

जोसेफ का सपना - नासरत - मैथ्यू 1 अध्याय 20-25

जॉन द बैपटिस्ट का जन्म और बचपन - यहूदिया - ल्यूक 1 अध्याय 57-80 लगभग 90 मील - नासरत से लगभग दस दिनों की यात्रा, और यरूशलेम के 5 मील (8 किमी) दक्षिण में

यीशु उत्पत्ति - बेतलेहेम - लूका 2 अध्याय 1 से 7

चरवाहों की भक्ति - बेतलेहेम - लूका 2 अध्याय 8 से 16

खतना - बेतलेहेम - मत्ती 1 अध्याय 25, लूका 2 अध्याय 21 लगभग 5 मील - लगभग आधे दिन की यात्रा

और शुद्धिकरण - यरूशलेम - लूका 2 अध्याय 22-29

वंशावली - मत्ती 1 अध्याय 1 से 17, लूका 3 अध्याय 23 से 38

लगभग 5 मील - लगभग आधे दिन की यात्रा

मागी द्वारा आराधना - बेथलहम - मैथ्यू 2 अध्याय 1-12

निर्गमन - मिस्र - मत्ती 2 अध्याय 13-15

बच्चों का नरसंहार - बेथलहम - मैथ्यू 2 अध्याय 16-18 लगभग 100 मील 160 किमी - लगभग दस दिनों की यात्रा 3

नासरत पर लौटें - नासरत - मत्ती 2 अध्याय 19 से 23, लूका 2 अध्याय

यीशु का बचपन - नासरत - लूका 2 अध्याय 40

लगभग 90 मील 145 किलोमीटर - लगभग दस दिन की यात्रा

मंदिर में शिक्षकों के साथ - यरूशलेम - लूका 2 अध्याय 41 से 50

लगभग 90 मील - लगभग दस दिनों की यात्रा

यीशु का यौवन - नासरत - लूका 2 अध्याय 51 से 52

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से लेकर पहले फसह तक

From John the Baptist to the First Passover

विवरण - स्थान - पवित्रशास्त्र

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की सेवकाई - बेथ बेराह - मत्ती 3 अध्याय 1 से 4, मरकुस 1 अध्याय 1 से 8, लूका 3 अध्याय 1 से 6, यूहन्ना 1 अध्याय 6 से 15

यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा - मेम्ना - मत्ती 3 अध्याय 5, मरकुस 1 अध्याय 5, लूका 3 अध्याय 7

मसीह के लिए बपतिस्मा देने वाले की पहली गवाही - मेम्ना - मत्ती 3:11-12, मरकुस 1:7-8, लूका 3:15-18

यूहन्ना द्वारा यीशु का बपतिस्मा - मेम्ना - मत्ती 3:13-17, मरकुस 1:9-11, लूका 3:21-22

यहूदिया के जंगल में यीशु की परीक्षा - यहूदिया - मत्ती 4:1-11, मरकुस 1:12-13, लूका 4:1-3

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की दूसरी गवाही - मेम्ना - यूहन्ना 1 अध्याय 19-35

प्रथम चेलों की बुलाहट - मेम्ना - यूहन्ना 1 अध्याय 35-51

गलील के काना में पहला चमत्कार - गलील का काना - जॉन 2 अध्याय 1 से 11

कफ़्र नहूम का दौरा - कफ़्र नहूम - जॉन 2 अध्याय 12

पहला फसह: मंदिर की सफाई - यरूशलेम - यूहन्ना 2 अध्याय 13-23

नीकुदेमुस के साथ बातचीत - यरूशलेम - यूहन्ना 3 अध्याय 1 से 21



अंतरिक्ष से इज़राइल का एक दृश्य

गलील सागर से मृत सागर के उत्तरी सिरे के पूर्व, यरदन घाटी से यरूशलेम में मृत सागर तक

पहले फसह से दूसरे फसह तक

From the First Passover to the Second Passover

विवरण - स्थान - पवित्रशास्त्र

यूहन्ना की अंतिम गवाही - ऐनोन - यूहन्ना 3 अध्याय 22 से 36

यीशु की सामरिया यात्रा - सोचर - यूहन्ना 4 अध्याय 1-42

गलील के काना को लौटें - गलील के काना - जॉन 4 अध्याय 43-46

धर्मी मनुष्य के पुत्र की चंगाई - गलील का काना - यूहन्ना 4 अध्याय 46-54

यरूशलेम का एक संक्षिप्त दौरा - यरूशलेम - यूहन्ना 5 अध्याय 1-47

बेथसैदा के कुंड में चमत्कार - यरूशलेम - यूहन्ना 5 अध्याय 1 से 47

जॉन द बैपटिस्ट जेल में - मैथ्यू 4, 12, 17, मार्क 1, 14, 15

यीशु गलील में प्रचार करता है - गलील - लूका 4 अध्याय 14,15

नासरत में यीशु - नासरत - मरकुस 6:1, लूका 4:15-30

यीशु कफ़ नहूम - कफ़ नहूम - मार्क 4 अध्याय 13-16, ल्यूक 4 अध्याय 31 . में उपदेश देते हैं

अन्द्रियास, पतरस, याकूब और यूहन्ना की बुलाहट - अविश्वास - मत्ती 4:18-22, मरकुस 1:16-20, लूका 5:1-11

मछलियों का चमत्कारी मसौदा - अविश्वास - लूका 5 अध्याय 1 से 11

दुष्टात्मा का चंगाई - अविश्वास - मरकुस 1 अध्याय 23-27, लूका 4 अध्याय 33-36

पतरस की सास की चंगाई - अविश्वास - मत्ती 8 अध्याय 14,15, मरकुस 1 अध्याय 29-31, लूका 4 अध्याय 38, 39

सबसे बीमारों की चंगाई - अविश्वास - मत्ती 8 अध्याय 16-17, मरकुस 1 अध्याय 32-34, लूका 4 अध्याय 40-41

एकांत स्थान में एकांत में प्रार्थना - गलील - मरकुस 1 अध्याय 35, लूका 4 अध्याय 42

गलील की परिक्रमा - गलील - मरकुस 1 अध्याय 35-39, लूका 4 अध्याय 42-44

कोढ़ी की चमत्कारी चंगाई - गलील - मत्ती 8 अध्याय 1-4, मरकुस 1 अध्याय 40-45, लूका 5 अध्याय 12-16

एकांत स्थान में एकांत में प्रार्थना - गलील - मरकुस 1 अध्याय 45, लूका 5 अध्याय 16

लकवाग्रस्त का चमत्कारी उपचार - अविश्वास - मत्ती 9 अध्याय 1-8, मरकुस 2 अध्याय 1-12, लूका 5 अध्याय 18-26

आमंत्रण में मैथू (लेवी का) प्रवचन - कुफ्र नहूम - मैथू 9 अध्याय 9 से 17, मार्क 2 अध्याय 13 से 22, ल्यूक 5 अध्याय 27 से 39

चेले मकई के कान तोड़ते हैं - गलील - मत्ती 12:1-8, मरकुस 2:23-28, लूका 6:1-5

मुरझाया हुआ हाथ चंगा हुआ - अविश्वास - मत्ती 12 अध्याय 9-14, मरकुस 3 अध्याय 1-6, लूका 6 अध्याय 6-11

सुनसान जगह में एकांत में प्रार्थना - गलील - लूका 6 अध्याय 12

बारह शिष्यों की पुकार - हटिन की पहाड़ी? - मत्ती 10 अध्याय 2-4, मरकुस 3 अध्याय 13-19, लूका 6 अध्याय 13-16

पर्वत पर उपदेश - हटिन की पहाड़ी? - मत्ती 5 अध्याय 7 से 29, लूका 6 अध्याय 17 से 49

रॉक एंड सैंड पर सदन का दृष्टांत - हटिन की पहाड़ी? - मत्ती 7 अध्याय 24 से 29, लूका 6 अध्याय 47 से 49

सूबेदार के बेटे की चिकित्सा - हटिन की पहाड़ी? - मत्ती 8 अध्याय 5 से 13, लूका 7 अध्याय 1 से 10

नैन की विधवा के पुत्र की परवरिश - नैन - लूका 7 अध्याय 11-17

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सन्देश - अविश्वास - मत्ती 11 अध्याय 2 से 19, लूका 7 अध्याय 18 से 35

यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में बताया - अविश्वास - मत्ती 11 अध्याय 2 से 19, लूका 7 अध्याय 18 से 35

पापी स्त्री - अविश्वास? - लूका 7 अध्याय 36 से 50

दो देनदारों का दृष्टान्त - अविश्वास? - लूका 7 अध्याय 41-42

बारह चेलों के साथ गलील की यात्रा - गलील - लूका 8 अध्याय 1-3

दानव के कब्जे में - अविश्वास - मत्ती 12 अध्याय 22 . का उपचार

पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा - निन्दा - मत्ती 12 अध्याय 24 से 37, मरकुस 3 अध्याय 22 से 30

अशुद्ध आत्मा - निन्दा - मत्ती 12 अध्याय 43-46

यीशु के रिश्तेदार - अविश्वास - मत्ती 12 अध्याय 46, मरकुस 3 अध्याय 31

बोने वाले का दृष्टान्त - गलील - मत्ती 13 अध्याय 1-9, 18-23, मरकुस 4 अध्याय 1, 14-20, लूका 8 अध्याय 4, 11-15

दृष्टान्त: अच्छे बीज का - गलील - मत्ती 13 अध्याय 24

दृष्टान्त: राई का - गलील - मत्ती 13:31, मरकुस 4:30

दृष्टान्त: खमीर का - गलील - मत्ती 13 अध्याय 33, लूका 13 अध्याय 20-21

दृष्टान्त: दीपक का - गलील - मत्ती 5 अध्याय 15, मरकुस 4 अध्याय 21, लूका 8 अध्याय 16

दृष्टान्त: दीपक का - गलील - मत्ती 5 अध्याय 15, मरकुस 4 अध्याय 21, लूका 11 अध्याय 33

दृष्टान्त: खजाने का - गलील - मत्ती 13 अध्याय 44

दृष्टान्त: मोती - गलील - मत्ती 13 अध्याय 45

दृष्टान्त: जाल का - गलील - मत्ती 13 अध्याय 47

दृष्टान्त: बीज गुप्त में उगता है - गलील - मार्क 4 अध्याय 26-29

यीशु ने तूफान को रोक दिया - गलील की झील - मत्ती 8 अध्याय 24-27, मरकुस 4 अध्याय 37-41, लूका 8 अध्याय 23-25

गिडेरिन राक्षसों को मुक्त किया जाता है - गिडेरिन का देश - मैथ्यू 8 अध्याय 28-34 मार्क 5 अध्याय 1-15, ल्यूक 8 अध्याय 27-35

दृष्टान्त: दूल्हा - अविश्वास - मत्ती 9 अध्याय 15

दृष्टान्त: खाली कपड़े का पैच - अविश्वास - मत्ती 9 अध्याय 16, मरकुस 2 अध्याय 21, लूका 5 अध्याय 36

दृष्टान्त: पुरानी शरारत में नया - अविश्वास - मत्ती 9 अध्याय 17, मरकुस 2 अध्याय 22, लूका 5 अध्याय 37-38

लहू की समस्या वाली स्त्री - गेनेसारेट - मत्ती 9 अध्याय 18, मरकुस 5 अध्याय 22, लूका 8 अध्याय 41

याईर की बेटी का पुनरुत्थान - अविश्वास - मत्ती 9 अध्याय 18, मरकुस 5 अध्याय 22, लूका 8 अध्याय 41

दो अंधे चंगे हुए - अविश्वास - मत्ती 9 अध्याय 27-30

एक गूंगा दानव बाहर निकाला जाता है - निन्दा - मत्ती 9 अध्याय 32-33

बारह प्रेरितों का मिशन - अविश्वास - मत्ती 10 अध्याय 1, मरकुस 6 अध्याय 7-12, लूका 9 अध्याय 1-6

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु - प्रकाशितवाक्य - मत्ती 14:1-12, मरकुस 6:14-29, लूका 9:7

पांच हजार खिला रहे हैं। दूसरे फसह के लिए भीड़ का इकट्ठा होना - बेथसैदा - मत्ती 14 अध्याय 13-21, मरकुस 6 अध्याय 30-44, लूका 9 अध्याय 12-17, यूहन्ना 6 अध्याय 1-13

यीशु पानी पर चलता है - गलील का सागर - मत्ती 14:25, मरकुस 6:48, यूहन्ना 6:19

जीवन की रोट्टी पर चर्चा - अविश्वास - मैथ्यू 14 अध्याय 34, जॉन 6 अध्याय 26-70

दूसरे से तीसरे फसह तक

From the Second Passover to the Third Passover

विवरण - स्थान - पवित्रशास्त्र

शास्त्रियों और फरीसियों का विरोध - अविश्वास - मत्ती 1 अध्याय 51

प्रदूषण पर चर्चा - अविश्वास - मैथ्यू 15 अध्याय 2-20, मार्क 7 अध्याय 1-23

कनानी महिला की बेटी की चंगाई - तुरहियां - मत्ती 15:21-29, मरकुस 7:24-30

बहरे और गूंगे की चंगाई - सोर, सीदोन - मरकुस 7 अध्याय 32

कई बीमारियों का इलाज। बारह - मैथ्यू 15 अध्याय 30-31

द फीडिंग ऑफ द फोर थाउजेंड - गेनेसार्ट - मैथ्यू 15:32-39, मार्क 8:1-9

फरीसियों के खमीर का दृष्टान्त - गेनेसरेट - मत्ती 16 अध्याय 1-12, मरकुस 8 अध्याय 14-22

द हीलिंग ऑफ़ द ब्लाइंड मैन - बेथसैदा - मार्क 8 अध्याय 23-27

पतरस का मसीह का अंगीकार - कैसरिया फिलिप्पी - मत्ती 16:13-21, मरकुस 8:27-30

प्रथम क्लेश भविष्यवाणी - कैसरिया फिलिप्पी - मत्ती 16 अध्याय 21-28, मरकुस 8 अध्याय 31-38, लूका 9 अध्याय 22-27

परिवर्तन - माउंट हेमोन - मैथ्यू 17 अध्याय 1-8, मार्क 9 अध्याय 2-8, ल्यूक 9 अध्याय 28-36

दानव के कब्जे वाले बच्चे को चंगा करना - माउंट हेमोन - मैथ्यू 17:14-21, मार्क 9:14-27, ल्यूक 9:37-42

दूसरा क्लेश भविष्यवाणी - माउंट हेमोन - मैथ्यू 17:22-23, मार्क 9:31, ल्यूक 9:43-44

मछली के मुंह में सिक्का - अविश्वास - मैथ्यू 17 अध्याय 27

नम्रता का पाठ - अविश्वास - मत्ती 18 अध्याय 1 से 14, मरकुस 9 अध्याय 33 से 37, लूका 9 अध्याय 46 से 48

क्षमा का पाठ - अविश्वास - मत्ती 18 अध्याय 15, मरकुस 9 अध्याय 43

आत्म-अस्वीकार का पाठ - अविश्वास - मत्ती 18 अध्याय 18

बेरहम सेवक का दृष्टान्त - अविश्वास - मत्ती 18 अध्याय 23 से 35

सामरिया से होते हुए यरूशलेम की यात्रा - सामरिया - लूका 9 अध्याय 51-52

सामरियों से ईर्ष्या - सामरिया - लूका 9 अध्याय 53

गड़गड़ाहट के पुत्रों का क्रोध - सामरिया - लूका 9 अध्याय 54-56

झोपड़ियों का पर्व - यरूशलेम - यूहन्ना 7 अध्याय 2-10

बातचीत - यरूशलेम - यूहन्ना 7 अध्याय 10 से 46

मसीह को गिरफ्तार करने के लिए भेजे गए अधिकारी - यरूशलेम - यूहन्ना 7 अध्याय 30, 46

व्यभिचार - यरूशलेम - यूहन्ना 8 अध्याय 3

बातचीत - जेरूसलम - यूहन्ना 8 अध्याय 12

मसीह को पत्थरवाह करने की धमकी - यरूशलेम - यूहन्ना 8 अध्याय 59

अंधे आदमी को चंगा करना और बोलना - यरूशलेम - यूहन्ना 9 अध्याय 1

क्राइस्ट द गेट, द गुड शेफर्ड - जॉन 10 अध्याय 1

नवीनीकरण का पर्व - यरूशलेम - यूहन्ना 10 अध्याय 22-42

यरूशलेम से प्रस्थान।

सत्तर का मिशन - यहूदिया - लूका 10 अध्याय 1-16

सत्तर की वापसी - यहूदिया - लूका 10 अध्याय 17-24

अच्छे सामरी का दृष्टान्त - यहूदिया - लूका 10 अध्याय 30-37

मार्था, विजिटिंग मैरी हाउस - बेथानी - लूका 10 अध्याय 38-42

यीशु अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाता है - यहूदिया - लूका 11 अध्याय 1 से 13

महत्वपूर्ण मित्र का दृष्टान्त - यहूदिया - लूका 11 अध्याय 5-8

दानव-कब्जे वाले मूक की चंगाई - मत्ती 12:22-45, लूका 11:14

फरीसियों का अहंकार डांटा - यहूदिया - मत्ती 12:22-45, लूका 11:14-26

संवाद: पश्चाताप नीनवे - यहूदिया - मत्ती 12:41, लूका 11:29-36

पंछी और फूल प्रदान करना - यहूदिया - लूका 12 अध्याय 1-12

धनी मूर्ख का दृष्टान्त - यहूदिया - लूका 12 अध्याय 13-12

चौकस सेवकों का दृष्टान्त - यहूदिया - लूका 12 अध्याय 35-40

बुद्धिमान अध्यक्ष का दृष्टान्त - यहूदिया - लूका 12 अध्याय 42-48

मारे गए गैलीलियन - यहूदिया - लूका 13 अध्याय 1-5

बंजर अंजीर का पेड़ - यहूदिया - लूका 13 अध्याय 6-9

दुर्बल स्त्री की चंगाई - यहूदिया - लूका 13 अध्याय 10-17

यरूशलेम में नवीनीकरण का पर्व - यरूशलेम - यूहन्ना 10 अध्याय 22-30

यीशु को पत्थर मारने का प्रयास - जेरूसलम - यूहन्ना 10 अध्याय 31

यीशु ने जॉर्डन को पार किया - पेरिया - यूहन्ना 10 अध्याय 40

क्या कुछ लोगों को बचाना है? - पेरिया - लूका 13 अध्याय 23 से 30

हेरोदेस को संदेश - पेरिया - लूका 13 अध्याय 31 से 33

कुष्ठ रोग से ग्रसित मनुष्य की चंगाई - पेरिया - लूका 14 अध्याय 1-6

महान भोज का दृष्टान्त - पेरिया - लूका 14 अध्याय 15-24

किले का दृष्टान्त, योद्धा राजा - पेरिया - लूका 14 अध्याय 28 से 33

खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त - दृष्टान्त - मत्ती 18 अध्याय 12,13, लूका 15 अध्याय 1-7

खोये हुए सिक्के का दृष्टान्त - पेरिया - लूका 15 अध्याय 8-10

उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त - पेरिया - लूका 15 अध्याय 11 से 32

क्रूर ओवरसियर का दृष्टान्त - पेरियाह - लूका 16 अध्याय 1 से 13

धनी मनुष्य और लाजर का दृष्टान्त - पेरियाह - लूका 16 अध्याय 19 से 31

लाभहीन सेवकों का दृष्टान्त - पेरिया - लूका 17 अध्याय 7-10

लाजर की बीमारी - बेथानी - यूहन्ना 11 अध्याय 1 से 10

यीशु पेरिया से बेथानी को जाता है - पेरिया - यूहन्ना 11 अध्याय 11-16

लाजर का चमत्कारी उत्थान - बेथानी - जॉन 11 अध्याय 17-46

परिषद: कैफा की सलाह - यरूशलेम - यूहन्ना 11 अध्याय 47-53

यीशु एप्रैम के नगर में रहता था - एप्रैम - यूहन्ना 11 अध्याय 54

यरूशलेम की अंतिम यात्रा - सामरिया की सीमा - मत्ती 19 अध्याय 1, मरकुस 10 अध्याय 1, लूका 17 अध्याय

11

दस कोढ़ियों का उपचार - सामरिया की सीमा - लूका 17 अध्याय 12-19

क्रूर न्यायी का दृष्टान्त - सामरिया की सीमा - लूका 18 अध्याय 1 से 8

दृष्टान्त: फरीसी और कर संग्रहकर्ता - सामरिया की सीमा - लूका 18:9-14

तलाक का प्रश्न - सामरिया की सीमा - मैथ्यू 19 अध्याय 3-12, मार्क 10 अध्याय 2-12

मसीह छोटे बच्चों को आशीर्वाद देता है - सामरिया की सीमा - मैथ्यू 19 अध्याय 13-15, मार्क 10 अध्याय 13-16, ल्यूक 18 अध्याय 15-17

अमीर युवा शासक - सामरिया की सीमा - मैथ्यू 19 अध्याय 16-22, मार्क 10 अध्याय 17-22, ल्यूक 18 अध्याय 18-23

दृष्टान्त: दाख की बारी में मजदूर - सामरिया की सीमा - मैथ्यू 20 अध्याय 1-16

तीसरे क्लेश की भविष्यवाणी - सामरिया की सीमा - मैथ्यू 20:17-19, मार्क 10:32-34, ल्यूक 18:31-34

याकूब और यूहन्ना की याचिका - सामरिया की सीमा - मत्ती 20:20-28, मरकुस 10:35-45

ब्लाइंड बार्थोलोम्यू का उपचार - जेरिको के पास - मैथ्यू 20: 29-34, मार्क 10: 46-52, ल्यूक 18: 35-43

जक्कई के घर में यीशु - यरीहो - लूका 19 अध्याय 1 से 10

मागी का दृष्टान्त - जेरिको - ल्यूक 19 अध्याय 11 से 28



जेरूसलम का पुराना शहर आज टेंपल माउंट सेंटर है

किद्रोन घाटी के नीचे अग्रभूमि में सिष्योन का पुराना शहर, पूर्व में दाहिनी ओर जैतून का पर्वत, उत्तर पश्चिम में बाईं ओर कलवारी के बाहर पुराना शहर।

पवित्र सप्ताह: संघर्ष

Holy Week: Confrontation

विवरण - स्थान - पवित्रशास्त्र

साइमन के घर में भोजन - बेथानी - मैथ्यू 26 अध्याय 6-13, मार्क 14 अध्याय 3-9, जॉन 12 अध्याय 1-9

मरियम ने यीशु का अभिषेक किया - बेथानी - मत्ती 26 अध्याय 7-13, मरकुस 14 अध्याय 3-8, यूहन्ना 12 अध्याय 3-8

शहर में विजयी प्रवेश - यरूशलेम - मत्ती 21 अध्याय 1-11, मरकुस 11 अध्याय 1-10, लूका 19 अध्याय 29-44, यूहन्ना 12 अध्याय 12-19

मंदिर दर्शन - जेरूसलम - मत्ती 11 अध्याय 11

बेथानी से प्रस्थान - बेथानी - मैथ्यू 11 अध्याय 11

बंजर अंजीर के पेड़ का मुरझाना - जैतून - मत्ती 21:18-19, मरकुस 11:12-14

मंदिर की दूसरी सफाई - यरूशलेम - मत्ती 21:12-17, मरकुस 11:15-19, लूका 19:45-48

बेथानी से प्रस्थान - बेथानी - मत्ती 21 अध्याय 17, मरकुस 11 अध्याय 19

अंजीर के पेड़ का पाठ - जैतून - मत्ती 21:20-22, मरकुस 11:20-25

मंदिर में उपदेश - यरूशलेम - मरकुस 11 अध्याय 26

शासकों का प्रश्न - यरूशलेम - मत्ती 21:23-27, मरकुस 11:27-33, लूका 20:1-8

दो पुत्रों का दृष्टान्त - यरूशलेम - मत्ती 21:28-32

दुष्ट किसान का दृष्टान्त - यरूशलेम - मत्ती 21:33-46, मरकुस 12:1-12, लूका 20:9-19

शादी के परिधान का दृष्टान्त - यरूशलेम - मैथ्यू 22 अध्याय 1-14

सूक्ष्म प्रश्न:

1. फरीसी - श्रद्धांजलि - यरूशलेम - मत्ती 22:15-22, मरकुस 12:13-17, लूका 20:20-26

2. सद्दूकी - पुनरुत्थान - यरूशलेम - मत्ती 22:23-33, मरकुस 12:18-27, लूका 20:27-39

3. शास्त्री - महान आज्ञा - यरूशलेम - मत्ती 22:34-40, मरकुस 12:28-34

हमारे प्रभु का उत्तर - यरूशलेम - मत्ती 22:41-46, मरकुस 12:35-37, लूका 20:41-44

शास्त्रियों और फरीसियों द्वारा निर्दा - यरूशलेम - मत्ती 23:13-33

विधवा की पूंछ - यरूशलेम - मरकुस 12 अध्याय 41-44, लूका 21 अध्याय 1-4

यूनानियों का आगमन - यरूशलेम - यूहन्ना 12 अध्याय 20-36

जैतून के पहाड़ पर प्रस्थान - जैतून - मत्ती 24 अध्याय 1-3, मरकुस 13 अध्याय 1-3

भविष्यवाणी 1: यरूशलेम का विनाश - जैतून - मत्ती 24:3-28, मरकुस 13:3-23, लूका 21:5-24

अंजीर के पेड़ और सभी पेड़ों का दृष्टान्त - जैतून - मत्ती 24:32-33, मरकुस 13:28-29, लूका 21:29-32

भविष्यवाणी 2: दूसरा आगमन - जैतून - मत्ती 24:28-51, मरकुस 13:23-37, लूका 21:24-36

गृहस्थ का दृष्टान्त - जैतून - मरकुस 13 अध्याय 34

दृष्टान्त:- दस कुँवारियाँ-जैतून-मत्ती 25 अध्याय 1 से 13

दृष्टान्त:- प्रतिभा - जैतून - मैथ्यू 25 अध्याय 14 से 30

दृष्टान्त:- भेड़ और बकरी - जैतून - मैथ्यू 25 अध्याय 31 से 46

परिषद में महासभा - यरूशलेम - मत्ती 26 अध्याय 3-5, मरकुस 14 अध्याय 1-2, लूका 22 अध्याय 1-2

गद्दार का समझौता - यरूशलेम - मत्ती 26 अध्याय 14-16, मरकुस 14 अध्याय 10-11, लूका 22 अध्याय 3-6

अंतिम खाना

The Last Supper

फसह की तैयारी - यरूशलेम - मत्ती 26:17-19, मरकुस 14:12-16, लूका 22:7-13

प्रेरितों के पैर धोना - यरूशलेम - यूहन्ना 13 अध्याय 1 से 17

रोटी तोड़ना - यरूशलेम - मत्ती 26 अध्याय 26, मरकुस 14 अध्याय 22, लूका 22 अध्याय 19

तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा” - यरूशलेम - मत्ती 26 अध्याय 21, मरकुस 14 अध्याय 18, लूका 22 अध्याय 21, यूहन्ना 13 अध्याय 21

क्या वह मैं हूँ? - यरूशलेम - मत्ती 26:22-25, मरकुस 14:19

रोटी देना - यरूशलेम - यूहन्ना: 13 अध्याय 26-27

यहूदा इस्करियोती का प्रस्थान - यरूशलेम - यूहन्ना 13 अध्याय 30

पतरस ने चेतावनी दी - यरूशलेम - मत्ती 26 अध्याय 34, मरकुस 14 अध्याय 30, लूका 22 अध्याय 34, यूहन्ना 13 अध्याय 38

कप का आशीर्वाद - जेरूसलम - मैथ्यू 26 अध्याय 27-28, मार्क 14 अध्याय 23-24, ल्यूक अध्याय 17

भोज के बाद प्रवचन - यरूशलेम - यूहन्ना 14 अध्याय 1-16 अध्याय 34

अपने प्रेरितों के लिए मसीह की प्रार्थना - यरूशलेम - यूहन्ना 17 अध्याय 1-17 अध्याय 26

गीत - यरूशलेम - मत्ती 26 अध्याय 30, मरकुस 14 अध्याय 26



पृष्ठभूमि में टेंपल माउंट की पश्चिमी दीवार और पूर्व में जैतून का पहाड़ है

गतसमनी और मुकदमा

Gethsemane and Trials

पीड़ा - गतसमनी - मत्ती 26 अध्याय 37, मरकुस 14 अध्याय 33, लूका 22 अध्याय 39, यूहन्ना 18 अध्याय 1

तीन बार दोहराई जाने वाली प्रार्थना - गतसमनी - मत्ती 26:39-44, मरकुस 14:36-39, लूका 22:42

लहू का पसीना और एंजेलिक समर्थन - गेथसेमेन - लूका 22 अध्याय 43-44

प्रेरितों की नींद - गतसमनी - मत्ती 26 अध्याय 40-45, मरकुस 14 अध्याय 37-41, लूका 22 अध्याय 45-46

यहूदा द्वारा धोखा दिया गया - गतसमनी - मत्ती 26 अध्याय 47 से 50, मरकुस 14 अध्याय 34 और 44, लूका 22 अध्याय 47 यूहन्ना 18 अध्याय 2 से 5

पतरस ने मलखुस को हराया - गतसमनी - मत्ती 26 अध्याय 51, मरकुस 14 अध्याय 47, लूका 22 अध्याय 50, यूहन्ना 18 अध्याय 10

यीशु ने टिड्डी का कान चंगा किया - गतसमनी - लूका 22 अध्याय 51

यीशु के चेले उसे छोड़ दें - गतसमनी - मत्ती 26:56, मरकुस 14:50

यीशु को हन्ना ले जाया गया - यरूशलेम - यूहन्ना 18 अध्याय 12-13

कैफा द्वारा यीशु की परीक्षा - यरूशलेम - मत्ती 26 अध्याय 57, मरकुस 14 अध्याय 53, लूका 22 अध्याय 54, यूहन्ना अध्याय 15

पतरस यीशु का अनुसरण करता है - यरूशलेम - मत्ती 26 अध्याय 58, मरकुस 14 अध्याय 54, लूका 22 अध्याय 55, यूहन्ना 18 अध्याय 15

महायाजक का स्वीकारोक्ति - यरूशलेम - मत्ती 26:63, मरकुस 14:61

यीशु ने निंदा की, पीटा, ठट्ठा किया - यरूशलेम - मत्ती 26 अध्याय 66-67, मरकुस 14 अध्याय 64-65, लूका 22 अध्याय 63-65

पतरस का मसीह का इनकार - जेरूसलम - मैथ्यू 26 अध्याय 69-75, मार्क 14 अध्याय 66-72, ल्यूक 22 अध्याय 54-62, जॉन 18 अध्याय 17-27

प्लेटो से पहले यीशु - यरूशलेम - मत्ती 27 अध्याय 1-2, मरकुस 15 अध्याय 1, लूका 23 अध्याय 1, यूहन्ना 18 अध्याय 28

यहूदा पश्चाताप - यरूशलेम - मत्ती 27 अध्याय 3

प्लेटो लोगों के सामने आया - जेरूसलम - यूहन्ना 18 अध्याय 29

प्लेटो ने यीशु से अकेले में बात की - जेरूसलम - यूहन्ना 18 अध्याय 33

प्लेटो ने उसे कोड़े मारने का आदेश दिया - यरूशलेम - मत्ती 27:26, मरकुस 15:15, यूहन्ना 19:1

यीशु ने काँटों का ताज पहनाया - यरूशलेम - मत्ती 27:29, मरकुस 15:17, यूहन्ना 19:2

इस मनुष्य को देख” - यरूशलेम - यूहन्ना 19 अध्याय 5

यीशु ने औपचारिक रूप से आरोप लगाया - यरूशलेम - मत्ती 27 अध्याय 11, मरकुस 15 अध्याय 2, लूका 23 अध्याय 2

यीशु को प्लेटो ने हेरोदेस के पास भेजा - यरूशलेम - लूका 23 अध्याय 6-11

यीशु का मज़ाक उड़ाया, बैंगनी रंग के कपड़े पहने - यरूशलेम - लूका 23 अध्याय 6-11

अपने राजा को निहारना” - यरूशलेम - यूहन्ना 19 अध्याय 14

प्लेटो उसे रिहा करना चाहता है - जेरूसलम - मत्ती 27 अध्याय 15, मरकुस 15 अध्याय 6, लूका 23 अध्याय 17, यूहन्ना 19 अध्याय 12

प्लेटो की पत्नी का संदेश - जेरूसलम - मत्ती 27 अध्याय 19

प्लेटो ने हाथ धोए - जेरूसलम - मत्ती 27 अध्याय 24

प्लेटो ने बरअब्बा को रिहा किया - जेरूसलम - मैथ्यू 27 अध्याय 26

पीलातुस यीशु को सूली पर चढ़ाए जाने के लिए प्रस्तुत करता है - यरूशलेम - मत्ती 27:26, मरकुस 15:15, लूका 23:25, यूहन्ना 19:16

सूली पर चढ़ाया

Crucifixion

शमौन प्राचीन क्रूस को उठाये हुए - यरूशलेम - मत्ती 27 अध्याय 32, मरकुस 15 अध्याय 21, लूका 23 अध्याय 26

वे यीशु को सिरका और पित्त देते हैं - गिलगित - मैथ्यू 27 अध्याय 34, मरकुस 15 अध्याय 23 ल्यूक 23 अध्याय

36

वे उसे सूली पर चढ़ाते हैं - गिलगित - मत्ती 27:35, मरकुस 15:24-25, लूका 23:33, यूहन्ना 19:18

गोली - गिलगित - मत्ती 27 अध्याय 37, मरकुस 15 अध्याय 26, लूका 23 अध्याय 38, यूहन्ना 19 अध्याय 19

1. पिता, इन्हें क्षमा कर देना - गिलगित - लूका 23 अध्याय 34

उसके वस्त्र के लिए चिट्ठी डाली गई - गिलगित - मत्ती 27 अध्याय 35, मरकुस 15 अध्याय 24, लूका 23 अध्याय 34, यूहन्ना 19 अध्याय 23

राहगीरों का मजाक और चोरों की बात - गिलगित - मैथ्यू 27 अध्याय 39 से 44, मार्क 15 अध्याय 29 से 32, ल्यूक 23 अध्याय 35

पश्चाताप करने वाला चोर - गिलगित - लूका 23 अध्याय 40

2. आज तुम मेरे साथ जन्नत में रहोगे - गिलगित - लूका 23 चैप्टर 43

3. नारी, अपने पुत्र को निहारना - गिलगित - जॉन 19 अध्याय 26-27

सारी पृथ्वी पर अँधेरा छा गया - गिलगित - मत्ती 27 अध्याय 45, मरकुस 15 अध्याय 33, लूका 23 अध्याय 44-45

4. हे भगवान, हे भगवान, क्यों...? - गिलगित - मत्ती 27 अध्याय 46, मरकुस 15 अध्याय 34

5. मुझे प्यास लगी है - गिलगितिया - जॉन 19 अध्याय 28

सिरका - गिलगित - मैथ्यू 27 अध्याय 48, मार्क 15 अध्याय 36, जॉन 19 अध्याय 29

6. ऑल ऑफ हेवन - गिलगित - जॉन 19 अध्याय 30

7. हे पिता, मैं आपके आत्मा को तेरे हाथ में सौंपता हूँ.. - गिलगित - लूका 23 अध्याय 46

परदा फटा है - यरूशलेम - मत्ती 27 अध्याय 51, मरकुस 15 अध्याय 38, लूका 23 अध्याय 45

कब्र खोली गई, प्राचीनों को उठाया गया - यरूशलेम - मत्ती 27 अध्याय 52

सैंचुरियन की गवाही - गिलगित - मैथ्यू 27 अध्याय 54, मार्क 15 अध्याय 39, ल्यूक 23 अध्याय 47

महिलाओं को देखना - गिलगित - मत्ती 27 अध्याय 55, मरकुस 15 अध्याय 40, लूका 23 अध्याय 49

उसकी भुजा का भेदन - गिलगित - जॉन 19 अध्याय 34

कूस से उतरना - बाग - मत्ती 27:57-60, मरकुस 15:46, लूका 23:53, यूहन्ना 19:38-42

जोसेफ रामथी और निकोडेमस द्वारा दफन - गार्डन - मैथ्यू 27 अध्याय 57 से 60, मार्क 15 अध्याय 47, ल्यूक 23 अध्याय 53, जॉन 19 अध्याय 38 से 42

द गार्जियन ऑन द सील स्टोन - द गार्डन - मैथ्यू 27 अध्याय 65-66

जी उठने

Resurrection

विवरण - स्थान - पवित्रशास्त्र

महिलाएं मसाले और धूप को कब्र तक ले जाती हैं - बगीचा - मत्ती 28 अध्याय 1, मरकुस 16 अध्याय 1-2, लूका 24 अध्याय 1

देवदूत ने पत्थर हटा दिया - बगीचा - मैथ्यू 28 अध्याय 2

महिलाएं यीशु के पुनरुत्थान की घोषणा करती हैं - यरूशलेम - मत्ती 28:8, लूका 24:9-10, यूहन्ना 20:1-2

पतरस और यूहन्ना कब्र की ओर दौड़े - बाग - लूका 24:12, यूहन्ना 20:3

औरतें मकबरे पर लौटती हैं - बाग - लूका 24 अध्याय 1

पहरेदार मुख्य याजकों को रिपोर्ट करते हैं - यरूशलेम - मत्ती 28 अध्याय 11-15

पुनरुत्थान दिखावे

RESURRECTION APPEARANCES

1. मेरी मगदलीनी को - बाग - मरकुस 16 अध्याय 9-10, यूहन्ना 20 अध्याय 14-18
2. महिलाओं के घर लौटने से पहले - बगीचा - मत्ती 28 अध्याय 9-10
3. एम्माउस जाने वाले दो चेले - एम्माँस का मार्ग - मरकुस 16:12, लूका 24:13
4. पतरस से पहले - यरूशलेम - 1 कुरिन्थियों 15 अध्याय 5, लूका 24 अध्याय 34
5. ऊपरी कक्ष में 10 शिष्यों के लिए - यरूशलेम - लूका 24:33, यूहन्ना 20:19-23
6. ऊपरी कक्ष में 11 चेलों के लिए - यरूशलेम - मरकुस 16:14, यूहन्ना 20:26-29
7. पांच सौ से पहले एक साथ - अज्ञात - 1 कुरिन्थियों 15 अध्याय 6
8. याकूब से पहले - अज्ञात - 1 कुरिन्थियों 15 अध्याय 6
9. झील के किनारे 7 चेलों से पहले - गलील - जॉन 21 अध्याय 1 से 11
10. पर्वत पर 11 चेलों के सामने - गलील - मत्ती 28 अध्याय 18-20
11. चेलों का एक साथ भोजन - यरूशलेम - प्रेरितों के काम 1 अध्याय 4-5
12. स्वर्गारोहण - जैतून का पर्वत बेथानी - मरकुस 16 अध्याय 19, लूका 24 अध्याय 50-51, प्रेरितों के काम 1 अध्याय 6-9

Believe की अनुमति से चार्ट और इतिहास जोड़ा गया है

<http://mb-soft.com/believe/txh/gosp Gosp.htm>



प्राचीन कब्र

परिशिष्ट 2

Appendix 2

वैकल्पिक कालक्रम

Alternative Chronology

कुछ विद्वान पवित्र सप्ताह के गुरुवार को सूली पर चढ़ाने के लिए तर्क देते हैं, उसके बाद दो सब्त के दिन, शुक्रवार को फसह का सब्त और शनिवार को नियमित सब्त।

वह कालक्रम यीशु की भविष्यवाणियों से संबंधित है:

यूनुस तीन रात दिन जल-जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा।

मत्ती 12:40

फिर उस ने बारहों को साथ लेकर उन से कहा; देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और जितनी बातें मनुष्य के पुत्र के लिये भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा लिखी गई हैं वे सब पूरी होंगी। क्योंकि वह अन्यजातियों के हाथ में सौंपा जाएगा, और वे उसे ठट्ठों में उड़ाएंगे; और उसका अपमान करेंगे, और उस पर थूकेंगे। और उसे कोड़े मारेंगे, और घात करेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा।

लूका 18:31-33

जेम्स ताबोर ने अपने लेख 'द लास्ट डेज़ ऑफ़ जीसस: ए फाइनल "मैसियानिक" मील' में अंतिम भोज के सुसमाचार वृत्तांतों की जाँच की, जिसे बाइबिल पुरातत्व सोसायटी द्वारा पुनः प्रस्तुत किया गया था।

(<https://www.biblicalarchaeology.org/daily/people-cultures-in-the-bible/jesus-historical-jesus/the-last-days-of-jesus-a-final-messianic-meal/>). वह लिखता है

भ्रम इसलिए पैदा हुआ क्योंकि सभी सुसमाचार कहते हैं कि उसके शरीर को सूली से उतारने और सूर्यास्त से पहले दफनाने की जल्दी थी क्योंकि "सब्त" निकट था। सभी ने माना कि "सब्त" का संदर्भ शनिवार होना चाहिए, इसलिए क्रूस पर चढ़ाई शुक्रवार को होनी चाहिए। हालाँकि, जैसा कि यहूदी जानते हैं, फसह का दिन भी एक "सब्त" या विश्राम का दिन होता है, चाहे वह किसी भी कार्यदिवस पर पड़े। वर्ष 30 ईस्वी में शुक्रवार,

यहूदी महीने निसान की 15वीं तारीख भी एक सब्त थी इसलिए दो सब्त शुक्रवार और शनिवार को एक के बाद एक हुए। ऐसा प्रतीत होता है कि मत्ती यह जानता है क्योंकि वह कहता है कि जो स्त्रियाँ यीशु की कब्र पर गई थीं, वे रविवार की सुबह "सब्त के दिन के बाद" आई थीं (मत्ती 28:1)।

जैसा कि अक्सर होता है, यूहन्ना का सुसमाचार जो चल रहा था उसके अधिक सटीक कालक्रम को सुरक्षित रखता है। यूहन्ना बताता है कि बुधवार की रात "आखिरी भोजन" "फसह के पर्व से पहले" थी। वह यह भी नोट करता है कि जब यीशु के दोषियों ने उसे गुरुवार की सुबह सूली पर चढ़ाए जाने के लिए दिया तो वे पीलातुस के आंगन में प्रवेश नहीं करेंगे क्योंकि वे अशुद्ध हो जाएंगे और उस शाम फसह को खाने में सक्षम नहीं होंगे (यूहन्ना 18:28)। जॉन जानता है कि यहूदी गुरुवार शाम को अपना पारंपरिक सेडर भोजन खा रहे होंगे।

उस चर्चा ने मुझे मत्ती 28:1 में बहुवचन सब्तों की जाँच करने के लिए भेजा। यह बहुवचन है और इसे या तो सब्त या सब्त के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसा कि मत्ती 12:1 में भी है। अधिकांश अनुवादकों ने एकवचन का विकल्प चुना, लेकिन कुछ ने शाब्दिक बहुवचन को बरकरार रखा, जैसे कि मत्ती 12:1 और 28:1 के ये अनुवाद।

उस समय यीशु सब्त के दिनों में अनाज के माध्यम से चला गया। और उसके चेले भूखे थे, और अन्न की बालें तोड़ कर खाने लगे।

नई मैथ्यू बाइबिल, © 2016 रूथ मैगनसॉन (डेविस) द्वारा

उस समय यीशु सब्त के दिन अन्न के बीच में गया, और उसके चेले भूखे थे, और वे कान तोड़कर खाने लगे, यंग का लिटरल ट्रांसलेशन रॉबर्ट यंग द्वारा किया गया जिसने यंग्स एनालिटिकल कॉन्फ़ीडेंस को संकलित किया।

सब्त के बाद, सप्ताह के पहले दिन भोर के आसपास, मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्रगाह को देखने गईं।

अंतर्राष्ट्रीय मानक संस्करण, © 1995-2014 ISV फाउंडेशन द्वारा।

बाइबल के अंश पवित्र सप्ताह के गुरुवार को सूली पर चढ़ाए जाने की अनुमति दे सकते हैं। एकवचन या बहुवचन, महिलाओं ने सब्त के बाद सप्ताह के पहले दिन पत्थर को लुढ़का हुआ पाया।

वह शुक्रवार केवल शनिवार ही नहीं, एक विशेष फसह का सब्त रहा होगा। अब वह तैयारी का दिन था, और अगले दिन एक विशेष विश्रामदिन होना था। क्योंकि यहूदी नेता नहीं चाहते थे कि सब्त के दिन क्रूस पर शवों को छोड़ दिया जाए, उन्होंने पीलातुस से पैरों को तोड़ने और शवों को नीचे ले जाने के लिए कहा। (यूहन्ना 19:31)

ब्लड मून ए डी 31 निसान 14 को

केविन वुड्रिज, पीएच.डी., गुरुवार को 31 ईस्वी में सूली पर चढ़ाने की तारीख की ओर इशारा करते हुए विवरण देते हैं, 14 वें निसान, बुधवार की रात को ब्लड मून सहित, निसान 14 की शुरुआत जो गुरुवार को जारी रही। शुक्रवार 15वें निसान, एक विशेष सब्त, के बाद शनिवार 16वें निसान को सामान्य सब्त और रविवार 17वें निसान को पुनरुत्थान, पहले फलों के पर्व का पहला दिन था।

उनका पी डी एफ लेख है When was Jesus crucified? Evidence pointing to 31 AD. उनका सार कहता है:

यीशु को किस वर्ष सूली पर चढ़ाया गया था? कई विद्वानों का मानना है कि उनकी मृत्यु 29 ईस्वी से 34 ईस्वी के बीच हुई थी। एक आंशिक चंद्र ग्रहण (जैसा कि पेंटेकोस्ट के दिन सेंट पीटर द्वारा वर्णित है) बुधवार 25 अप्रैल 31 ईस्वी (यहूदी कैलेंडर में निसान के 14 वें दिन शाम/रात) सुसमाचार के साथ अच्छी तरह से मेल खाता है, अगर अंतिम भोज एक निजी था "फसह की पूर्व संध्या" भोजन एक शिक्षक के रूप में अपने शिष्यों के साथ यरूशलेम में दूसरों की तुलना में एक दिन पहले खाया जाता था, उसके बाद यीशु ने प्रार्थना की और गतसमनी के बगीचे में गिरफ्तार किया गया। गुरुवार 26 अप्रैल 31 ईस्वी (निसान के 14 वें दिन पर दिन) पर यीशु का सूली पर चढ़ना नए नियम के साथ अच्छी तरह से मेल खाता है, यदि इसके बाद निसान के 15 वें दिन फसह के लिए "विशेष सब्त" होता है, तो एक नियमित साप्ताहिक सब्त निसान का 16वां दिन, फिर निसान के 17वें दिन (पहले फलों के पर्व का पहला दिन) पर यीशु का पुनरुत्थान, जिसमें अंजीर के पेड़ों के खिलने और "शुरुआती अंजीर" का वर्णन देर से फसह का सूचक है।

वह बात जारी रखता है:

यह ध्यान देने योग्य है कि शब्द "सब्त" - ग्रीक शब्द σαββάτων (सब्वटन) है, जो स्पष्ट रूप से बहुवचन है (नेस्ले एट अल., 1988) - यीशु के दफन और पुनरुत्थान के सुसमाचार खातों में कुछ स्थानों पर उपयोग किया जाता है, जैसा कि यंग्स लिटरल ट्रांसलेशन द्वारा दिखाया गया है:

सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहिले दिन पह फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आई।

मत्ती 28:1

वह तैयारी का दिन था, और सब्त का दिन आरम्भ होने पर था। और उन स्त्रियों ने जो उसके साथ गलील से आई थीं, पीछे पीछे जाकर उस कब्र को देखा, और यह भी कि उस की लोथ किस रीति से रखी गई है। और लौटकर सुगन्धित वस्तुएं और इत्र तैयार किया: और सब्त के दिन तो उन्होंने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया।

परन्तु सप्ताह के पहिले दिन बड़े भोर को वे उन सुगन्धित वस्तुओं को जो उन्होंने तैयार की थीं, ले कर कब्र पर आईं। और उन्होंने पत्थर को कब्र पर से लुढ़का हुआ पाया। और भीतर जाकर प्रभु यीशु की लोथ न पाई।

लूका 23:54-24:3

सप्ताह के पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर आई, और पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा। तब वह दौड़ी और शमौन पतरस और उस दूसरे चेले के पास जिस से यीशु प्रेम रखता था आकर कहा, वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं; और हम नहीं जानतीं, कि उसे कहां रख दिया है।

यूहन्ना 20:1-2

ये लगातार दो सब्त शुक्रवार को एक "विशेष सब्त" हो सकते थे जो अखमीरी रोटी के पर्व का पहला दिन था (निसान के 15वें दिन का दिन), जिस पर कोई नियमित या सामान्य कार्य नहीं किया जाना था (लैव्यव्यवस्था 23: 6-7), उसके बाद शनिवार को नियमित साप्ताहिक सब्त (निसान के 16वें दिन पर दिन)। यह लूका 23:54-24:1 के द्वारा वहन किया गया प्रतीत होता है, जिसमें महिलाएं मसाले और मलहम तैयार करती हैं (उस शरीर का अभिषेक करने के लिए जो गुरुवार को अरिमथिया के यूसुफ द्वारा तैयार और दफनाया गया था), शुक्रवार को पहले सब्त पर , अखमीरी रोटी के पर्व का पहला दिन (चित्र 3)। यह एक ऐसा दिन था जिस दिन कोई नियमित या साधारण काम नहीं किया जाना था, और महिलाओं द्वारा मसाले और मलहम तैयार करना "साधारण" काम नहीं था। अगले दिन, शनिवार को नियमित साप्ताहिक सब्त, महिलाओं ने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया। फिर रविवार को, दो सब्त के दिन के बाद, वे कब्र पर गए (बाइबिलिकल हेर्मेनेयुटिक्स, 2016)। इसके अलावा, यूहन्ना का सुसमाचार स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करता है कि यीशु के क्रूस पर चढ़ने के बाद का दिन एक "विशेष सब्त" था: "अब यह तैयारी का दिन था, और अगले दिन एक विशेष सब्त होना था। क्योंकि यहूदी अगुवे नहीं चाहते थे कि सब्त के दिन क्रूस पर शवों को छोड़ दिया जाए, इसलिए

उन्होंने पिलातुस से कहा कि पैर तोड़े और शवों को नीचे उतार दिया जाए” (यूहन्ना 19:31)। यह यहूदी नेताओं के लिए अत्यधिक आपत्तिजनक होता कि इस विशेष सब्त के दौरान सूली पर चढ़ाए गए शवों को रात भर क्रूस पर रहने दिया जाता (व्यवस्थाविवरण 21:22-23)। यह सब इंगित करता है कि यीशु को गुरुवार 26 अप्रैल 31 ईस्वी (निसान के 14वें दिन पर दिन) को सूली पर चढ़ाया गया था और रविवार 29 अप्रैल 31 ईस्वी (निसान के 17वें दिन पर दिन) को पुनर्जीवित किया गया था।

अन्य विद्वान बुधवार, 25 अप्रैल, 31 ईस्वी को सूली पर चढ़ाने के लिए तर्क देते हैं। देखें Passover Dates 26-34 A.D.

हालाँकि, कई विद्वान विशेष फसह के सब्त को शनिवार के रूप में पहचानते हैं। कुछ लोग बताते हैं कि निसान 14 शुक्रवार 7 अप्रैल को 30 ईस्वी में और शुक्रवार 3 अप्रैल को 33 ईस्वी में गिर गया, जो उन वर्षों की अमावस्या की तारीखों के आधार पर सूली पर चढ़ाए जाने की सबसे संभावित तारीखें थीं।

दिन चाहे जो भी हो, महान महत्व यह है कि परमेश्वर का मेम्रा जो संसार के पापों को उठा ले जाता है, फसह की तैयारी के दिन क्रूस पर चढ़ाया गया था, जिस दिन फसह का मेमना मारा गया था ताकि सूर्यास्त के बाद फसह हो सके। सूर्यास्त के बाद शुरू होने वाले अगले यहूदी दिवस पर मनाया जाता है।

परिशिष्ट 3

Appendix 3

सुसमाचार

The Gospels

गॉस्पेल जीवनी नहीं हैं, हालांकि उनकी अधिकांश अच्छी खबरें जीवनी हैं। वे यीशु में पूरी तरह से प्रकट हुए परमेश्वर के प्रेम की कहानी बताते हैं।

मत्ती प्रेम कहानी बताता है

Matthew tells the love story

एक तिरस्कृत, रोम के कर संग्रहकर्ता, मैथ्यू ने यीशु की प्रशंसा की और यीशु और उसके अनुयायियों की बढ़ती भीड़ के साथ पैदल यात्रा करने के लिए अपने आकर्षक व्यवसाय को छोड़ दिया। एक कट्टर यहूदी, मैथ्यू ने संभवतः अपनी प्रेम कहानी अरामी भाषा में लिखी थी, जो उस समय मध्य पूर्व की भाषा थी।

उन्होंने हिब्रू स्क्रॉल में अपने शास्त्रों (हमारे पुराने नियम) की नकल की, लेकिन यहूदियों के बेबीलोन में कैद से लौटने के समय से, लगभग 538 ईसा पूर्व, उन्होंने अरामी भाषा बोली, जो हिब्रू के समान एक सेमेटिक भाषा थी, जो मध्य पूर्व में फैल गई थी। यह यीशु और उनके अनुयायियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली फिलिस्तीन की मूल भाषा बन गई। मत्ती इब्रानी शास्त्रों से उदारतापूर्वक उद्धरण देते हैं, यह दिखाते हुए कि यीशु ने उनकी भविष्यवाणियों को पूरा किया। मैथ्यू की कहानी को सामान्य ग्रीक में पुनः प्रस्तुत किया गया था, उस समय सिकंदर महान की विजय के बाद व्यापक रूप से इस्तेमाल किया गया था।

मैथ्यू द इंजीलवादी ने विशेष रूप से यहूदियों के लिए लिखा था। वह अपना सुसमाचार यीशु मसीह को दाऊद के पुत्र, इब्राहीम के पुत्र के रूप में प्रस्तुत करते हुए शुरू करता है। वह महान आज्ञा के साथ अपने सुसमाचार को समाप्त करता है यह घोषणा करता है कि यीशु अपने अनुयायियों को सभी राष्ट्रों में भेजता है। यीशु में, परमेश्वर की वाचा पूरी दुनिया को गले लगाती है।

इस कट्टरपंथी इंजीलवादी मिशनरी सुसमाचार ने पारंपरिक यहूदियों को झकझोर दिया। मैथ्यू जोर देकर कहते हैं कि यीशु लंबे समय से प्रतीक्षित मसीहा थे, पुराने नियम के कई उद्धरणों के साथ अपने दावों का समर्थन करते हुए। उनका तर्क है कि यीशु ने शास्त्रों को खत्म नहीं किया, बल्कि उन्हें पूरा किया। वह यीशु की सेवकाई और उसके चर्च की मिशनरी प्रकृति पर जोर देता है।

इस सुसमाचार ने लगातार यहूदी ईसाई समुदाय के साथ-साथ अन्य यहूदियों का भी सामना किया। यहां मिशन के लिए एक सतत और जरूरी कॉल है। केवल यहूदियों के लिए ही नहीं, सभी लोगों के लिए खुशखबरी है। मैथ्यू ने अपने सुसमाचार की शुरुआत यीशु के आने वाले मसीहा के बारे में बताते हुए की, जो ईश्वर के सार्वभौमिक राज्य की घोषणा करता है। जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी, जॉन द बैपटिस्ट द्वारा यीशु मसीह के चित्र की घोषणा की गई है। गलील में सेवकाई की शुरुआत परमेश्वर के राज्य में जीवन के लिए मसीह की योजना को दिखाती है, जो फिर से भविष्यवाणी को पूरा करती है। अध्याय 5-7 पर्वत पर उपदेश में यीशु के शब्दों को एक साथ इकट्ठा करते हैं जिसमें हमें पहले परमेश्वर के राज्य की खोज करने की चुनौती दी जाती है। यहाँ राज्य का चार्टर है, राज्य में रहने की नैतिकता। इसके बाद के अध्याय यीशु के कार्यों में परमेश्वर के राज्य को प्रदर्शित करते हैं।

मैथ्यू यीशु के प्रवचनों को अपने पूरे आख्यान में शिक्षण खंडों के रूप में एकत्रित करता है। वह अक्सर परमेश्वर के राज्य के लिए "स्वर्ग का राज्य" वाक्यांश का उपयोग परमेश्वर शब्द के लिए विशिष्ट यहूदी श्रद्धा में करता है।

मत्ती 4:23 में यीशु की सेवकाई को उनके आराधनालयों में शिक्षा देने, राज्य की खुशखबरी का प्रचार करने और हर बीमारी और बीमारी को ठीक करने के रूप में सारांशित किया गया है। यह कथन अध्याय 5-9 में यीशु के शब्दों और कार्यों का परिचय देता है। फिर मत्ती 9:35 में वही कथन दोहराया गया है। यहाँ यह यीशु के अनुयायियों के मिशन का परिचय देता है।

मत्ती 9:35 से शुरू होने वाला मिशन प्रवचन, परमेश्वर के राज्य के प्रसार के लिए यीशु की योजना के बारे में बताता है। उनके शिष्य उनकी सेवकाई जारी रखेंगे। वे परमेश्वर के राज्य की घोषणा करेंगे।

मिशन प्रवचन के बाद के अध्याय परमेश्वर के राज्य के रहस्य की मौलिक प्रकृति को दर्शाते हैं। यह रहस्य यीशु ने उन लोगों के लिए प्रकट किया है जो उसके लिए प्रतिबद्ध हैं, लेकिन दूसरों से छुपाए गए हैं, जैसा कि अध्याय 13 के दृष्टांत प्रवचनों में दर्शाया गया है।

मत्ती, 'चर्च' शब्द का प्रयोग करने वाला एकमात्र सुसमाचार लेखक, इंगित करता है कि यीशु की कलीसिया के पास उसका अधिकार है। चर्च भगवान के राज्य का एजेंट है, और दुनिया में राज्य को प्रकट करता है।

इज़राइल की परंपराओं के रखवाले के साथ तनाव चरम बिंदु पर पहुंच गया और यीशु की गिरफ्तारी और निष्पादन में उबाल आया। यही वह अस्थिर वातावरण है जिसमें सेवकाई समाप्त होते ही यीशु ने अपने अधिकार और निमंत्रण को दबा दिया। राजा को कांटों का ताज पहनाया जाता है और उसे सूली पर चढ़ाया जाता है। मृत्यु में स्पष्ट हार तब पुनरुत्थान की अद्भुत विजय में बदल जाती है। क्राइस्ट द किंग राज करता है। हम सभी अंततः अंत में उसके शासन को स्वीकार करते हैं। यीशु की जीत में हम देखते हैं कि परमेश्वर का राज्य पूरा हुआ है।

मरकुस ने बताई प्रेम कहानी

Mark tells the love story

शायद यरूशलेम में एक जवान आदमी के रूप में, मरकुस यीशु और उसके अनुयायियों को जानता था और उसके चारों ओर लटका हुआ था। उनकी प्रेम कहानी एक संक्षिप्त संस्करण है, सबसे छोटा खाता है, और संभवतः रैंक से पहली कैब है। यह संभव है कि मत्ती और लूका दोनों ने अपनी समान कहानियों में मरकुस की अधिकांश कहानी का उपयोग किया, जिसे अब तीन समदर्शी सुसमाचार कहा जाता है।

मरकुस वह अकेला युवक हो सकता है जिसका वह अकेले उल्लेख करता है जो अपनी लिनेन की चादर को उस भीड़ के साथ छोड़कर भाग गया था जिसने उसे गतसमनी में पकड़ लिया था जब यीशु को देर रात गिरफ्तार किया गया था। हो सकता है कि उसका परिवार एक बड़े घर में रहा हो जहाँ कई लोग प्रार्थना करने के लिए मिलते थे और हो सकता है कि उसके पास एक बड़ा ऊपरी कमरा हो जहाँ यीशु ने फसह खाया हो। मरकुस, जो संभवतः यूहन्ना मरकुस के नाम से जाना जाता था, पौलुस और मरकुस के चचेरे भाई बरनबास के साथ मिला और फिर मिशनरी यात्राओं पर बरनबास में फिर से शामिल हो गया, और रोम में पौलुस के साथ था। उसने पतरस के साथ यात्रा की जिसने उसे 'मेरा पुत्र' कहा और सबसे अधिक संभावना है कि उसने उसे अपने सुसमाचार में उपयोग की जाने वाली अधिकांश जानकारी दी। प्रारंभिक चर्च के एक नेता जेरोम ने बताया कि कैसे मरकुस ने मिस्र में अलेक्जेंड्रिया में चर्च की स्थापना की।

मरकुस यीशु का जोरदार, संक्षिप्त विवरण देता है। कथा तेजी से चलती है। एक संक्षिप्त प्रस्तावना तुरंत यीशु की सेवकाई की ओर ले जाती है जब वह परमेश्वर के राज्य की घोषणा और प्रदर्शन करता हुआ दिखाई देता है। राज्य जीवन पत्रे भरता है।

उस नाटक का केंद्र क्रॉस है। मार्क को एक परिचय के साथ एक जुनून कथा के रूप में वर्णित किया गया है। पहले पद में यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में पेश किया गया है। अध्याय 1-8 गलील में स्थित यीशु की तीन साल की सेवकाई में देखे गए परमेश्वर के पुत्र के रहस्य को प्रकट करता है।

फिर नाटक अध्याय 8 में बदल जाता है, पतरस के इस अंगीकार के साथ कि यीशु ही मसीह है, मसीहा है। यीशु तुरंत अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी करता है और अपने शिष्यों को इसके लिए तैयार करता है। मसीहा

को अपने जीवन का बलिदान देना चाहिए। मनुष्य के पुत्र का मार्ग क्रूस का मार्ग है। अध्याय 11-16 यरूशलेम में उस अंतिम सप्ताह का वर्णन करते हैं।

पवित्र सप्ताह, यीशु के पार्थिव जीवन का अंतिम सप्ताह, एक सामान्य मार्गदर्शक के रूप में इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है। अलग-अलग सुसमाचार अलग-अलग घटनाओं को दर्ज करते हैं, हर एक अपने तरीके से सुसमाचार, खुशखबरी सुनाता है। तो यह व्यवस्था पवित्र सप्ताह में महत्वपूर्ण घटनाओं के क्रम का एक अनुमान मात्र है।

पवित्र सप्ताह की घटनाओं का यह सारांश मरकुस के सुसमाचार की रूपरेखा का अनुसरण करता है:

पाम संडे - प्रदर्शन का दिन

मरकुस 11:1-11 (जकारिया 9:9) - यीशु यरूशलेम में प्रवेश करता है

सोमवार - प्राधिकरण का दिन

मरकुस 11:12-19 - अंजीर के पेड़ को डांटा गया, मंदिर की सफाई की गई

मंगलवार - संघर्ष का दिन

मरकुस 11:20 - 13:36 - नेताओं के साथ बहस

बुधवार - तैयारी का दिन मरकुस 14:1-11 - बेथानी में अभिषिक्त

गुरुवार - विदाई का दिन मार्क 14:12-42 - अंतिम भोज

गुड फ्राइडे - क्रूस पर चढ़ने का दिन मार्क 14:43 - 15:47 - परीक्षण और मृत्यु

शनिवार - सब्त का दिन मार्क 15:46-47 - मकबरा सील

ईस्टर रविवार - पुनरुत्थान का दिन मरकुस 16:1-18 - पुनरुत्थान प्रकटन

ये मार्ग हमें पूरे इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण सप्ताह की घटनाओं की याद दिलाते हैं, और वास्तव में सभी अनंत काल में। परमेश्वर के मेमने, संसार की उत्पत्ति से मारे गए, हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया, हमारे

स्थान पर मर गया, और मृत्यु पर विजय प्राप्त की। वही संसार का उद्धारकर्ता है। जितने उस पर विश्वास करते हैं, जितने उस पर विश्वास करते हैं, वे सब नहीं मरेंगे, वरन उसके साथ सर्वदा जीवित रहेंगे।

लूका प्रेम कहानी बताता है

Luke tells the love story

चिकित्सक और इतिहासकार, ल्यूक हमें यीशु के जीवन के शुरुआती दिनों का अनूठा विवरण देता है। बाइबिल में एकमात्र गैर-यहूदी लेखक, उन्होंने अपनी दो पुस्तकों, ल्यूक-एक्ट्स को अपने अन्यजाति मित्र थियोफिलस को संबोधित किया। वह यीशु और उसके अनुयायियों में सावधानीपूर्वक शोधित ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। वह अकेले ही अच्छे सामरी और उड़ाऊ पुत्र के यीशु के प्रसिद्ध और संघर्षपूर्ण दृष्टान्तों को रिकॉर्ड करता है।

डॉक्टर लूका ने उपचार और चमत्कारों के खातों पर ध्यान से शोध किया। वह तुर्की (तब एशिया या एशिया माइनर कहा जाता है) और ग्रीस के बावजूद पॉल की दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्राओं में टीमों में शामिल हो गया, और रोम की उनकी घातक यात्रा पर जिसमें माल्टा पर जहाज़ की तबाही भी शामिल थी। उन्होंने प्रेरितों के काम में 'हम मार्ग' में उन कारनामों का सावधानीपूर्वक वर्णन किया। पॉल उसे बहुत महत्व देता था।

लूका ने नए नियम के अन्य लेखकों से अलग जोर के साथ लिखा, जो सभी इजरायल की परंपराओं में डूबे हुए बड़े हुए हैं। वह विशेष रूप से अपने समुदाय के लिए लिखते हैं।

लूका इतिहासकार मानव घटनाओं में यीशु के केंद्रीय स्थान का वर्णन करता है। यीशु सारे संसार का उद्धारकर्ता है। कोई भी व्यक्ति यीशु में परमेश्वर के उद्धार के प्रस्ताव से अलग नहीं है। गरीब, तिरस्कृत और बहिष्कृत (जैसे अन्यजातियों) को विशेष रूप से परमेश्वर के राज्य में आमंत्रित किया जाता है। लूका यीशु की सेवकाई (लूका की सुसमाचार) और आरंभिक कलीसिया (प्रेरितों के काम) में परमेश्वर के राज्य के प्रसार का एक स्पष्ट, व्यवस्थित विवरण देता है।

लूका द ट्रैवलर अपनी दोनों पुस्तकों में "यात्रा" को एक मजबूत विषय बनाता है। वह रास्ते में, सड़क पर होने वाली घटनाओं के बारे में बताता है। यह विशेष रूप से यीशु की यरूशलेम की अंतिम यात्रा पर लागू होता है। वह अंतिम यात्रा पतरस की इस घोषणा के बाद शुरू हुई कि यीशु ही मसीहा है। यीशु ने समझाया कि उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के संदर्भ में।

लूका मिशनरी, जो अक्सर पॉल के साथ होता था, पवित्र आत्मा की शक्तिशाली शक्ति के बारे में बताता है, पहले यीशु में, फिर उसके अनुयायियों में, और फिर चर्च के मिशनरी विस्तार में। ल्यूक अक्सर अपने सुसमाचार और प्रेरितों के कार्य दोनों में पवित्र आत्मा को संदर्भित करता है।

लूका डॉक्टर, यीशु की करुणा और उसके पास आने वाले सभी लोगों के लिए उपचार शक्ति पर जोर देता है। उनका सुसमाचार लोगों के लिए यीशु की देखभाल की कहानियों से भरा पड़ा है।

उन्होंने गरीबों और बहिष्कृतों के लिए यीशु की करुणा के कई वृत्तांतों को शामिल किया है।

इंजीलवादी लूका, यीशु की बचाने की शक्ति के बारे में बताता है और इसमें कुछ सबसे प्रसिद्ध दृष्टांत शामिल हैं जो परमेश्वर के राज्य की खुशखबरी को सारांशित करते हैं। उड़ाऊ पुत्र के दृष्टान्त, खोया सिक्का, अच्छा सामरी, धनी व्यक्ति और लाजर, और धनी मूर्ख लूका की सुसमाचार प्रचार की कहानी के लिए अद्वितीय हैं। सामरी कोढ़ी, उस पापी स्त्री, जिसने यीशु के पैरों का अभिषेक किया, और जक्कई के वृत्तांत भी ऐसे ही हैं। ये तिरस्कृत लोग थे जिन्होंने यीशु को उत्तर दिया।

यदि आपके पास क्रॉस रेफरेंस वाले अनुभाग शीर्षकों वाली बाइबल है, जैसे कि गुड न्यूज बाइबिल और न्यू रिवाइज्ड स्टैंडर्ड वर्जन में, आप आसानी से लूका के लिए अद्वितीय मार्ग का पता लगा सकते हैं। उनके पास कोई क्रॉस संदर्भ नहीं है। वे अंश परमेश्वर के राज्य के बारे में खुशखबरी सुनाने में लूका के जोर का अनुभव देते हैं।



यीशु के समय में यरूशलेम का मॉडल

टेंपलमाउंट पूर्व में बाईं ओर

टेंपल के पास एंटोनिया किला दाईं ओर स्थित है

शहर की दीवारों के बाहर कलवारी ऊपर दाईं ओर

यूहाना ने बताई प्रेम कहानी

John tells the love story

वह यीशु का युवा चचेरा भाई हो सकता है, जो सफल मछुआरे ज़ेबेदी के अपने बड़े भाई जेम्स के साथ एक बेटा था, जिसने साइमन और एंड्रयू के साथ साझेदारी में अपने व्यवसाय में दूसरों को नियुक्त किया था। यूहन्ना की माँ शायद यीशु की माँ मरियम की बहन रही होगी, जिसकी पहचान चर्च के आरंभिक अगुवों ने सैलोम के रूप में की थी। वह चाहती थी कि यीशु उसके पुत्रों को अपने नए राज्य में अपने पास बैठने दे। वह सूली पर चढ़ाये जाने के समय यूहन्ना और मरियम के साथ थी जहाँ यीशु ने अपनी माँ को यूहन्ना की देखरेख में सौंप दिया था। यूहन्ना उस शिष्य के बारे में लिखता है जिससे यीशु प्यार करता था, जिसे आमतौर पर खुद जॉन के रूप में पहचाना जाता था, जो अंतिम भोज में यीशु की छाती पर लेटा था।

यूहन्ना का सुसमाचार और उसके तीन पत्र यीशु में प्रकट परमेश्वर के प्रेम पर जोर देते हैं। यूहन्ना 3:16 और 1 यूहन्ना 3:16 जैसे प्रसिद्ध पद उस प्रेम का वर्णन करते हैं:

क्योंकि उस की परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह।

यूहन्ना 3:16

हम ने प्रेम इसी से जाना, कि उस ने हमारे लिये अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए।

1 यूहन्ना 3:16

यूहन्ना यीशु की सेवकाई का चश्मदीद गवाह था। वह अपने भाई जेम्स के साथ और स्वाभाविक नेता पीटर के साथ शिष्यों के आंतरिक चक्र से संबंधित था। यूहन्ना चेलों में सबसे छोटा हो सकता है।

अपने पूरे सुसमाचार में, यूहन्ना ने इस बात पर जोर दिया कि उसने जो देखा और सुना था उसे दर्ज किया। वह सुसमाचार की शुरुआत में कहता है कि उसने, दूसरों के साथ, यीशु मसीह, लोगो, परमेश्वर के जीवित वचन के जीवन को देखा।

यूहन्ना वर्णन करता है कि कैसे वह सूली पर चढ़ाये जाने के समय उस अद्भुत, पीड़ादायक मृत्यु को देख रहा था। वह इस बात पर जोर देता है कि उसने इसलिए लिखा ताकि उसके पाठक यीशु, मसीहा, परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करें।

यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ॥

यूहन्ना 20:30-31



Rev Dr Geoffrey Waugh is the founding editor of the *Renewal Journal* and author of books on Christian life and service

The *Life of Jesus in Hindi* contains sections in English and Hindi about the life and influence of Jesus Christ. Why did such a popular young leader face so much opposition leading to his execution? Many countries now date their diaries and calendars from the time of his birth.

The Life of Jesus in Hindi

Geoffrey Waugh

यीशु का जीवन

इतिहास की सबसे बड़ी प्रेम कहानी

संक्षिप्त विवरण

लेखक: जेफरी वाह

अनुवादक: नबील शेरोन

*The Life of Jesus
in Hindi*
Geoffrey Waugh
Nabeel Sharoon

